

उक्राइनी लोक कथाएं



रादुगा प्रकाशन मास्को



पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लिमिटेड
५ ई रानी झांसी रोड नई दिल्ली ११ ५५



राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि

संकलन व्लादीमिर गात्सो

अनुवाद भगवान मलवीय

चित्रकार व्लादीमिर गार्लिन्यूग

УКРАИНСКИЕ НАРОДНЫЕ СКАЗКИ

На хинди

UKRAINIAN FOLK TALES

In Hindi

© हिंदी अनुवाद • चित्र • रादुगा प्रकाशन • 1988

ISBN 5 05 002104 9

सोवियत संघ में प्रकाशित

अनुक्रम

उक्राइनी लोककथाओ का ससार

सुदूर अतीत से पीढी-दर-पीढी कही-सुनी जानेवाली मनमोहक लोककथाए हमे जादुई दुनिया और उसके पात्रो से परिचित कराती रही हे। इन कथाओ मे हास्य, चातुर्य और लोक प्रतिभा की झिलमिलाहट है। ये कथाए वाचको के द्वारा सिर्फ कथ्य रूप मे प्रसारित होती रही ह। इसीलिए इन कथाओ को लोककथाए कहते है।

उक्राइनी लोककथाओ मे सुदूर एव निकट अतीत मे सबधित पात्रो और घटनाओ की भरमार है। हमे आशा है कि पाठको को प्रस्तुत पुस्तक के पात्र भाएगे, ये जनसामान्य से निकले हुए साहसी लोग है। पशु-पक्षियो के रोचक कारनामे और भडकीले चरित्र भी दिल खुश करेगे और 'दादाजी का दस्ताना', 'उडनखटोला' जैसे सम्मोहक काव्य-बिब मानस-पटल पर सदा के लिए अकित हो जाएगे।

लोककथाओ के ही माध्यम मे नन्हे-मुन्ने बच्चो को प्रकृति और तरह-तरह के पशु-पक्षियो का परिचय कराया जाता है और शायद पालने मे ही वे यह कथा सुनते है कि कैसे दादाजी ने जगल मे अपना दस्ताना खो दिया और उसमे किस-किस ने आकर आश्रय लिया। बचपन से ही परीकथाओ मे वर्णित पशुपक्षियो के जीवन्त कारनामे प्रिय लगने लगते है, बच्चा उनसे बार-बार मिलने मे खुशी अनुभव करता हे। थोडा और बडा होने पर वह नई-नई लोककथाओ मे

रुचि लेने लगता है। नन्हे-मुन्ने पाठक चुस्त-चालाक लोमडी दीदी के कारनामो की बढा-चढाकर कल्पना करते है, उक्राइनी लोककथाओ मे अकसर वह पशु-पक्षियो के साथ दिखलाई देती है। लोमडी अपनी चालाकी से कभी मुर्गे को मात देती है, तो कभी खरगोश को, यहा तक कि भेडिया और भालू भी उसकी चालाकी का शिकार होने से नही बच पाते। लेकिन ऐसा भी होता है कि उसे अपनी धूर्तता और दगाबाजी की सजा भुगतनी ही पडती है।

ऐसा अकारण ही नही कहा जाता कि पशु-पक्षियो का चरित्र-चित्रण करनेवाली लोककथाए अपनी "एक दृष्टि मनुष्यो पर भी रखती है"। प्रचलित कहावतो मे ऐसे भी उदाहरण देखने को मिलते हे "लोमडी-सा चालाक", "भेडिये-सा भूखा"। लेकिन लोककथाओ का रचयिता मनुष्य सदैव दीन-दुखियो का ही पक्षधर होता है। वह उनके कष्टो के प्रति सहानुभूति प्रगट करता है, उनकी दयालुता, सहृदयता और वफादारी का उचित मूल्याकन करता है।

इस पुस्तक मे लोककथाओ के साथ-साथ जादुई कथाए भी सकलित है। इन जादुई कथाओ मे दुष्ट शक्तियो के साथ होनेवाले जटिल सघर्ष को दर्शाया गया है। जादुई कथाओ के नायक आम लोग हे। उन्हे प्राय 'कृपकपुत्र इवान', 'चरवाहा', 'खलडीउधेड किरील' आदि ही कहकर पुकारा जाता हे। कथानायक को अजदहो के अनेक सिर काटने पडते है, आतताइयो को दण्डित करने के लिए, विपन्नो की सहायता और न्याय की स्थापना के लिए कई-कई बार द्वद्वयुद्ध करना पडता है। इन नायको के शौर्य का वर्णन करते हुए लोककथाकार उनके साहस, उनकी दयालुता और कुशाग्रता का यशगान करते हे।

भोले-भाले ग्रामीण श्रमिक का हमेशा से सपना रहा है महाबली बनना, मानवीय क्षमताओ को बहुगुणित करना। जादुई कथाओ मे लोक कल्पना इन्ही सपनो को अभिव्यक्ति देती हे। उक्राइन की अनेक लोककथाओ मे अलौकिक गुणो से सम्पन्न पात्रो से मुलाकात होती है।

नायको के नाम से भी इसका अन्दाज लगाया जा सकता है—पहाडपलट, नदीपकड, बलूतउखाड, हिमबाबा आदि। सदियो से मनुष्य महाबली बनने का सपना देखता रहा है और उसने अपनी कल्पना के मोहक ताने-बाने से किस्म-किस्म की लोककथाओ मे इसी सपने को अभिव्यक्त किया है

लोककथाओ की इस पुस्तक के अन्त मे पाठको की मुलाकात उक्राइन के

साधारण लोगो – किसानो – से होती है। उनका श्रमिक जीवन, उनकी दस्तकारी और गृहस्थी उन क्षेत्रो के अतीत के लिए लाक्षणिक है, जहा ये कथाए कलमवन्द की गई है। इन कथाओ मे गरीव और अमीर, दयालु और निर्दय, सत्यनिष्ठ और असत्यनिष्ठ लोगो के पारस्परिक सबधो की विशिष्टताए चित्रित हुई हे। साथ ही इनमे राजे-रजवाडो तथा धनपतियो की मूर्खता और उनके मिथ्याभिमान की खिल्लिया भी उडाई गई हैं, उनकी महात्वाकाक्षाओ को धूल-धूसरित होते दिखाया गया हे। अभाव और कठिनाई से जूझते सामान्य जन की प्रत्युत्पन्नमति, तर्क-शक्ति और साहस की विजय दिखाई गई है।

उक्राइन की इन कथाओ मे लोक-हास्य और तीखे व्यग्य द्वारा शोपको तथा उत्पीडको का पर्दाफाश किया गया है, जो मुसीवत मे पडे इनसान की मजबूरियो का अनुचित लाभ उठाते हुए जीते हे।

सभी लोककथाए मानव मन की सहज भावनाओ मे ओतप्रोत हे, जिनमे प्रकृति-विजय, सुखमय जीवन, दुखो से छुटकारा, दैनिक जीवन सवारने, जुल्मो-मितम मे मुक्ति और न्यायपूर्ण जीवन की चाह झलकती है, ताकि सभी उन्मुक्त, अभावरहित, खुशहाल और सुन्दर जीवन जी सके।

यह मुस्पष्ट है कि लोक साहित्य की सभी कृतिया प्राय पाठ भेदो के साथ मिलती हैं, जो स्थान, काल और खुद वाचको या कथा कहनेवालो पर निर्भर करती हैं। लोककथाओ मे स्थाई तौर पर परिवर्तन होते रहते हे और वे नई-नई रचनात्मक तफसीलो के माथ ममय-समय पर समृद्ध होती रहती ह।

इस सकलन की सभी रचनाए उन्नीसवी सदी के उत्तरार्द्ध मे सकलित की गई है। उक्राइन सोवियत सघ के पन्द्रह समाजवादी जनतत्रो मे से एक हे। उक्राइन का भू-क्षेत्र कर्पाथिया पर्वतमाला से काले मागर तक फैला हुआ है। उसकी पूर्वी और उत्तरी सीमाओ से रूसी सघात्मक जनतत्र और वेलोरूस जनतत्र की सीमाए लगी हुई ह। दक्षिण-पश्चिम मे मोल्दाविया की सीमा हे।

लोककथाकार ने इन कथाओ मे वहा के सुपरिचित दैनिक जीवन, रीति-रिवाज, खेतीवारी और पशु-पक्षियो का आकर्पक चित्रण किया है। उक्राइन की लोककथाओ को पढते हुए पाठक यहा की विशिष्ट प्राकृतिक दृश्यो को देखता है – स्तेपिया, जगल, पहाड, छोटी-वडी नदिया। लोककथाओ की जादुई दुनिया पाठको को द्नेपर नदी के तट पर खीच लाती हे, नए-नए पात्रो से उनका परिचय

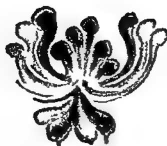
कराती है, उन्हे हसाती, रुलाती हुई चिन्तामग्न कर देती है, फिर से उन्हे भलाई की जीत और बुराई की पराजय का अहसास दिलाती है।

विश्व के प्राय सभी महान लेखको ने लोककथाओ की जादुई दुनिया का ऊचा मूल्याकन किया हे, उनसे सृजनात्मक प्रेरणा ग्रहण की है। लोककथाओ के कथानको और बिबो को रवीन्द्रनाथ ठाकुर, गेटे, शिलर, मित्सकेविच, पुश्किन, शेव्चेन्को तथा अन्य प्राचीन ओर आधुनिक साहित्य मनीपियो ने समय-समय पर अपनी कृतियो मे स्थान दिया है।

'पचतत्र' की कथाए प्राचीन भारत से हम तक पहुची है, अरबी लोक कथाओ का सकलन – 'अलिफ लैला' लोक साहित्य की ही देन है। यही नही, ग्रीम बन्धुओ, एण्डरसन और पेर्रो की कथाओ को पढकर आज भी तरुण हृदय खुशी से खिल उठता है। आधुनिक कथा लेखको ने पुरानी लोककथाओ की विपयवस्तु को तराश और माजकर उन्हे नया जीवन दिया है। स्पष्टत ऐसी अनमोल निधि सारी दुनिया के बच्चो के लिए उपहार सदृश है।

अतीत से वर्तमान युग तक ये लोककथाए हमे चौकन्नी आखो से अपने परिवेश को परखने की सीख देती है, इनके जीवन्त नायक तरुण पाठको के समक्ष जीवन-सौन्दर्य के रहस्य को उसकी तमाम बहुरूपता के साथ प्रस्तुत करते ह।

व्लादीमिर बोइको
(डी० एस० सी, वाङमीमासा)



नक्कू बकरी

बहुत पुरानी बात है। एक था बूढा, एक थी बुढिया। एक दिन बूढा मेला देखने गया, वहा पर उसने एक बकरी खरीदी। बकरी लेकर वह घर आया और अगले दिन सुबह उसने अपने बडे बेटे को बकरी चराने भेजा। लडका चरागाह मे सुबह से शाम तक बकरी चराता रहा और दिन ढलते ही उसे घर वापस ले चला। घर के पास पहुचा ही था कि देखता क्या है—बाडे के फाटक पर लाल-लाल जूते पहने बूढा खडा है। बूढे ने पूछा

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नही, बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," बकरी बोली। "उछल-कूदकर निकट पेड के जब मे आई, तब इक पत्ती मौका पाकर मैंने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झट से बढकर एक बूद बस मैने पी ली, खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढे को बडा गुस्सा आया कि बेटे ने उसकी प्यारी-प्यारी बकरी की ठीक से देखभाल क्यो नही की? उसने आव देखा न ताव बेटे को घर से निकाल दिया।

दूसरे दिन बूढे ने अपने छोटे लडके को बकरी चराने भेजा। लडका सुबह से शाम तक बकरी चराता रहा और दिन ढलने पर घर की ओर चल पडा। अभी वह बाडे के फाटक पर पहुचा ही था कि लाल-लाल जूते पहने बूढा खडा था। बूढे ने फिर पूछा

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नही, बाबा, न मैने कुछ खाया, न पिया," बकरी ने पहले जैसा राग अलापा। "उछल-कूदकर निकट पेड के जब मै आई, तब इक पत्ती मौका पाकर मैने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झटपट बढकर एक बूद बस मैने पी ली। खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढे ने इस लडके को भी घर से निकाल दिया।

तीसरे दिन बुढिया को बकरी चराने भेजा गया।

बुढिया दिन भर बकरी चराती रही और शाम होते ही उसे घर वापस ले आई। अभी बुढिया बाडे के फाटक तक पहुची ही थी कि लाल-लाल जूते पहने बूढा वहा मौजूद था। बूढे ने बकरी से फिर वही सवाल किया

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नही, बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," बकरी फिर वही रोना लेकर बैठ गई, "उछल-कूदकर निकट पेड के जब मै आई, तब इक पत्ती मौका पाकर मैने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झटपट बढकर एक बूद बस मैने पी ली, खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढे ने अपनी बुढिया को भी निकाल दिया।

चौथे दिन वह खुद बकरी चराने गया। दिन भर वह बकरी चराता रहा, दिन ढलते ही वह घर की तरफ चल दिया। लाल-लाल जूते पहने बाडे के फाटक पर झट से रुक गया। इस बार भी बूढे ने बकरी से पूछा

"बकरी, री बकरी, तूने कुछ खाया-पिया?"

"नही बाबा, न मैंने कुछ खाया, न पिया," इसके आगे बकरी ने वही सब फिर कह सुनाया। "उछल-कूदकर निकट पेड के जब मैं आई, तब इक पत्ती मौका पाकर मैने खाई। भरा सरोवर दिखा सामने चलते-चलते, झट से बढकर एक बूद बस मैंने पी ली, खाने को बस यही मिला था, पीने को बस यही मिला था।"

बूढा क्रोध से आग-बबूला हो उठा। वह लोहार के यहा जा पहुचा, लोहार से उसने छुरी की धार तेज कराई और घर आकर बकरी को हलाल करने लगा कि इसी बीच वह रस्सी तोडकर निकल भागी। और जगल मे जा पहुची। जगल मे उसे खरगोश की झोपडी दिखलाई दी। वह भीतर पहुचकर अलावघर के ऊपर छिपकर बैठ गई।

इसी समय खरगोश अपनी झोपडी मे आ पहुचा और उसे लगा कि कोई उसकी झोपडी मे छिपकर बैठा है। खरगोश ने पूछा

"घर मे कौन है?" अलावघर पर बैठी बकरी बोली

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी
खाल है मेरी उधडी उधडी।
उल्टा पुल्टा मेरा काम
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला-हिलाकर
मारूगी मै रुला रुलाकर
तुम्हे रौदकर, कुचल-कुचलकर,
सीग मारकर तुम्हे फाडकर!
लडना-भिडना मेरा काम
होगा तेरा काम तमाम!'

खरगोश डरकर घर से निकल भागा ओर एक पेड के नीचे बैठ गया। वहा बैठा रोता रहा। तभी उधर से भालू कही जा रहा था। उसने पूछा

"अरे, खरगोशवे, रो क्यो रहा है?"

"भालू भाई, मेरी झोपडी मे एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! रोऊ न तो क्या करू?"

भालू ने उसे धीरज बधाया

"मै उसे निकाल बाहर करूगा!"

झटपट झोपडी तक जाकर भालू ने पूछा

"खरगोश की झोपडी मे कौन है?"

बकरी ने अलावघर से ही जवाब दिया

नक्कू बकरी, नक्कू बकरी
खाल है मरी उधडी उधडी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टक है मरा दाम।
दुम का अपनी हिला हिलाकर

मारूगी मै रला रलाकर
तुम्हे रौदकर, कुचल-कुचलकर
सींग मारकर, तुम्ह फाडकर!
लडना-भिडना मेरा काम
होगा तरा काम तमाम!

भालू डरकर झोपडी से निकल भागा।

"नही, खरगोश, मैं उसे नही भगा सकता। मैं खुद उससे डरता हू!" भालू ने टके-सा जवाब दे दिया।

खरगोश फिर पेड के नीचे बैठकर रोने लगा। अचानक उधर से भेडिया निकला। उसे रोता देखकर पूछने लगा

"अरे, खरगोशवे, रो क्यो रहा है?"

"भेडिये भैया, मेरी झोपडी मे एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! रोऊ न तो क्या करू?"

भेडिया बोला

"मै उसे खदेडकर बाहर कर दूगा!"

"भालू हिम्मत हार गया तो तुम्हारी क्या बिसात?"

"अरे, मै चुटकियो मे उसे भगा दूगा!"

भेडिया झोपडी पर पहुचा, उसने आवाज लगाकर पूछा

"खरगोश की झोपडी मे कौन है?"

बकरी ने अलावघर से कहा

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी,
खाल है मेरी उधडी उधडी।
उल्टा पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला हिलाकर,
मारूगी मै रला-रलाकर,
तुम्हे रौदकर, कुचल-कुचलकर,
सींग मारकर तुम्हे फाडकर!
लडना भिडना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!

भेडिया भी डर के मारे निकल भागा।

"नही, खरगोश, मैं उसे नही भगा सकता। उस जानवर से तो डर लगता है!" भेडिया भी दुम दबाकर खिसक लिया।

खरगोश फिर पहले की तरह पेड के नीचे बैठकर रोने-पीटने लगा। अचानक उधर से लोमडी गुजरी, उसने खरगोश को रोता हुआ देखकर पूछा

"अरे, खरगोशवे, रो क्यो रहा है?"

'लोमडी दीदी, मेरी झोपडी मे एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! मै बेघर हो गया हू। रोऊ न तो क्या करू?"

और लोमडी बोली

"मै उसे निकाल बाहर करूगी!"

'भालू ने कोशिश की, लेकिन हार मान गया, भेडिये ने भी कोशिश की, लेकिन दुम दबाकर भाग गया। आखिर तुम उसे कैसे भगा सकती हो?"

"देख लेना, अगर निकाल बाहर न करू!"

लोमडी ने आवाज लगाई

"खरगोश की झोपडी मे कौन है?"

तब बकरी अलावघर से बोली

नक्कू बकरी नक्कू बकरी,
खाल है मेरी उधडी उधडी।
उल्टा-पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला हिलाकर
मारूगी मै रुला रुलाकर,
तुम्हे रौदकर, कुचल कुचलकर,
सीग मारकर तुम्हे फाडकर!
लडना भिडना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

लोमडी थर-थर कापने लगी और वहा से निकल भागी।

"डर के मारे मेरा बुरा हाल है, मैं तेरी मदद नही कर सकती, खरगोश!"

खरगोश फिर पेड के नीचे बैठकर रोने लगा। वह लगातार सुबकिया ले-लेकर रोए जा रहा था। न जाने कहा से एक केकडा रेगता-रेगता चला आया और पूछने लगा

"खरगोश भैया, तुम क्यो रो रहे हो?"

"भाई केकडे, मेरी झोपडी मे एक खतरनाक जानवर घुसा बैठा है! अब तुम्ही बताओ, मै रोऊ न तो क्या करू?"

"ठीक है, मैं उसे निकाल बाहर करूगा!"

"भालू ने कोशिश की, लेकिन हार मान गया, भेडिये ने भी कोशिश की, लेकिन दुम दबाकर भाग गया, लोमडी ने भी कोशिश की, लेकिन थर-थर कापने लगी। तुम भी नाकाम साबित होगे।"

"देख लेना, अगर मै उसे निकाल बाहर न करू!"

केकडा झोपडी मे रेगता हुआ घुस गया। फिर उसने जोर से पूछा

"खरगोश की झोपडी मे कौन है?"

बकरी पहले की तरह अलावघर से बोली

"नक्कू बकरी, नक्कू बकरी
खाल है मेरी उधडी उधडी।
उल्टा पुल्टा मेरा काम,
तीन टके है मेरा दाम।
दुम को अपनी हिला हिलाकर,
मारूगी मै रुला रुलाकर
तुम्हे रौदकर कुचल कुचलकर,
सीग मारकर तुम्हे फाडकर!
लडना भिडना मेरा काम,
होगा तेरा काम तमाम!"

लेकिन केकडा जरा भी नही डरा। वह रेगता हुआ आगे बढता रहा, धीरे-से अलावघर के ऊपर जा पहुचा। वहा उसने बकरी को अपने मजबूत पजे मे जकड लिया और बोला

सुन री बकरी मैं हूं केकड़ा
मूर्ख नहीं हूं समझ गई तू?

इधर पजा कसा, उधर बकरी मिमियाने लगी। वह अलावघर में कूदकर भागी और सिर पर पैर रखकर गायब हो गई।

खरगोश खुशी-खुशी उछलने-कूदने लगा। वह अपनी झोपडी में आया और केकडे के प्रति आभार प्रकट किया। तब से आज तक वह अपनी झोपडी में रहता चला आ रहा है।



दादाजी का दस्ताना

एक थे बूढे दादाजी। जगल से होकर कही जा रहे थे। पीछे-पीछे उनका कुत्ता भाग रहा था। चलते-चलते दादाजी के हाथ का दस्ताना गिर गया। इस बीच कही से एक चुहिया दौडती आई और दादाजी के दस्ताने मे छिपकर बैठ गई और जरा दम लेकर बोली

"अब मै यही रहूगी।"

इसी वक्त एक मेढक फुदकता हुआ वहा आ पहुचा। उसने आवाज दी

"दस्ताने मे कौन रहता है?"

"अरे, मै हू चुनमुन चुहिया, लेकिन तुम कौन हो?"

मै फुदकू मेढक हू। मुझे भी अन्दर आ जाने दो!"

"ठीक है, अन्दर आ जाओ!"

इस तरह एक से दो हो गए। अचानक भागता हुआ एक खरगोश वहा आ पहुचा और दस्ताने के करीब आकर उसने आवाज दी

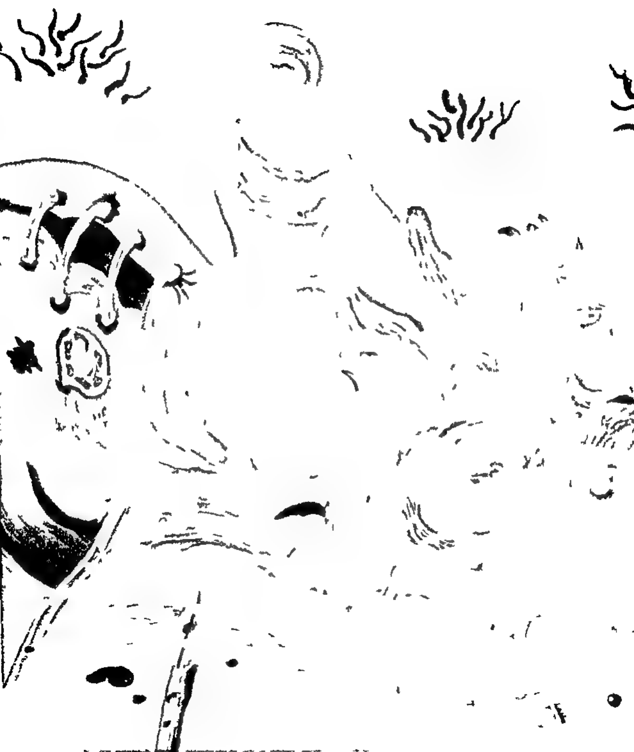
"दस्ताने मे कौन रहता है?"

"अरे, हम है—चुनमुन चुहिया, फुदकू मेढक। लेकिन तुम कौन हो?"

"मै उडन-छू खरगोश हू। मुझे भी अन्दर आ जाने दो!"

"ठीक है, अन्दर आ जाओ।"

अब वे तीन हो गए। ठीक इसी वक्त दौडती-दौडती एक लोमडी वहा आ



पहुची। दस्ताने के पास आकर उसने आवाज दी

"दस्ताने मे कौन रहता है?"

"अरे, हम हे – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेढक और उडन-छू खरगोश। लेकिन तुम कौन हो?"

"मे हू चटक-मटक लोमडी। मुझे भी अन्दर आ जाने दो।"

"ठीक है! अन्दर आ जाओ।"

इस तरह एक-एक कर वे चार हो गए।

इसी समय दौडता हुआ एक भेडिया वहा आ पहुचा। दस्ताने के पास आकर उसने आवाज दी

"दस्ताने मे कौन रहता है?"

"अरे, हम हे – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेढक, उडन-छू खरगोश और चटक-मटक लोमडी! लेकिन तुम कौन हो?"

"मैं हू भुक्खड भेडिया। मुझे अन्दर आ जाने दो!"

"ठीक है, अन्दर आ जाओ!"

अब वे पाच हो गए। इसी तरह कही से भटकता हुआ जगली सूअर वहा आ पहुचा और दस्ताने के पास आकर उसने गुर्राते हुए आवाज दी

"दस्ताने मे कौन रहता है?"

"अरे, हम है – चुनमुन चुहिया, फुदकू मेढक, उडन-छू खरगोश, चटक-मटक लोमडी और भुक्खड भेडिया। लेकिन तुम कौन हो?"

"मै हू झगड़ू शूकर। मुझे भी अन्दर आ जाने दो!"

क्या मुसीबत है! सभी दस्ताने मे रहना चाहते है!

"देखो, अब तुम्हारे लिए जगह नही है! वेसे ही यहा दम घुटा जा रहा है!"

"देख लो, किसी न किसी तरह जगह निकल आएगी। बस, जरा-सी जगह दे दो!"

"अच्छा, तो आ जाओ। अब किया ही क्या जा सकता है!"

जगली सूअर भी अन्दर पहुच गया। दस्ताने मे पूरे छह जानवर जमा हो गए। हिलना-डुलना तक मुश्किल हो रहा था!

और तो और। कही से झूमता हुआ एक भालू भी आ पहुचा और वहा पहुचते ही जोर मे गुर्राया, फिर उसने दहाडते हुए आवाज दी

"दस्ताने मे कौन रहता है?"

"अरे, हम है–चुनमुन चुहिया, फुदकू मेढक, उडन-छू खरगोश, चटक-मटक लोमडी, भुक्खड भेडिया और झगड़ू शूकर! लेकिन तुम कौन हो?"

"अन्दर भीड तो बहुत है! पर मेरे भर की जगह निकल ही आएगी! मैं हू खौफनाक भालू।"

तुम्हे कैसे अन्दर आने दे? अन्दर तो वैसे ही दम घुटा जा रहा है।"

"किसी भी तरह आने दो!"

"अच्छा, बस एक सिरे पर टिक जाओ!"

यह भी अन्दर पहुच गया। दस्ताने के अन्दर सात-सात जानवर समा गए। टस से मस होने भर की जगह न रह गई। लगा कि दस्ताना अब फटा, अब फटा।

उधर दादाजी को ख्याल आया कि उनके हाथ का दस्ताना कही गिर गया है। वह उसे ढूढने के लिए वापस लौटे। कुत्ता उनके आगे-आगे भागा। वह दौडता गया, दौडता गया और आखिर उसे दस्ताना पडा दिखाई दिया, पर यह क्या? दस्ताना तो हिल-डुल रहा है! कुत्ता तब भौकने लगा।

दस्ताने मे घुसे हुए सारे जानवर डर गए। अपनी जान बचाने के लिए वे दस्ताने से निकलकर जगल की ओर सिर पर पाव रखकर भागे। तभी दादाजी ने वहा पहुचकर अपना दस्ताना उठा लिया।



बहन लोमडी, भाई भेडिया

एक लोमडी थी। उसने अपने लिए झोपडी बनाई और उसमे रहने लगी। जाडे का मौसम था। लोमडी का ठड के मारे बुरा हाल था। ठण्ड से थर-थर कापने लगी। वह गाव मे अपने चूल्हे के लिए आग लेने गई। लोमडी ने एक बूढी ओरत के पास आकर कहा

"दादी मा, नमस्ते! मुझे अपने चूल्हे से थोडी-सी आग दे दो। कभी अवसर आने पर इस उपकार का बदला चुका दूगी।"

"लोमडी बहन, बैठ जाओ, जरा सुस्ता लो, आग ताप लो। तब तक मै कचौडिया बना लू।"

बुढिया खसखस की कचौडिया बना रही थी। उन्हे चूल्हे से उतार-उतारकर मेज पर रखती जा रही थी। लोमडी ने ताजी कचौडियो पर एक ललचाई नजर डाली और एक बडी-सी कचौडी चुपके से उठाकर भाग गई। उसने कचौडी के भीतर भरे हुए खसखस के दाने बीन-बीनकर खा लिए और उसके अदर भूसा भर दिया। फिर भागती हुई अपनी राह चल दी।

वह दौडी चली जा रही थी कि रास्ते मे उसे चरवाहे छोकरे मिले। वे गायो के झुण्ड को पानी पिलाने के लिए नदी की तरफ हाककर ले जा रहे थे।



"नमस्ते, छोकरो!"

"नमस्ते, लोमडी दीदी!"

"यह कचौडी ले लो, वदले मे एक बछडा दे दो।"

"मजूर है," लडको ने कहा।

"लेकिन इसे अभी न खाने लगना, जब मै गाव से चली जाऊ, तभी इसे खाना।"

खैर, अदला-बदली हो गई। लोमडी ने बछडे की रस्सी थामी और झट से जगल की तरफ भाग निकली।

लडके कचौडी खाने लगे तो देखा कि वहा भूसा ही भूसा भरा हुआ है।

उधर लोमडी झट से अपनी झोपडी पर पहुची। उसने पेड काटा और अपने लिए वर्फ पर चलनेवाली स्लेज गाडी बनाई। उसमे बछडे को जोतकर चल दी।

तभी एक भेडिया उधर निकल आया।

"लोमडी बहन, नमस्ते!"

"भेडिये भाई, नमस्ते!"

"अरे, यह बछडेवाली स्लेज गाडी कहा से मिल गई?"

"मैने इसे खुद बनाया है।"

"मुझे भी अपनी स्लेज पर विठा लो।"

"तुम्हे कहा विठाऊ? तुम तो मेरी गाडी ही तोड दोगे।"

"नही, मैं तुम्हारी गाडी पर बस एक पैर टिका लूगा।"

"ठीक है, रख लो।"

थोडा आगे चलने के बाद भेडिये ने कहा

"लोमडी वहन, क्या मै दूसरा पैर भी रख लू?"

"भाई, तुम तो मेरी गाडी तोड डालोगे!"

"नही, वहन, तुम्हारी गाडी टूटेगी नही।"

"ठीक है, दूसरा पैर भी रख लो।"

भेडिये ने अपना दूसरा पैर भी स्लेज गाडी पर रख लिया। इस तरह वे

दोनो चलते रहे, चलते रहे।

अचानक चरचराने की तेज आवाज हुई।

"भाई, तुम तो मेरी स्लेज ही तोडे दे रहे हो!"

"नही, लोमडी बहन, यह तो मैं दात से अखरोट फोड रहा हू।"

"देखो, जरा ध्यान रखना!"

फिर वे आगे चल दिए।

"लोमडी बहन, क्यो न मैं तीसरा पैर भी रख लू?"

"कहा पेर रखोगे? स्लेज टूट जाएगी। तब मै लकडी किस पर ढोऊगी!"

"नही, बहन, गाडी को कुछ नही होगा।"

"अच्छा, तो पैर रख लो!"

भेडिये ने तीसरा पैर भी स्लेज गाडी पर रख लिया। फिर चरचराने की तेज आवाज हुई।

"अरे, तोबा!" लोमडी बोली। "भाई, अब तुम मेहरबानी करके उतर जाओ। तुम मेरी गाडी का कचूमर निकाल दोगे!"

"अरे, बहन, तुम नाहक परेशान होती हो। मैने तो दात से अखरोट फोडा है।"

"लाओ, मुझे भी दो!"

"खतम हो गया। बस आखिरी बचा था।"

फिर वे आगे चलते रहे, चलते रहे।

"लोमडी बहन, मुझे अब अपनी गाडी पर बैठ ही जाने दो!"

"तुम्ही बताओ, कहा बैठोगे? वैसे ही मेरी गाडी चरचरा रही है। अब क्या उसे तोडकर ही मानोगे?"

"मैं बस हौले-से बैठूगा।"

"ठीक है, तुम्ही जानो!"

बस, फिर क्या! भेडिया जैसे ही बैठा, स्लेज गाडी चरचराकर टूट गई। लोमडी ने उसे खूब बुरा-भला कहा। जब उसे कोस-कोसकर थक गई तो बोली

"जाओ, लकडिया चीरकर लाओ और नई स्लेज के लिए पेड गिराओ। और उसे ढोकर यहा लाओ।"

"मैं पेड कैसे गिराऊगा, मुझे तो यह भी नही मालूम कि स्लेज के लिए कैसी लकडी चाहिए?"

"तो यह बात है, स्लेज तोडनी तुम्हे आती है, पर लकडी का इन्तजाम करने मे तुम्हारी अक्ल चरने चली गई।"

फिर उसे पहले की तरह कोसने लगी। जब कोस-कोसकर खूब थक गई तो बोली

"हा, तो सुनो, जगल मे पहुचने के बाद यह कहना 'खुद कटकर गिर जाए पेड, सीधा पेड, टेढा पेड! खुद कटकर गिर जाए पेड, सीधा पेड, टेढा पेड!'"

यह सुनकर भेडिया वहा से चल दिया।

जगल मे पहुचने के बाद वही बाते दोहराने लगा जो लोमडी ने बताई थी

"खुद कटकर गिर जाए पेड, टेढा पेड, टेढा पेड! खुद कटकर गिर जाए पेड, टेढा पेड, टेढा पेड!"

और पेड कटकर गिर पडा। पेड भी क्या था – टहनिया ही टहनिया। एक सीधी छडी तक न बने ऐसे पेड से – स्लेज की पटरियो की तो बात ही दूर रही।

ऐसा पेड भेडिया उठा लाया था। उसे देखते ही लोमडी आग-बबूला हो उठी। फिर क्या?

शुरू हो गया उसे डाटने-फटकारने का नया दौर

"अरे, अक्ल के दुश्मन, तुझे जैसा मैंने बताया था, उसे तूने सही-सही न दोहराया होगा!"

"मैंने तो, लोमडी बहन, वहा खडे होकर यही दोहराया था 'खुद कटकर गिर जाए पेड, टेढा पेड, टेढा पेड!'"

"मैं पहले ही जानती थी! भाई, तुम तो निरे काठ के उल्लू हो! बैठ जाओ

यहा, अभी मैं खुद पेड काटकर लाती हू।"

और वह जगल की ओर चल दी।

भेडिये को वैठे-वैठे भूख लग आयी। उसने लोमडी के घर को छान मारा, वहा खाने के लिए कुछ न था। भेडिया सोचता रहा, जुगाड वैठाता रहा

"आओ, फिर वछडे को ही मारकर खा डाले और यहा से रफू-चक्कर हो जाए।"

भेडिये ने बछडे की वगल मे एक सूराख वनाया और अन्दर ही अन्दर उसे खाकर खोखला कर दिया। बीच की खाली जगह मे उसने गौरैया भर दी और सूराख को फूस मे ढक दिया। और खुद नौ दो ग्यारह हो गया।

घर लौटकर लोमडी ने नई स्लेज बनाई और उसमे वैठकर वोली

"चल रे, बछडे, चल!"

लेकिन बछडा अपनी जगह से न हिला। लोमडी ने उसे चाबुक मारा चाबुक मारते ही फूस का गुच्छा बाहर गिर पडा और फुर्र-फुर्र करती गौरैया उड गई।

"अरे, शैतान कही के! देखना, कैसा सबक सिखाती हू तुझे!"

लोमडी जाकर रास्ते मे लेट गई। थोडी देर मे मछेरे अपनी गाडी पर मछलिया लादे उधर से निकले। उन्हे आता देखकर लोमडी ने अपनी सास रोक ली, जैसे कि मर गई हो। मछेरो ने रास्ते मे लोमडी को पडी देखा तो बोले "इसे भी गाडी मे डाल लेते है। वेच देगे, अच्छे पैसे मिल जाएगे!" लोमडी को गाडी मे डालकर वे आगे बढ लिए। वे चलते रहे, चलते रहे। इस बीच लोमडी ने एक-एक करके मछलिया फेकनी शुरू कर दी। जब ढेर सारी मछलिया फेक चुकी तो खुद भी चुपके से खिसक ली। मछेरे अपनी गाडी हाकते हुए वढते चले गए। इधर लोमडी ने सारी मछलियो को वटोरकर एक ढेर बनाया और मजे से उन्हे खाने बैठ गई।

इसी बीच वह भेडिया भागता हुआ आया

"नमस्ते, लोमडी वहन!"

"नमस्ते, भेडिये भाई!"

"यहा तुम क्या कर रही हो, लोमडी वहन?"

"देखते नही, मछलिया खा रही हू।"

"मुझे भी दो न!"

"जाओ, खुद ही मछलिया पकड लाओ।"

"पर मुझे तो मछलिया पकडना नही आता।"

"नही आता तो मै क्या करू? मे तो तुम्हे एक छोटा टुकडा तक न दूगी!"

"अच्छा, तो मछली पकडना ही सिखा दो!"

और लोमडी ने मन मे सोचा "ठहर जरा! तूने मेरा बछडा मार डाला। अब मै तुझे बढिया-सा इनाम दूगी!"

"तुम नदी पर जाओ, वहा लोगो ने पानी निकालने के लिए जो सूराख बना रखा है उसमे अपनी दुम लटका दो और वही बैठ जाओ। फिर धीरे-धीरे दुम हिलाते हुए यह कहते जाओ 'छोटी-बडी मछलिया आए, मेरी दुम मे फसती जाए! छोटी-बडी मछलिया आए, मेरी दुम मे फसती जाए!' बस यही बार-बार दोहराते रहना, मछली तुम्हारी दुम मे फस जाएगी।"

"ऐसी बढिया तरकीब सुझाने के लिए धन्यवाद," भेडिये ने कहा।

झटपट भेडिया नदी किनारे पहुचा और बर्फ से जमी नदी पर सूराख ढूढा और उसमे अपनी दुम लटकाकर मजे मे बैठ गया। इस तरह धीरे-धीरे दुम हिलाता हुआ लोमडी का सिखाया पाठ दोहराने लगा "छोटी-बडी मछलिया आए, मेरी दुम मे फसती जाए! छोटी-बडी मछलिया आए, मेरी दुम मे फसती जाए!" लोमडी सरकडे के पीछे से यह रट लगाती जा रही थी "ढम-ढम-ढम, भेडिये की दुम जाए जम-जम-जम!" जाडा तो कडाके का था ही, सब कुछ जमा जा रहा था।

मछली पकडने के लालच मे भेडिये ने अपनी रट जारी रखी "छोटी-बडी मछलिया आए, मेरी दुम मे फसती जाए!" लोमडी दूसरी ही रट लगा रही थी "ढम-ढम-ढम, भेडिये की दुम जाए जम-जम-जम!"

इस तरह भेडिया सूराख मे दुम डाले बैठा रहा। लोमडी की चाल सफल हुई। आखिर सूराख का पानी भी जम गया और उसमे भेडिये की दुम जकड गई।

तव लोमडी भागकर गाव पहुची

"अरे, लोगो, भेडिया आया रे! अरे, मारो भेडिये को रे!"

गाव के लोग बल्लम, लाठिया और कुल्हाडे लेकर नदी की ओर भागे। उन सवने मिलकर भेडिये को मार डाला। लोमडी आज भी मजे से अपनी झोपडी मे रह रही है।



फूस का बछडा – राल की पीठ

पुरानी बात हे। कही एक बूढा आदमी अपनी बुढिया के साथ रहा करता था। बूढा पेडो से राल निकालता था, बुढिया घर की देखभाल करती थी।

एक बार बुढिया ने जिद करते हुए बूढे से कहा

"तुम मेरे लिए फूस का एक बछडा बना दो !"

"तू भी अजीब मूर्ख है ! अरे, फूस का बछडा तेरे किस काम का ?"

"उसे मै चराने ले चलूगी।"

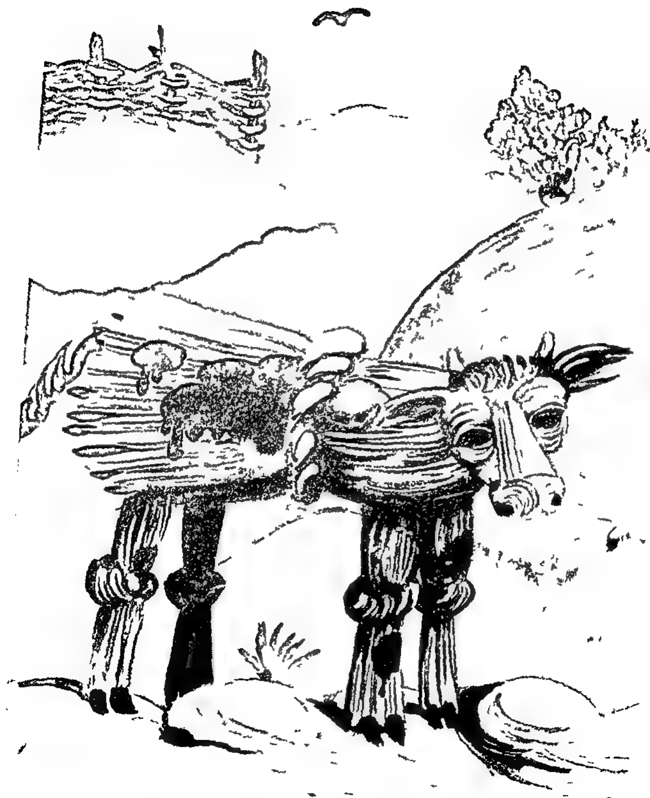
बूढा मजबूर था। पत्नी की जिद के कारण उसे फूस का बछडा बनाना ही पडा। उसने बछडा बनाकर उसके पेट और पीठ पर राल पोत दी।

अगले दिन सुबह बुढिया ने तकली उठाई और बछडे को चराने चल दी। एक टीले पर बैठकर तकली पर सूत कातते हुए यह कहती जाती

"फूस का है तू बछडा, राल की तेरी पीठ, चर, मेरे बछडे, चर-चर-चर ! "

इस तरह बुढिया सूत कातती रही, तकली चलाती रही। अचानक उसे नीद आ गई।

इस बीच सघन वन से एक भालू भागता हुआ वहा आया और बछेडे पर झपटा



'तू रुसा जानवर है रे ?"

"फूस का म हू वछडा, गल की मेरी पीठ!"

ला, मुझे थोडी राल दे दे, वुत्तो ने मेरे बाल नोच लिए है!"

लेकिन राल की पीठवाला वछडा मामोश खडा रहा। भालू को वडा गुस्सा आया। उमने आव देखा न ताव उछडे की पीठ पर अपने पजे का एक जोरदार झपट्टा मारा—और भालू मिया खुद राल मे जा चिपके।

बुढिया की नीद खुली तो उसने भालू को राल मे चिपका हुआ पाया। उसने बूढे को जोर मे पुकारा

"सुनो, सुनो, जल्दी आओ, हमारे वछडे ने भालू पकडा है!"

बूढे ने भालू को पकडकर तहखाने मे बन्द कर दिया।

दूमरे दिन सुबह बुढिया ने फिर मे अपनी तकली ली और वछडे को चराने चल दी। टीले पर जा बैठी। तकली चलाती, सूत कातती हुई यह कहती जाती

"फूस का है तू वछडा, गल की तेरी पीठ, चर, मेरे बछडे, चर-चर-चर!"

बस, इस तरह तकली चलाते और सूत कातते हुए बुढिया को नीद आ गई।

तभी सघन वन मे एक भेडिया भागता हुआ वहा आया और बछडे पर झपटा

"तू कसा जानवर है रे?"

"फूस का मैं हू बछडा, राल की मेरी पीठ।"

"ला, मुझे थोडी राल दे दे, कुत्तो ने मेरे बाल नोच लिए है!"

"ले लो।"

राल की पीठ पर पजा लगाते ही भेडिया चिपक गया।

बुढिया की नीद खुली तो उसने भेडिये को राल मे चिपका हुआ पाया। उसने बूढे को जोर से पुकारा

"सुनो, सुनो, जल्दी आओ, हमारे बछडे ने भेडिया पकडा है!"

बूढा लपककर वहा आ पहुचा और उसने भेडिये को भी तहखाने मे डाल दिया।

तीसरे दिन फिर बुढिया वछडे को चराने चल दी और सूत कातने लगी। सूत कातते-कातते ऊघने लगी।

अचानक एक लोमडी वहा पहुची। बछडे मे पूछने लगी

"तू कैसा जानवर है रे?"

"फूस का मे हू बछडा, राल की मेरी पीठ।'

"ला, मुझे थोडी राल दे दे, कुत्तो ने मेरे बाल नोच लिए ह!"

"ले लो।"

और फिर लोमडी भी चिपक गई। बुढिया की नीद खुली और उसने बूढे को पहले की तरह जोर से पुकारा।

बूढे ने लोमडी के साथ भी वही सलूक किया। लोमडी भी तहखाने मे बन्द हो गई। अहा, कितने जानवर इकट्ठे हो गए!

बूढे ने चाकू उठाया और उसकी धार तेज करने लगा। धार तेज करते हुए बोलता जा रहा था

"भालू को मारकर उसकी खाल उधेडूगा। बढिया कोट बनेगा।"

भालू की तो यह सुनकर सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई, बोला

'मुझे मत मारो, मुझे छोड दो! मै तुम्हारे लिए शहद लाऊगा।"

"धोखा तो नही दोगे?"

"नही, मैं तुम्हे धोखा नही दूगा।"

"खबरदार, जो धोखा दिया!" यह कहकर उसने भालू को छोड दिया। और फिर मे चाकू की धार तेज करने लगा। सहमे हुए भेडिये ने पूछा

"बाबा, यह चाकू किसलिए तेज कर रहे हो?"

"तुम्हारी खाल उतारकर अपने लिए जाडे की गरम टोपी बनाऊगा!"

"मुझे छोड दो! मैं तुम्हारे लिए मेमना लेकर आऊगा।"

"खबरदार, धोखा मत देना!"

उसने भेडिये को भी छोड दिया और फिर मे चाकू की धार तेज करने लगा।

'बाबा, यह चाकू किसलिए तेज कर रहे हो?" लोमडी ने सहमी आवाज मे पूछा।

"तुम्हारी खाल बहुत बढिया है," बूढे ने कहा। "बुढिया के गरम कोट के लिए इसका खूबसूरत कालर बनेगा।"

"मुझे मत मारो! मैं तुम्हारे लिए मुर्गिया, बतखे और हस लेकर आऊगी।"

"खबरदार, धोखा मत देना!" यह कहकर बूढे ने लोमडी को भी आजाद कर दिया।

अगले दिन सवेरे तडके ही दरवाजा खटका।

"जाओ, देखो तो कौन है," बुढिया ने कहा।

बूढा उठकर बाहर आया। दरवाजे पर भालू खडा था। वह मधुमक्खियो का समूचा छत्ता ही उठा लाया था।

बूढे बाबा ने शहद लेकर भालू को विदा किया। इसी बीच फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई। भेडिया मेमनो को हाककर लाया था। इतने मे लोमडी भी वहा पहुच गयी। उसके साथ ढेर सारी मुर्गिया, हस और बत्तखे थी।

बूढा भी खुश, बुढिया भी खुश। दोनो मजे मे जीने लगे।



बिल्ला और मुर्गा

किसी जमाने मे बिल्ला और मुर्गा एक ही घर मे साथ-साथ रहते थे। वे दोनो गहरे दोस्त थे। एक दूसरे को बहुत चाहते थे और इस तरह सुख-चैन की जिन्दगी बिता रहे थे। एक दिन बिल्ला लकडी लाने के लिए जगल जाने लगा। घर से जाते समय उसने मुर्गे से कहा

"देखो भाई, अलावघर के ऊपर बैठना, रोटी खाना और घर मे किसी को आने न देना। कोई भी दरवाजा खटखटाए, तुम्हे बुलाए लेकिन तुम बाहर मत निकलना। मुझे जगल जाकर अलावघर के लिए लकडी लानी है।"

"ठीक है," मुर्गे ने कहा। जैसे ही बिल्ला घर से बाहर निकला, मुर्गे ने दरवाजा बन्द कर दिया।

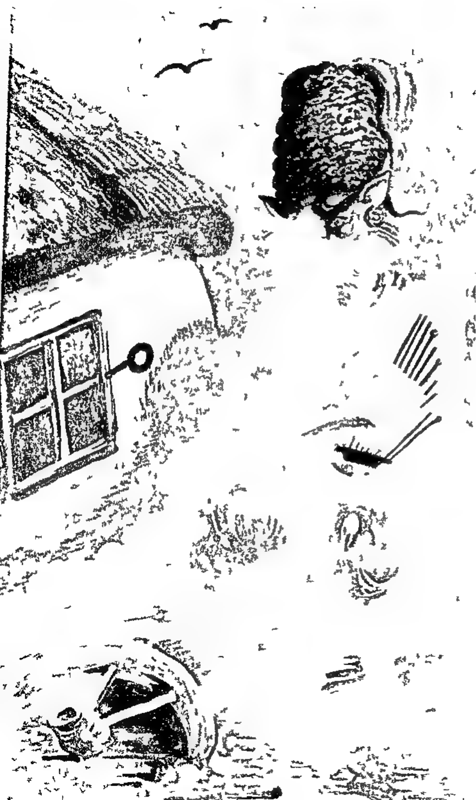
इस बीच एक लोमडी वहा आ पहुची। मुर्गे-मुर्गिया उसे बेहद पसद है! वह मुर्गे को पुकारने लगी

"मुर्गे, मुर्गे, बाहर आ, मुझसे कभी न तू घबरा! दाना-पानी लाई साथ, तुझे चुगाने आई आज! सुन, जल्दी दरवाजा खोल, नही तो खिडकी दूगी तोड!"

मुर्गे ने लोमडी को यह उत्तर दिया

"बिल्ला भाई दूर गया है, कुकडू-कू, नही खोलता मै दरवाजा, कुकडू-कू।"

यह सुनते ही लोमडी ने घर की खिडकी तोड डाली, मुर्गे की गर्दन दबोची और अपने घर की राह चल दी। मुर्गा अपने दोस्त बिल्ले को आवाजे देने लगा, दुखी होकर यह गाने लगा



"बिल्ले भाई, मुझे बचाओ, लोमडी के पजे से छुडाओ! लिए जा रही जगल पार, हरी घाटियो के उस पार, ऊचे-ऊचे पर्वत पार, चचल लहरो के उस पार, बिल्ले भाई, आओ, आओ, आकर मेरी जान बचाओ!"

बिल्ले ने मित्र की आवाज सुनी, भागता चला आया, लोमडी के पजे से उसे छुडा लिया। घर लाकर उसे फिर से आदेश दिया

"देखो, अगर लोमडी आए तो चुप रहना, जवाब मत देना। इस बार मै दूर जा रहा हू।"

फिर बिल्ला वहा से चला गया।

उधर लोमडी इसी ताक मे बैठी थी कि कब बिल्ला घर से जाए और वह मौका पाए। लोमडी भागती हुई खिडकी के पास आई और मीठे-मीठे लहजे मे मुर्गे को फुसलाते हुए बोली

"मुर्गे, मुर्गे, बाहर आ, मुझसे कभी न तू घबरा! दाना-पानी लाई साथ, तुझे चुगाने आई आज! सुन, जल्दी दरवाजा खोल, नही तो खिडकी दूगी तोड!"

लेकिन मुर्गे को धैर्य कहा था कि वह चुप रहता! उसने फिर वही जवाब दिया

"बिल्ला भाई दूर गया है कुकडू-कू, नही खोलता मै दरवाजा, कुकडू-कू!"

लोमडी ने आव देखा न ताव खिडकी मे छलाग लगाकर घर के अन्दर जा पहुची। वहा शोरबा और दलिया बना रखा था। उसे झटपट खा गई। फिर उसने मुर्गे की गर्दन पकडी और चल दी। मुर्गा फिर दर्द भरी आवाज मे अपने दोस्त बिल्ले को बुलाने लगा

"बिल्ले भाई, मुझे बचाओ, लोमडी के पजे से छुडाओ! लिए जा रही जगल पार, हरी घाटियो के उस पार, ऊचे-ऊचे पर्वत पार, चचल लहरो के उस पार! बिल्ले भाई, आओ, आओ, आकर मेरी जान बचाओ!"

उसने एक बार गाया—कोई असर न हुआ। दुबारा गाया—बिल्ला दोस्त भागता चला आया। उसने लोमडी के पजे से अपने दोस्त को छुडाया। उसे घर तक सकुशल पहुचाकर मित्र ने आदेश दिया

"देखो मुर्गे, अलावघर पर चुपचाप बैठे रहना, भूख लगे तो रोटी खाना और जैसे ही लोमडी आकर तुम्हे पुकारे, बस चुप्पी साधे बैठे रहना। बोलना नही। मुझे बहुत दूर जाना है, बहुत दूर, और तब तुम चिल्लाओ या न चिल्लाओ मुझ तक तुम्हारी आवाज न पहुच पाएगी!"

इधर बिल्ला घर से चला और उधर लोमडी ने दरवाजे पर दस्तक दी। उसने फिर वही राग छेड दिया

"मुर्गे, मुर्गे, बाहर आ, मुझसे कभी न तू घबरा! दाना-पानी लाई साथ, तुझे चुगाने आई आज! सुन, जल्दी दरवाजा खोल, नही तो खिडकी दूगी तोड!"

मुर्गा भला कहा चुप रहनेवाला था! उसने भी जवाब दिया

बिल्ला भाई दूर गया है, कुकड़ू-कू, नही खोलता मै दरवाजा, कुकड़ू-कू!"

लोमडी ने फिर खिडकी से छलाग लगाई। शोरबा और दलिया खा-पी डाला। और फिर मुर्गे की गर्दन दबोचकर चल दी। मुर्गा एक बार चिल्लाया, दो बार चिल्लाया, तीसरी बार भी चीखा-चिल्लाया पर बिल्ला तो कही दूर ही निकल गया था और इस बार मुर्गे की पुकार उस तक न पहुच पाई।

उधर लोमडी झटपट मुर्गे को उठाकर अपने घर पहुच गई।

बिल्ला जगल मे जब घर वापस आया तो मुर्गा घर से गायब था। उसे बडा अफसोस हुआ। तुरन्त तरकीब सोचने लगा, देर तक सोचता रहा कि अचानक उसे रास्ता सूझा उसने अपना बाजा सभाला, रग-बिरगे चित्रोवाला थैला गले मे लटकाया और लोमडी के घर की ओर चल दिया।

लोमडी घर पर नही थी। वह शिकार की तलाश मे कही गई थी। घर पर उसकी चार बेटिया और बेटा फिलिपोक ही थे।

बिल्ला खिडकी के पास अपना बाजा बजाकर यह गीत गाने लगा

"लोमडी रानी का नया-नया घर, खेले चार बेटिया सुदर, बेटा उसका फिलिपोक, नही रहा कभी डरपोक! आओ, प्यारे बच्चो, आओ, तान छेड दी है, सुन जाओ! सुन करके फिर मुझे बताओ, अपने दादा से मिल जाओ! वाह-वाह तो करते जाओ!"

लोमडी की बडी लडकी से रहा नही गया, उसने अपनी छोटी बहनो से कहा

"तुम यही पर बैठी रहना और मै जरा देखकर आती हू कि इतना सुरीला गीत कौन गा रहा है।"

जैसे ही लोमडी की बडी लडकी दरवाजा खोलकर बाहर निकली, बिल्ले ने उसके सिर पर डडा मारा और उसे अपने थैले मे डाल लिया।

और फिर वही गीत गाने लगा

"लोमडी रानी का नया-नया घर, खेले जहा चार बेटिया सुदर "

दूसरी लडकी से भी न रहा गया, वह भी घर से वाहर निकल आई और विल्ले ने झट से उसके सिर पर डडा मारा और उसे भी अपने थैले मे डाल लिया। फिर वही गीत गाने लगा

"लोमडी रानी का नया-नया घर, खेले जहा चार वेटिया सुदर "

तीसरी बेटी बाहर निकली उसे भी विल्ले ने थैले मे डाल लिया, फिर चौथी वाहर निकली तो उसे भी। अब लोमडी का वेटा फिलिपोक भी उसी तरह बाहर निकलकर आया। विल्ले ने उसका भी वही हाल किया। अब लोमडी के पाचो के पाचो बच्चे रग-बिरगे चित्रोवाले थैले म सहमे-सहमे वैठे थे।

विल्ले ने थैले का मुह रस्सी से वाध दिया और लोमडी के घर मे आ पहुचा। देखा कि उसका मित्र मुर्गा अन्तिम सासे गिन रहा हे। उसके पख इधर-उधर छितरे पडे ह। एक टाग काट दी गई ह। चूल्हे पर एक वर्तन मे पानी गरमाया जा रहा है—मुर्गे को पकाया जाएगा।

विल्ले ने मुर्गे की दुम पकडकर कहा

"मुर्गे भाई, होश मे आओ, फडको-फडको, चाल दिखाओ!"

मुर्गा झट से फडक उठा, अपनी एक टाग पर खडे होकर बाग देना चाहता था। पर वह वेचारा कुकड-कू बोलता भी तो केसे? उसकी एक टाग ही नही थी। तब विल्ले ने किसी तरह मुर्गे की टाग पहलेवाली जगह पर जोड दी, उसके कुछ पख चिपका दिए, बस, जैसे-तैसे उसे ठीक कर दिया।

तव उन दोनो ने मिलकर लोमडी के घर में जो कुछ खाने-पीने का सामान था उसे खा डाला और वर्तन-वर्तन तोड डाले। विल्ले ने थैले मे दुबके वैठे लोमडी के बच्चो को छोड दिया। और वे दोनो खुशी-खुशी घर चले आए।

बस तब से वे हसी-खुशी जिन्दगी के दिन विता रहे हे। वैसे ही रोटिया खाते है, चारा चुगते है। मुर्गा अब विल्ले का कहना मानता है। मुसीबत ने उसे सबक सिखा दिया, अक्लमन्द बना दिया।



मिस्टर बिल्ला

किस्सा बडा पुराना है। कही कोई आदमी रहता था। उसके घर मे एक बिल्ला था, वह भी इतना बूढा कि अब चूहे न पकड पाता था। एक दिन मालिक ने सोचा "ऐसा बेकार बिल्ला किस काम का ? मै इसे जगल मे छोड आता हू।" वह बिल्ले को पकडकर जगल मे छोड आया।

जगल मे बूढा बिल्ला फर वृक्ष के नीचे बैठकर रोने लगा। तभी एक लोमडी दौडती हुई उधर से गुजरी।

"तुम कौन हो ?" लोमडी ने पूछा।

बिल्ले ने गुस्से मे बाल खडे करते हुए कहा

"फू-फू ! मेरा नाम मिस्टर बिल्ला है !"

लोमडी इस महिमावान मिस्टर बिल्ले से मिलकर फूली न समाई। फिर क्या था ? उसने मिस्टर बिल्ले के समक्ष झटपट यह प्रस्ताव भी रख दिया

"मिस्टर बिल्ला, आप मुझसे शादी कर ले। आपकी योग्य पत्नी बनकर रहूगी। खाना बनाकर खिलाऊगी।"

"ठीक है, तुम्हारा प्रस्ताव मुझे मजूर है।"

फिर बिल्ला और लोमडी साथ-साथ रहने लगे।

लोमडी बिल्ले की टहल करते हुए उसे हर तरह से खुश रखती। कभी मुर्गी पकड लाती, तो कभी कोई छोटा-मोटा जगली जानवर उठा लाती। खुद चाहे खाए



न खाए, बिल्ले का पेट जरूर भरती।

एक दिन लोमडी के यहा खरगोश आकर बोला

"लोमडी, लोमडी, मै तुम से सगाई करना चाहता हू। जल्द ही रस्म लेकर आऊगा।"

"नही, मत आना! मेरे घर मे मिस्टर बिल्ला विराजमान है। अगर मेरे यहा आओगे, तो पछताओगे – वह तुम्हे फाडकर टुकडे-टुकडे कर डालेगे।"

उधर बिल्ला बाहर निकल आया। उसके सारे रोए खडे थे। छाती फुलाकर वह डरावनी आवाज मे फुफकारने लगा

"फू-फू!"

बेचारे खरगोश का डर के मारे दम ही निकल गया। वह तुरन्त वहा से जगल की तरफ तेजी मे भागा। वहा जाकर उसने भेडिये, भालू और जगली सूअर से यह सारा किस्सा कह सुनाया कि कैसे उसने मिस्टर बिल्ला नामक एक खौफनाक जीव को लोमडी के घर मे देखा। बस किसी तरह जान बचाकर भागता चला आया है।

उन सभी ने मिलकर बिल्ले की खुशामद करने की एक तरकीब निकाली – उसे लोमडी के साथ अपने यहा दावत पर बुलाने का फैसला किया।

फिर क्या था? मेहमान बिल्ले के स्वागत के लिए बढिया-बढिया खाने की लिस्ट बनाई जाने लगी।

भेडिये ने कहा

"मै मास का इन्तजाम करूगा, ताकि बढिया शोरबा बनाया जा सके।"

जगली सूअर ने कहा

"मै चुकन्दर और आलू लेने जा रहा हू।"

भालू ने कहा

"भाइयो, मै जायकेदार शहद लाऊगा।"

और खरगोश पत्तागोभी लाने के लिए भागा।

इस तरह सबने मिलकर खाना पकाया, खाना मेज पर लगा दिया गया और फिर वे आपस मे बहस करने लगे कि लोमडी और मिस्टर बिल्ले को दावत के लिए बुलाने कौन जाए?

भालू बोला

"मै मोटा हू, जल्दी हाफने लग जाऊगा।"

जगली सूअर बोला

"मेरी चाल बडी धीमी है, ऐसी चाल से भला क्या चल पाऊगा।"

भेडिया बोला

"मै बूढा हू और सुनता भी ऊचा हू।"

मजबूर होकर खरगोश को ही निमत्रण लेकर जाना पडा।

खरगोश लोमडी के घर की ओर दौड पडा और वहा पहुचकर उसने खिडकी पर तीन बार दस्तक दी – "खट-खट-खट!"

लोमडी झट से उछलकर बाहर आई, देखती क्या है कि खरगोश अपने पिछले पजो पर खडा है।

"क्या चाहिए?" लोमडी ने पूछा।

"भेडिये, भालू, जगली सूअर और खुद अपनी ओर से मै यह निमत्रण लेकर आया हू कि आप दोनो, यानी कि आप, श्रीमती लोमडी और मिस्टर बिल्ला आज हमारे यहा दावत पर आए।'

खरगोश यह कहकर तुरन्त भाग गया। घर लौटा तो भालू ने उससे पूछा

"चम्मच लाने के लिए कहना तो नही भूला?"

"अरे, यह तो मै भूल ही गया!" खरगोश ने कहा। और फिर से लोमडी के घर जा पहुचा। उसने खिडकी पर दस्तक दी।

"हमारे यहा आते समय चम्मच लाना न भूलिएगा," खरगोश ने कहा।

'अच्छा, अच्छा, भूलेगे नही!" लोमडी सज-धजकर तैयार हो गई और मिस्टर बिल्ले के हाथ मे हाथ डालकर दावत खाने चल दी। मिस्टर बिल्ले ने फिर से अपने बाल खडे कर लिए और फुफकारने लगा। उसकी आखे ऐसे चमक रही थी जैसे जलते हुए दो हरे-हरे बल्ब हो।

उसका यह रौब-दाब देखकर भेडिया डर के मारे झाडी के पीछे दुबक गया, जगली सूअर खाने की मेज के नीचे घुसकर बैठ गया, भालू किसी तरह पेड पर चढ गया और खरगोश अपनी माद मे जा छिपा।

बिल्ले को जब मेज पर परोसे हुए मास की महक लगी, तो झट से उधर झपटा और म्याऊ-म्याऊ करने लगा।

दूसरे जानवरो को लगा कि यह मेहमान "कम है, कम है, कम है!" की रट लगा रहा है।

"बडा पेटू मेहमान है! इतनी सारी चीजे उसे कम लग रही है!"

मिस्टर बिल्ले ने छककर खाया, जमकर पिया और वही मेज पर खर्राटे लेकर सोने लगा।

उधर मेज के नीचे दुबके जगली सूअर की दुम हिल रही थी। बिल्ले को लगा कि यह कोई चूहा है। वह उधर झपटा और जब देखा कि नीचे जगली सूअर बैठा है, तो डरकर पेड पर चढ गया, जहा भालू बैठा हुआ था।

भालू ने सोचा कि बिल्ला लडने आ रहा है, वह और ऊपर चढ गया। ऊपर की डाल टूट गई और भालू जमीन पर गिर पडा।

वह गिरा भी तो उसी झाडी पर, जिसके पीछे भेडिया छिपा बैठा था। भेडिये ने सोचा कि अब उसका अन्त आ गया और अपनी जान लेकर भागा। भालू और भेडिया इतनी तेजी से भागे कि फुर्तीला खरगोश भी क्या उनका पीछा करता।

बिल्ले ने फिर से मेज पर चढकर मास और शहद पर हाथ साफ करना शुरू कर दिया। इस तरह मिस्टर बिल्ले और लोमडी ने मिलकर सारा खाना चटकर डाला और घर चले गए।

भेडिया, भालू, जगली सूअर और खरगोश जब लौटकर वहा आए तो बोले

"कैसा जानवर है! इतना छोटा और ऐसा पेटू कि हम सबको ही खा डालता!"



बकरा और भेडा

पुराने जमाने की बात है। एक था बूढा, एक थी बुढिया। उन्होने अपने घर मे बकरा और भेडा पाल रखा था। बकरे और भेडे मे बडी पक्की दोस्ती थी। उन दोनो की खूब पटती थी जहा जाए बकरा, वही जाए भेडा। बकरा साग-वाडी मे पत्तागोभी खाने के लिए घुमा नही कि भेडा भी झट वही पहुच जाता, इसी तरह बकरा बगीचे मे पहुचता, तो भेडा भी उसके पीछे-पीछे बगीचे मे जा पहुचता।

"अरे, बुढिया, इन दोनो ने नाक मे दम कर रखा है," बूढे ने कहा। "बेहतर हो कि हम लोग बकरे और भेडे को घर से भगा कर छुट्टी पा ले। नही तो इनकी वजह से न साग-वाडी बचेगी और न बाग-बगीचा। चलो बे, निकलो यहा से, दफा हो जाओ!"

बकरे और भेडे ने अपने लिए सफरी झोला सिलकर तैयार किया, उसे गले मे लटकाया और चल दिए।

वे दोनो चलते जा रहे थे, चलते जा रहे थे कि अचानक उन्हे खेत के बीचो बीच भेडिये का एक कटा हुआ सिर दिखाई पडा। भेडा ताकतवर तो था, पर साहसी नही और बकरा साहसी तो था, पर ताकतवर नही।

"भेड़े भाई, सिर को उठा लो, तुम तो ताकतवर हो।

"नही, भाई, तुम्ही इसे उठा लो, तुम तो माहसी हो।"

उन दोनो ने मिलकर भेडिये का कटा हुआ मिर उठाया और झोले मे डाल दिया। फिर वे अपनी राह चलने लगे। चलते-चलते अचानक उन्हे आग जलती हुई दिखाई दी।

"चलो, हम लोग उस ओर चलते हे। वही ठहरकर रात विता लेगे, ताकि हमे भेडिये न खा जाए।"

वे दोनो आग के करीव आए। पर वहा तो माजरा ही कुछ और था। उन्होने देखा कि भेडिये दलिया पका रहे हे।

"नमस्ते, जवानो!"

"नमस्ते, नमस्ते! जव तक दलिया उवल रहा है, तब तक तुम्हारे मास का जायका ही ले ले।"

भेडा भयभीत हो गया। लेकिन वकरा भय के बावजूद हिम्मत से काम ले रहा था। उसने कहा

"भेडे भाई, झोले मे से जरा भेडिये का सिर तो निकालो!"

भेडे ने कटा हुआ सिर निकाला।

'अरे, यह नही वडावाला निकालो!" बकरे ने कहा।

भेडे ने फिर वही मिर बाहर निकाला।

"नही! यह किम काम का! सवमे बडावाला निकालो!"

अव तो भेडिये डर गए। मोचने लगे, वैमे जान बचाकर यहा मे खिसका जाए। जरा देखो तो—एक के वाद एक भेडियो के सिर निकाले जा रहे है!

आखिर एक भेडिये ने चुप्पी तोडी, वोला

"भाइयो, यहा वैठकर हम लोग मजे मे वाते कर रहे ह, पर जरा पानी कम पड गया है। मै पानी लेने जा रहा हू।"

थोडा हटकर मोचने लगा "भाड मे जाए यह दलिया!" और वह रफू-चक्कर हो गया।

दूसरा भेड़िया भी निकल भागने की तरकीब सोचने लगा

"यह लो, दुश्मन की औलाद न जाने कहा मर-खप गया। दलिया जला जा रहा है, मै चला, अभी इस छड़ी से हाककर उसे झट से लिए आता हू।

यह भी खिसक गया और पहलेवाले भेड़िये की तरह वापस नही लौटा। और तीसरे ने भी बैठे-बैठे युक्ति सोचते हुए कहा

"ठहरो, अभी मै उन्हे देखकर आता हू। दोनो को इधर लाता हू।"

वह भी जान बचाकर निकल भागा। वह खुश था कि जिन्दा बच गया। मौका देखकर बकरा अपने दोस्त भेड़े से बोला

"लो भाई, अब क्या देखते हो? सोचने का वक्त नही है—आओ, दलिया खा जाए और झटपट कही छुप जाए।"

लेकिन इतने मे पहलेवाले भेड़िये ने जरा ठडे दिमाग से सोचा

"हम लोग भी कितने अजीब हैं, जो बकरे और भेड़े से डर गए। भाइयो, हमे तुरन्त चलकर इन दुश्मन की औलादो को खा डालना चाहिए!"

वे सब वहा पहुचे तो दलिया सफाचट था, अलाव बुझाया जा चुका था, बकरा और भेड़ा ऊचे बलूत के पेड़ पर चढ बैठे थे। भेड़िये बलूत के नीचे बैठकर सोचने लगे कि बकरे और भेड़े को कैसे पकड़ा जाए। सिर उठाकर ऊपर देखा—दोनो बलूत पर बैठे हैं। बकरा हिम्मती था—वह सबसे ऊपरी डाल पर चढ गया था और भेड़ा डरपोक था—वह नीचे ही था।

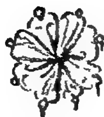
"सुनो," भेड़ियो ने सबसे लम्बे, घने बालोवाले एक अनुभवी भेड़िये से कहा, "तुम हमारे बीच मे एकमात्र बुजुर्ग हो, तुम्ही कोई रास्ता बताओ, जिससे कि उन्हे ऊपर पहुचकर पकड़ा जा सके।"

लम्बे, घने बालोवाला भेड़िया पेड़ के नीचे पसरके सोचने लगा। उधर भेड़ा पेड़ की डाल पर बैठा डर के मारे थर-थर कापता जा रहा था। वह अपने भय पर काबू न पा सका और सीधे उस भेड़िये के ऊपर धड़ाम से गिर पड़ा। बकरे ने आव देखा न ताव लगा चिल्लाने

"पकड ले इस झबरे भेडिये को! इधर ला मेरे पास, भागने न पाए!" और वह खुद भी बलूत वृक्ष से कलाबाजी खाता हुआ भेडियो पर कूद पडा।

भेडिये सिर पर पाव रखकर भाग खडे हुए।

बकरे ने अपने दोस्त भेडे के साथ मिलकर एक झोपडी बनाई और तब से वे दोनो उसमे मजे से जिदगी के दिन गुजार रहे ह, धन-दौलत कमा रहे ह।



धूर्त लोमडी

लोमडी ने किसी जगह से मुर्गी चुराई और सरपट भाग चली। दौडती रही, दौडती रही कि शाम का अन्धेरा छाने लगा, काली रात गहराने लगी। अचानक लोमडी ने एक झोपडी देखी। वह लपक ली उस तरफ। ओर झोपडी पर पहुचकर बडे अदव से सिर नीचे झुकाकर बोली

"नमस्ते, भले मानसो!"

"नमस्ते, लोमडी दीदी!"

"मेहरबानी करके रात यहीं बिता लेने दीजिए!"

"अरे, लोमडी बहन, हमारी झोपडी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहा से लाए?"

"फिक्र न करे! मे तरते के नीचे सिमटकर, दुम मोडकर सो जाऊगी। किसी तरह रात काट लूगी।"

झोपडी के मालिक ने कहा

"अच्छा, तो रात तुम यही बिता लो!"

"लेकिन अपनी यह मुर्गी कहा ले जाऊ?"

"उसे अलावघर के नीचे छोड दो।"

लोमडी ने वैसा ही किया। और रात मे जब सभी लोग सो गए तो लोमडी ने चुपके से उठकर मुर्गी को खा डाला। फिर उसके नुचे हुए पखो को एक कोने



मे छिपा दिया। अगले दिन भोर होते ही वह उठ वैठी, उसने अपना मुह चमकाकर धोया और मबमे नमस्ते करके बोली

"अरे, मेरी मुर्गी कहा गई?"

"वही अलावघर के नीचे देख लो।"

"मै देख चुकी हू, वहा नही है।"

लोमडी लगी बैठकर रोने

"हाय, मेरी मुर्गी कहा गई? मुर्गी ही मेरी दौलत थी, वही मेरा खजाना था, उसे भी चुरा लिया! मै तो लुट गई!"

इसके बाद वह मालिक से बोली

"मेरी मुर्गी यही खोई है। लाओ, मुर्गी नही, तो बत्तख दो!"

मजबूर होकर मालिक को मुर्गी के बदले मे बत्तख देनी पडी।

लोमडी ने बत्तख लेकर बोरे मे डाली और आगे चल दी।

लोमडी भागती रही, भागती रही कि फिर अन्धेरा हो गया, रास्ते मे ही रात हो गई। उसने एक झोपडी देखी, भीतर पहुचकर बोली

"नमस्ते, भले मानसो!"

"नमस्ते, लोमडी दीदी!"

"मेहरबानी करके रात यही बिता लेने दीजिए!"

"अरे, लोमडी बहन, हमारी झोपडी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहा से लाए?"

"फिक्र न करे। मै तख्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोडकर सो जाऊगी। किसी तरह रात काट लूगी।"

झोपडी के मालिक ने कहा

"अच्छा, तो रात तुम यही बिता लो!"

"लेकिन अपनी बत्तख कहा ले जाऊ?"

"उसे हसो के बाडे मे छोड दो।"

लोमडी ने वैसा ही किया। और रात मे, जब सभी लोग सो गए तो लोमडी ने चुपके से उठकर बत्तख को खा डाला फिर उसके नुचे हुए पखो को एक कोने मे छिपा दिया। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुह चमकाकर धोया और सबसे नमस्ते करके बोली

"मेरी बत्तख कहा गई?"

तब मालिक बोला

"शायद हसो के साथ उसे भी बाहर निकाल दिया है?"

"हसोवाले बाडे मे जाकर देखा, बत्तख वहा नही थी।"

लोमडी पहले की तरह लगी बैठकर रोने

हाय, मेरी बत्तख! वही मेरी दौलत थी, वही मेरा खजाना था। उसे भी चुरा लिया। हाय, मै लुट गई! मेरी बत्तख यही गुम हुई है! लाओ, बत्तख नही, तो हस दो!"

मजबूर होकर मालिक को बत्तख के बदले मे हस देना पडा। लोमडी ने हस को लेकर बोरे मे डाल लिया और आगे बढ ली।

वह चलती रही, चलती रही कि रास्ते मे शाम हो चली। उसने एक झोपडी देखी, वहा पहुचकर बोली

"नमस्ते, भले मानसो!"

"नमस्ते, लोमडी दीदी!"

'मेहरबानी करके रात यही बिता लेने दीजिए!"

"माफ करना, लोमडी बहन, हमारी झोपडी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहा से लाए?"

"फिक्र न करे! मै तख्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोडकर सो जाऊगी। किसी तरह रात काट लूगी।"

झोपडी के मालिक ने कहा

"अच्छा, तो रात तुम यही बिता लो!"

"लेकिन अपना हस कहा ले जाऊ?"

"उसे मेमनवाले बाडे मे छोड दो।"

लोमडी ने वैसा ही किया। रात मे जब सभी लोग सो गए तो लोमडी ने चुपके से उठकर हस को खा डाला और उसके नुचे हुए पखो को एक कोने मे छिपा दिया। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुह चमकाकर धोया, सबसे नमस्ते की और बोली

'लेकिन मेरा हस कहा गया? मेमनेवाले बाडे मे जाकर देखा—हस वहा नही मिला।

तब लोमडी ने मालिक से कहा

"मै जहा कही गई, मैने रात कही भी गुजारी, लेकिन ऐसा अनर्थ तो मेरे साथ कभी नही हुआ!"

"शायद मेमनो ने उसे कुचल दिया है," मालिक बोला।

लोमडी लगी अपना पुराना राग अलापने

"खैर, जो है, सो है! लाओ, हस नही, तो मेमना दो!"

मजबूर होकर मालिक को हस के बदले मे मेमना देना पडा। लोमडी ने मेमने को अपने बोरे मे छिपा लिया और फिर आगे चल दी। वह दौडती रही, दौडती रही, फिर रात हो गई। रास्ते मे उसने एक झोपडी देखी। वहा जाकर प्रार्थना करने लगी

"मेहरबानी करके रात यही गुजार लेने दीजिए!"

"माफ करना, लोमडी बहन। हमारी झोपडी वैसे ही बहुत छोटी है, तुम्हारे लिए जगह कहा से लाए?"

"फिक्र न करे! मै तख्ते के नीचे सिमटकर, दुम मोडकर सो जाऊगी। किसी तरह रात काट लूगी।"

झोपडी के मालिक ने कहा

"अच्छा, तो रात तुम यही बिता लो!"

"लेकिन अपना मेमना कहा ले जाऊ?"

"बाडे मे छोड दो।"

लोमडी ने वैसा ही किया। और रात मे जब सभी लोग सो गए तो लोमडी ने चुपके से उठकर मेमने को खा डाला। अगले दिन भोर होते ही वह उठ बैठी, उसने अपना मुह चमकाकर धोया, सबसे नमस्ते की और फिर अपना वही राग अलापने लगी

"अरे, मेरा मेमना कहा गया?"

लोमडी दहाडे मार-मारकर रोने लगी

"मै जहा कही गई, मैने रात कही भी गुजारी, लेकिन ऐसा अनर्थ तो मेरे साथ कभी नही हुआ!"

मालिक ने कहा

"शायद मेरी बहू ने ही उसे बैलो के साथ-साथ बाडे के बाहर हाक दिया हो?"

इस पर लोमडी बोली

"मुझे इससे क्या लेना-देना? लाओ, मेमना नही, तो अपनी बहू ही दो!"

फिर क्या? कोहराम मच गया। ससुर रोया, सास रोई और बच्चे बिलखने लगे। उधर लडके ने लोमडी के बोरे मे चुपके से एक कुत्ता डालकर बोरे का मुह रस्सी से बाध दिया और बोला

"ले, पकड!" लोमडी ने खुश होकर कुत्तेवाला बोरा सभाला और उसे उठा कर आगे चल दी। बोरा उठाए चलती रही और बीच-बीच मे यह गुनगुनाती रही

"मुर्गी के बदले मे बत्तख पाई, बत्तख के बदले मे पाया हस, हस के बदले मे मिला मेमना, मेमने के बदले में मिली बहू!"

बोरा जोर-जोर से हिचकोले खा रहा था, भीतर बैठा हुआ कुत्ता गुर्रा रहा था।

पर लोमडी ने समझा

"शायद बहू डर के मारे रो रही है! ठहरो, एक नजर तुम्हे देख तो लू! आखिर कैसी हो तुम?"

लोमडी ने बोरे का मुह पकडा और उसे खोलने लगी। जैसे ही उसने बोरे का मुह खोला, "भौ!" की आवाज के साथ उछलता हुआ कुत्ता निकल आया। लोमडी की तो जैसे जान ही निकल गई। वह सिर पर पैर रखकर भागी, कुत्ता था कि उसके पीछे-पीछे दौडता चला जा रहा था। लोमडी आगे-आगे जगल की तरफ दौड रही थी और कुत्ता जी-जान से उसे पकडने पर तुला था। उसे बस दबोचन ही वाला था कि लोमडी अपनी माद मे घुसकर बैठ गई। लोमडी माद में और कुत्ता माद के ऊपर। लोमडी की माद भी ऐसी थी कि कुत्ता अन्दर घुस न सकता था। लोमडी मजे से माद में बैठी पूछने लगी

"मेरे प्यारे-प्यारे कान, बताओ, किधर था तुम्हारा ध्यान, भागे जान बचाकर कैसे, कुत्ते ने दौडाया जैसे?"

उसके कानो ने जवाब दिया

"लोमडी दीदी, लोमडी दीदी, हमे था बस यही ध्यान, स्वर्णतुल्य है खाल तुम्हारी, कुत्ता उसे नोच लेगा।"

"प्यारे-प्यारे कान मेरे! मै इस उपकार के लिए तुम्हे सोने के कुण्डल उपहार मे दूगी।"

फिर लोमडी अपनी टागो स पूछती है

"मेरी प्यारी-प्यारी टागो, बताओ, किधर था तुम्हारा ध्यान, भागी जान बचाकर कैसे, कुत्ते ने दौडाया जैसे?"

उसकी टागो ने जवाब दिया

'लोमडी दीदी, लोमडी दीदी, हमे था बस यही ध्यान, स्वर्णतुल्य है खाल तुम्हारी, कुत्ता उसे नोच लेगा। इसीलिए हम भागी ऐसे, जान बचाकर जैसे-तैसे, तुमको हमे बचाना था, तुरन्त भागकर आना था।"

"प्यारी-प्यारी टागो तुम्हे धन्यवाद! म तुम्हारे लिए चादी की नालवाले सोने के जूते खरीद दूगी।"

इसके बाद लोमडी ने अपनी दुम से पूछा

' मेरी भारी-भरकम दुम, बताओ, किधर था तुम्हारा ध्यान, भागी जान बचाकर कैसे, कुत्ते ने दौडाया जैसे?"

लोमडी की दुम ने इस प्रकार जवाब दिया

"मैने यह सोचा था, बहना, साफ-साफ मुझको हे कहना, मैंने जो दुम फटकारी थी, टाग मे लगडी मारी थी। चाह रही थी मै कहना, तुम्हे सिखाए कुत्ता क्यो ना! चम-चम चमके खाल तुम्हारी, चाह रही थी वह नोचे!"

यह सुनकर लोमडी को बडा गुस्सा आया। फिर क्या था? लोमडी ने अपनी माद से दुम बाहर निकाल दी

"ठहर जा, अभी मजा चखाती हू तुझे! ले, कुत्ते, मेरी दुम को जी भरके नोच ले!"

कुत्ते ने लोमडी की दुम ऐसे धर दबोची कि सारी की सारी दुम ही उखाड डाली।

तब लोमडी खरगोशो के यहा जा पहुची। उन्होने देखा कि लोमडी बेदुम हो चुकी है, और उसका मजाक उडाने लगे, उस पर हसने लगे। लेकिन लोमडी बोली

"अरे, दुम भले नही हे, लेकिन झूमर नाच-तुम सबमे अच्छा नाच सकती हू!"

"वह कैसे ?"

"ऐसे! मुझे बस तुम सबकी दुम एक दूसरे के साथ बाधनी होगी–इसके बाद तुरन्त सीख जाओगे!"

"तो फिर बाध दो हमारी दुमे!"

लोमडी ने उनकी दुमे एक दूसरी के साथ बाध दी और खुद छलाग लगाकर एक टीले पर चढ गई और जोर-जोर से चिल्लाने लगी

"जान बचाओ! भागो, भेडिये आ रहे ह!"

सारे खरगोश अपनी-अपनी जान बचाकर ऐसे भागे, ऐसे भागे कि उन सबकी पूछे उखड गई। जब उन सबने एक दूसरे की दुमो को देखा, तो वे जड से उखडी हुई थी!

वे सब मिलकर लोमडी से बदला लेने की योजना बनाने लगे। लोमडी ने उनकी बाते चुपके से सुन ली। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया कि अब खैरियत नही है। फिर क्या था? लोमडी ने सोचा कि उस जगल से ही खिसक लिया जाए। लोमडी रफू-चक्कर हो गई। और खरगोश तब से आज तक बिना दुम के जी रहे ह।



सेर्को

एक आदमी के घर मे सेर्को नामक एक बहुत बूढा कुत्ता पला था। एक दिन उस आदमी ने बूढे कुत्ते को घर से निकाल दिया। निस्सहाय सेर्को मैदान मे भटकता फिरने लगा। वह सचमुच बेहद दुखी था! मन ही मन सोच रहा था "कितने वर्षो तक मैने मालिक की रखवाली की, उसकी दौलत की देखभाल की और जब बुढापा आया तो मै एक टुकडा रोटी पाने का हकदार न रहा। मुझे अपने घर से ही निकाल दिया।" तभी एक भेडिया दिखाई दिया। उसने पास आकर पूछा

"तुम यहा किसलिए भटक रहे हो?"

"मालिक ने निकाल दिया है, दर-दर की ठोकरे खा रहा हू," सेर्को ने उसे उत्तर दिया।

भेडिये ने कहा

"कोई ऐसी तरकीब सोचे, जिसमे कि मालिक तुम्हे फिर वापस बुला ले?"

सेर्को बहुत खुश हुआ

"भाई, तुम्हारा बडा उपकार होगा! मै इस उपकार का बदला अवश्य चुका दूगा।"



भेडिये ने तरकीब सोच निकाली और बोला

"अच्छा, तो सुनो। जब तुम्हारे मालिक लोग फसल कटाई के लिए जाएगे और मालकिन अपने बच्चे को झाडी के नीचे सुला देगी, तो तुम उस जगह पहुच जाना ताकि मुझे पता चल सके कि वह कहा पर है। मै बच्चे को उठाकर भागने लगूगा और तुम उसे मुझसे छुडाने लगना। तब मै डरने का बहाना करके बच्चे को छोड दूगा।"

तो लो, मालिक, मालकिन फसल कटाई के लिए खेत पर आ पहुचे। मालकिन ने बच्चे को झाडी के नीचे लिटा दिया और खुद निश्चिन्त होकर फसल काटने लगी। अचानक न जाने कहा से भेडिया वहा आ धमका। उसने बच्चे को धर दबोचा और खेत मे दौड चला।

सेर्को भेडिये का पीछा करने लगा। उसका मालिक भी बडे जोर से चिल्लाया

"पकड, सेर्को, पकड!"

सेर्को ने भेडिये को धर पकडा, बच्चे को छुडाकर उठा लाया और मालिक के सामने लिटा दिया। तब मालिक झोले मे से रोटी और चरबी का एक टुकडा निकालकर सेर्को से बोला

"ले, सेर्को, खा! यह तेरी बहादुरी की सौगात है। आज तूने मेरे बच्चे की जान बचाई है।"

शाम को खेत से लौटते समय मालिक सेर्को को भी अपने साथ घर लेता आया। मालिक ने पत्नी से कहा

"सुनो, आज बढिया से बढिया खाना पकाओ!"

थोडी देर मे खाना बन गया। मालिक ने सेर्को को कुर्सी पर बैठाया और खुद उसके बगल मे बैठ गया और मालकिन से बोला

"खाना परोस दो। चलो, खाना खाते है।"

मालकिन ने मेज पर खाना परोस दिया, मालिक ने रकाबी मे ढेर सारा गरमागरम गोश्त डाला और फूक मार-मारकर सेर्को को देने लगा, ताकि कही उसकी जबान न जल जाए।

सेर्को मन ही मन सोचने लगा

"जो भी हो, मुझे भेड़िये के उपकार का बदला चुकाना ही होगा।"

इसके लिए उसे अनुकूल अवसर भी मिल गया। जल्दी ही मालिक की बड़ी बेटी का विवाह था। सेर्को खेत की ओर गया, वहा पर भेड़िये को ढूढकर उससे बोला

"इतवार की शाम को हमारे बगीचे मे आ जाना। मै तुम्हे घर के अदर पहुचा दूगा। तुम्हारे उपकार का बदला उपकार से चुकाऊगा।"

इतवार आया तो भेड़िया उस जगह पहुच गया, जहा सेर्को ने उससे मिलने का वायदा किया था। उस दिन मालिक की बेटी के विवाह की दावत हो रही थी। सेर्को भेड़िये को घर के अदर ले गया और उसे मेज के नीचे छिपा दिया। फिर सेर्को ने मेज से वोद्का की एक बोतल उठाई, गोश्त का एक बडा टुकडा लिया और भेड़िये के सामने लाकर रख दिया। मेहमानो ने कुत्ते की पिटाई करनी चाही पर मालिक ने बीच मे ही उन्हे रोक दिया

"सेर्को को मत मारो! मैं उसका अहसानमन्द हू। जब तक वह जिदा है मैं उसके उपकार का बदला चुकाता रहूगा।"

सेर्को बढिया-बढिया चर्बीदार गोश्त के टुकडे ला-लाकर भेड़िये को देता रहा। भेड़िये ने खूब दावत उडाई। सेर्को ने भेड़िये को इतना खिलाया-पिलाया कि वह मस्ती मे झूम उठा। भेडिया बोला

"भाई, मै तो अब गाना गाऊगा!"

बेचारा सेर्को डर गया।

"भाई, यहा गाना मत गाओ। क्यो अपनी शामत बुलाना चाहते हो? बेहतर हो कि तुम थोडी वोद्का और ले लो। बस, जबान बन्द रखो!"

भेड़िये ने थोडी वोद्का और पी ली। उससे खामोश न रहा गया। वह बोला

"अब तो मै गाता हू!"

और जैसे ही भेड़िये ने मेज के नीचे से गला फाडकर गाना शुरू किया, सारे मेहमान अपनी जगह से उछल पडे। उन्होने इधर-उधर देखा और मेज के नीचे भेड़िये को बैठा पाया। कुछ लोग तो भयभीत होकर भागे और कुछ ने भेड़िये को पीटने के लिए डडे उठाए। लेकिन सेर्को भेड़िये के ऊपर पसर गया, जैसे कि उसका गला घोट रहा हो। मालिक ने कहा

' भेड़िये को मत मारो, नहीं तो सेर्को को मार डालोगे! वह खुद उससे निपट लेगा – उसे कोई मत छुए!"

सेर्को भेड़िये को खदेड़ता हुआ खेत में ले आया और बोला

' तुमने मेरा भला किया था, आज मैंने भी तुम्हारा भला कर दिया।"

और फिर वे विदा हो गए।



शेर कुए मे कैसे डूबा

यह किस्सा बहुत पुराना है। घने जगलो मे कही से एक शेर आ पहुचा। वह भारी-भरकम डील-डोलवाला, बडा खूखार शेर था। उसके दहाडते ही सभी वन्य जीव पत्तो की तरह थर-थर कापने लगते थे। जब शिकार का पीछा करता तो रास्ते मे जो भी आता उसे चीर डालता। जगली सूअरो के झुण्ड पर झपटता, तो सभी को मार डालता, जबकि अपने आहार के लिए सिर्फ एक ही रखता। जगल के सारे जीव शेर से आतकित थे। ऐसी विषम स्थिति मे उन्हे क्या करना चाहिए? सभी जानवर आपस मे विचार-विमर्श करने लगे।

भालू ने कहा

"सज्जनो, शेर एक-एक दिन मे दस-दस जानवरो को मार डालता है, कभी कभी तो बीस-बीस जानवर मारे जाते है। पर खाने के नाम पर वह एक या दो जानवर से अधिक नही खाता। जबकि शेष जीव बेकार ही मारे जाते है, क्योकि शेर को तो रोज ताजा शिकार चाहिए। वह बासी गोश्त नही खाता। इस तरह दिन-ब-दिन हालत खराब होती जा रही है। हमे चाहिए अपने दूत भेजकर उसे समझा-बुझा द "

इस पर भेडिया बोला

"जाओ, बात करके तो देखो! वह तो हमारी बात सुनेगा ही नही।"



"पर कोशिश तो कर देखे! शायद कोई बात बन ही जाए।" भालू ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा। "लेकिन भेजा किसे जाए?"

"भालू भाई, तुम्ही चले जाओ," भेडिये ने कहा। "तुम सबमे बडे और ताकतवर हो।"

"यह मेरे बस की बात नही। अगर वह मुझ पर टूट ही पडा, तो मैं उसे कतई पछाड नही सकता। ऐसे मे मेरी ताकत के क्या मायने? भेडिया भाई, बेहतर तो यह होता कि तुम ही उसके पास चले जाते! तुम मुझसे ज्यादा चुस्त और फुर्तीले हो!"

"फुर्तीला हू तो क्या? तुम्ही सोचो, अगर वह मेरी जान के पीछे पड गया, तो क्या मै जान बचाकर भाग पाऊगा? अरे भाई, सोच-समझकर कोई दूसरा रास्ता निकालो, हमारी ताकत और फुर्ती काम न देगी।"

यह सुनते ही हिरन ने कहा

"सज्जनो, आप जानते हे कि यह मसला कितना गम्भीर है। हमे सोच समझकर उचित तरकीब खोज निकालनी होगी—बात कैसे चलाई जाए, ताकि वह नाराज न हो।"

"तो भाई हिरन, तुम्ही उसके पास चले जाओ। तुम बुद्धिमान भी हो और सोच-समझकर बात भी कर सकते हो।"

"मैं खुद इसका जिम्मा नही लेता। मैंने तो सिर्फ राय दी थी कि शेर से बात करना कोई मामूली काम नही हे। उससे बात करने का इल्म आना चाहिए!"

"तो फिर किसे भेजे शेर के पास?"

"चलो, लोमडी को भेज दे। वह बडी चालाक है। शेर से चिकनी-चुपडी बात करके हमारी समस्या का हल खोज निकालेगी। शेर को सारी बात समझा सकेगी।"

"ख्याल अच्छा है!" सारे वन्य जीव खुशी से उछल पडे। "लोमडी के लिए यह कोई मुश्किल काम नही!"

लोमडी को बुलाकर भालू ने कहा

"लोमडी बहन, तुम्हे शेर के पास जाकर सारी बात समझानी होगी।"

"आखिर मुझसे कौन-सा अपराध हो गया है? कोई दूसरा क्यो नही चला

जाता ? अगर कोई भी वहा जाने के लिए राजी नही, तो फिर पासा फेककर अपनी किस्मत आजमा लेते हे। जिसके नाम पासा गिरेगा, वही शेर से मिलने जाएगा।"

"नही, लोमडी बहन! इस तरह फैसला करना उचित न होगा मान लो, किसी ऐरे गैरे नत्थू खैरे का नाम आ ही गया तब क्या होगा? वह शेर से प्रार्थना करने, उसे समझाने के बजाय ऊट-पटाग बोलकर सारा काम ही बिगाड देगा। और वह खूखार शेर नाराज होकर हम सबकी खाल खीच लेगा। नही, बस फैसला हो गया है–तुम्हे ही जाना होगा।"

लोमडी उदास हो गई। असमजस मे थी कि वह क्या करे शेर के पास न जाए तो आफत, और जाए, तो जाने क्या बीते? लोमडी उधेडबुन मे पडी सोचती रही, सोचती रही, थोडी देर बाद बोली

"ठीक है, मैं वहा जाऊगी। जाकर किस्मत आजमाती हू। लगता है, मेरी किस्मत मे यही लिखा हे "

लोमडी बडी देर तक जगल में इधर-उधर घूमती रही–शेर के पास जाने मे डर रही थी। वह कभी जगल के एक छोर तक जाती, तो कभी दूसरे तक और इस तरह बार-बार सोचती जा रही थी कैसे शेर को चकमा दिया जाए? वह मृत्युभय से थर-थर काप रही थी। इस बीच अचानक उसे एक कुआ दिखलाई दिया। लोमडी ने आव देखा न ताव, आत्महत्या का निर्णय कर डाला "रक्तपिपासु शेर के जबडे मे दम तोडने मे बेहतर है कुए मे डूबकर मर जाना।"

लोमडी कुए पर गई, उसने कुए का चक्कर लगाया, कुछ सूघा, फिर कुए मे झाककर देखा–वहा तो अथाह पानी भरा था। उसने जरा ध्यान से देखा, पानी के अन्दर से भी एक लोमडी उसे घूर-घूरकर देख रही थी। वह तुरन्त अनुमान न लगा सकी कि कुएवाली लोमडी तो उसकी परछाई मात्र थी। पानी मे से तो उसका ही प्रतिबिम्ब झलक रहा था। लोमडी ने अपनी थूथनी हिलाकर इशारा किया, तो नीचे की लोमडी ने भी वैसा ही जवाब दिया। ऊपर मे लोमडी ने अपनी जबान बाहर निकालकर उसे चिढाया, तो उसने भी चट से जबान बाहर निकालकर उसे चिढा दिया। "अब समझी! यह तो मेरी ही परछाई है! मै शेर को धोखा देने की कोशिश करूगी, अगर वह इस रहस्य को नही जानता है तो उसे कुए तक ले आऊगी। फिर बस, काम बन जाएगा!"

झट मे लोमडी शेर से मिलने चल दी। वह मन्द-मन्द मुस्कान बिखेरती जल्दी जल्दी चली जा रही थी। शाम घिर आई। लोमडी वनराज के शिविर के नजदीक बढती चली आ रही थी और शेर अपनी डरावनी आवाज मे दहाड रहा था।

लोमडी ने वडे अदव मे वनराज को सिर झुकाकर प्रणाम किया और बोली

"महाराज, मुझे प्राणदान दे। हुक्म करे, महाराज, कि मैं, गरीब, आपके चरणो मे अपनी प्रार्थना प्रस्तुत करू। मै, तुच्छ लोमडी, आपकी शरण मे आई हू। यहा आने की वजह मै अभी विस्तार से वताती हू। हमारे जगल के सभी जीवो ने मिलकर हम तीन जनो को—दो खरगोशो को और मुझे—भोर से ही आपको जन्म-दिन की बधाई देने के लिए भेजा था। हम लोग आपके दरबार मे हाजिर होने के लिए जल्दी-जल्दी चले आ रहे थे। लेकिन इस बीच रास्ते मे हम लोगो को एक जानवर मिल गया। उसकी शक्ल-सूरत हूबहू आपसे मिलती थी। वह पूछने लगा 'तुम लोग कहा जा रहे हो?' और मैने उत्तर दिया 'वनराज शेर के पास! जानवरो ने हमे भेजा है, ताकि हम वहा जाकर उन्हे बधाई दे सके।' और वह जानवर हम लोगो पर बुरी तरह गरजा 'खबरदार, यहा पर कोई दूसरा शेर कैसे रह सकता है? शेर मैं हू, सारे जगल मे मेरा राज है। तुम सबको मेरी आज्ञा का पालन करना होगा। मै तुम्हे कतई नही छोड़ूगा—तुम हमारी प्रजा हो!' महाराज, मैने उसे हर तरह से मनाया, रोयी, गिडगिडाई। पर वह तो अपनी बात पर अडा रहा। माना ही नही। मैंने कहा 'यह कैसे हो सकता है? वनराज हमारा इन्तजार कर रहे होगे, वही हमारा राजा है। वह हम पर नाराज होगे और इसका वदला सभी वन्य जीवो से लेगे।' मगर वह अपनी जिद पर अडा रहा और बोला 'बहुत देखे है ऐसे राजा-महाराजा! मुझे उससे क्या लेना-देना? अगर चाहू, तो उसे एक झपट्टे मे खा जाऊ!' बडी देर तक उसकी मिन्नते करती रही, बडी मुश्किल से इस बात के लिए उसे राजी किया कि अकेली मुझे ही आपके पास जाने दे।"

गुस्से से आग-बबूला शेर ने गरजते हुए पूछा

"वह गुस्ताख कहा रहता है?"

"वहा, पत्थर के किले मे।"

फिर क्या था? शेर उछला और ऐसे दहाडा, ऐसे दहाडा कि जगल मे उसकी गूज दूर-दूर तक फैल गयी और लगा कि कही कोई दूसरा शेर दहाड रहा है।

लोमडी उसे उकसाते हुए बोली

"महाराज, अब तो खुद ही सुन लिया आपने कैसे वह दहाड रहा है।"

शेर का खून और अधिक खौला

"मैं उस बदमाश के टुकडे-टुकडे कर डालूगा! तो यह हिमाकत, वह मुझे ललकारने का साहस कर सकता है! यह मेरा जगल है। जल्दी से चलकर मुझे उसका घर दिखाओ।"

लोमडी उसे कुए की ओर ले चली। वे कुए के पास पहुच गए तो शेर ने पूछा

"कहा है वह, दिखाओ!"

लोमडी बोली

"जी, वह यही, इस पत्थर के किले मे रहता है। मुझे उधर करीब जाते हुए भी डर लगता है, कही मुझे खा न जाए। आप देख लीजिए।"

शेर कुए की जगत पर खडा होकर अन्दर झाकने लगा। उसने देखा कि एक दूसरा शेर उसकी तरफ देख रहा है। उसने गुस्से से मुह खोलकर दात दिखाए, तो उस शेर ने भी वैसे ही गुस्साते हुए झट से अपना मुह खोलकर दिखा दिया। तब शेर जोर से दहाडता हुआ कुए मे कूद गया और पानी मे डुबकिया लगाने लगा। कुए की दीवारे पत्थर की थी, पजे उन पर टिकते न थे और बच निकलने का कोई रास्ता न था। शेर कुए मे इधर-उधर हाथ-पैर मारता रहा, छटपटाता रहा और अन्त मे उसका दम टूट गया। लोमडी शेर के डूबने तक वही बैठी रही और जैसे ही शेर कुए मे डूबा लोमडी वन्य जीवो के पास सरपट दौड चली।

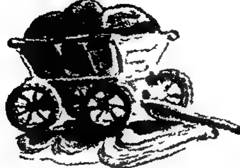
लोमडी खुश नजर आ रही थी, जानवरो ने अनुमान लगाया कि कोई खुश खबरी लेकर आ रही है। जैसे ही लोमडी उन तक पहुची, सारे वन्य जीव उससे पूछने लगे

"तुम शेर से मिलकर आ रही हो या हमे कोई चकमा दे रही हो?"

"शेर से मिलने गई थी। अब उस शेर को अपनी स्मृति में बसा लेना एक था शेर जो डूब गया और मैंने उसे धोखा दिया।"

"कैसे तूने शेर को धोखा दिया?"

उसने विस्तार से पूरा किस्सा सुना डाला। वन्य जीव मारे खुशी के उछलने लगे, नाचने और थिरकने लगे। इतने खुश थे कि उनकी खुशी का शब्दों में वर्णन कर पाना कठिन है।



हस, केकडा और मछली

नदी के किनारे एक हस तैर रहा था। वह गर्दन भुकाए पानी मे देख रहा था। एक मछली तैरती हुई उधर निकल आई। मछली रुककर हस से पूछने लगी

"हस भाई, मेहरबानी करके जरा यह तो बताओ कि जाडे मे जब नदी बर्फ मे ढक जाएगी, तब तुम उडकर कहा चले जाओगे?"

"तुम्हे इससे क्या?"

"इस बार जाडे मे मै भी कही और जाकर रहना चाहती हू। यहा तो बर्फ के नीचे ताजी हवा के बिना दम घुटने लगता है।"

"जाडे भर मै गरम देशो मे जाकर रहता हू।"

"मुझे भी अपने साथ ले चलना।"

"ठीक है, चली चलना। हसी-खुशी समय कट जाएगा। मौज ही मौज रहेगी।"

हस और मछली की यह बातचीत केकडा सुन रहा था। वह बोला

"भाई, मुझे भी अपने साथ ले चलना।"

"ठीक है। तुम भी हमारे साथ चलना। हसी-खुशी समय कट जाएगा। मौज ही मौज रहेगी। पतझड आने तक इन्तजार करो, जब उडने का समय आएगा मैं तुम्हे बतला दूगा।"



हस ने यही सोचा होगा यदि वे पानी मे तैर सकते है, तो उडना भी जानते ही होगे।

गर्मी का मौसम बीता, पतझड का मौसम आ पहुचा। तब हस ने याद दिलाते हुए कहा

"देखो, अब गर्म देशो को उड जाने का वक्त आ गया है। यात्रा की तैयारिया कर लो, कल दोपहर हम यहा से उड चलेगे।"

मछली ने केकडे को भी सूचना दे दी। केकडा सोच-विचार मे पड गया। थोडी देर तक सोचने के बाद बोला

"लेकिन, बहन, सफर मे हमारा गुजारा कैसे होगा? भोजन के बिना काम कैसे चलेगा? रास्ते का खाना तो बाध ही ले, ताकि सफर मे भूखा न रहना पडे।"

"लेकिन सारा सामान किस पर लादकर ले चलोगे?" मछली ने केकडे से पूछा।

"एक गाडी मे सब लाद लेगे और उसे जोतकर ले चलेगे। हस के साथ मिलकर हम तीनो गाडी खीच लेगे। बस, काम आसान हो जाएगा।"

केकडे और मछली ने, एक गाडी का इन्तजाम किया, घास को बटकर गाडी खीचने के लिए रस्सिया बनाई और हस का इतजार करने लगे। दूसरे दिन दोपहर मे हस उडता हुआ आया और बोला

"हा तो, भाइयो, तयार हो न? मै तो उड रहा हू।"

"हम एकदम तैयार है। बस, मेहरबानी करके यह सामान खीचने मे मदद कर दो। हम तीनो इस गाडी मे जुत जाते हे और यात्रा के लिए चल पडते ह।"

"ठीक ह, मेरे पैर मे रस्सी बाध दो।"

केकडे ने हस के पैर मे रस्सी बाध दी, आर अपनी रस्सी अपने चगुल मे दबोच ली। तीसरी रस्सी का छोर मछली ने अपने दातो मे दबा लिया।

"अच्छा, भाइयो, अब इसे तीनो साथ मिलकर खीचते है!"

केकड ने पीछे की तरफ जोर लगाया और मछली तीर की तरह पानी मे पहुच गई। हस अपने पख फडफडाता हुआ आसमान मे उड गया। सारी रस्सिया टूट गई। और गाडी पर लदा सारा माल-असबाब ...

का त्यो पडा रहा – टस से मस न हुआ। उम तीनो मे कौन दोषी था, कौन निर्दोप – यह कोई न जान सका। और न तो इस वात का कोई फैसला ही करने वैठा कि असलियत क्या थी? सिर्फ मेढकियो को इतनी हसी आई, इतनी हसी आई कि उनका हसते-हसते दम फूलने लगा। वे यह सारा करिश्मा देखकर लोट-पोट हो गई। उनको सबसे ज्यादा हेरानी इस वात की थी कि मछली और केकडा अपनी ओकात भूलकर ऐसी बेवकूफी मे क्यो पडे?



शेर राजा कैसे बना

एक बार जानवरो ने मिलकर एक सभा की – राजा किसे बनाया जाए, ताकि इस राजा से सभी डरे ही नही, बल्कि उसे न्यायी जानकर उसकी आज्ञाओ का पालन भी करे। लेकिन राजा का चुनाव न किया जा सका, क्योकि जानवरो की इस सभा मे सभी जानवर एकत्रित न हो पाए थे। आखिर बडे और शक्तिशाली जानवरो को शामिल किए बिना राजा का चुनाव कैसा ? तब यह निर्णय किया गया कि छोटे-बडे सारे जानवरो को फिर से एकत्रित करके एक और बडी सभा की जाए जिसमे राजा का उचित चुनाव किया जा सके।

जानवरो की इस विशाल सभा मे सभी जानवर आकर एकत्रित हुए जिनमे हाथी, शेर, बाघ, दरियाई घोडा, गेण्डा, भालू, भेडिया, हिरन, ऊट, लोमड, खरगोश, जगली सूअर, जेबरा, बकरी, भेड, घोडा, गाय, कुत्ता, बिल्ली, गधमार्जार, धानीमूष, चूहा, चुहिया समेत दुनिया के सभी जीव वहा पर मौजूद थे, शायद गदहा भी था।

जब सभी जीव एकत्रित हो गए तो हिरन ने आगे बढकर कहा

"शक्तिवान महानुभावो, गुस्ताखी माफ हो, हम निकम्मे, नाचीज़ जानवरो ने मिलकर आपको यहा आमन्त्रित करने का गुनाह किया है।



हम लोग आप महानुभावो मे स किसी एक को अपना राजा बनाना चाहते है।"

हाथी बोला

"भाइयो, मे इस उचित निर्णय का स्वागत करता हू। सच तो यह है कि न्याय और व्यवस्था कायम करने का यह फैसला काफी पहले ही हो जाना चाहिए था। ऐसे राजा का चुनाव आवश्यक है, जो जगल मे न्याय व्यवस्था कायम कर सके, घूसखोरी और अराजकता के विरुद्ध कदम उठा सके, अपराधी को न्यायसगत दण्ड दे सके। यह आपके ऊपर निर्भर है कि आप लोग अपना राजा किसे बनाते है, इस मुद्दे पर अच्छी तरह सोच-समझकर फैसला कीजिए। वैसे मै खुद भी राजा बन सकता हू। डील-डौल मे बडा और शक्तिशाली भी हू। लेकिन मुझे इसमे विशेष रुचि नही है। मै राजा बनू या न बनू मेरे लिए सब बराबर है।"

शेर से न रहा गया। वह जानवरो को धकियाता हुआ आगे आकर बोला

"नही, सज्जनो! हाथी की बात मे मत आइए। हाथी इस योग्य नही कि उसे सारे जानवरो का राजा बनाया जाए। खुद ही देख लीजिए, कैसा डील-डोल है उसका? भारी और सुस्त जानवर है। तेज दौड नही सकता। राजा तो मै ही बन सकता हू। सभी मेरा कहना मानेगे, मेरी आज्ञा का पालन करेगे। मै फुर्तीला, सुन्दर और शक्तिशाली हू।"

यह सुनते ही एक लोमड झटपट आगे आया और एक ठूठ पर चढकर बोलने लगा

"हम लोग यह समझते है कि आप दोनो महानुभाव हमारे राजा के पद के योग्य है। लेकिन इस शुभ कार्य मे मतभेद, झगडे और खून-खराबे की गुजाइश न रहे इसलिए बेहतर है कि हम गुप्त मतदान करके यह तय कर ले कि आप दोनो मे से राजा कौन बनेगा। अभी हम आपसे थोडी दूर चले जाते है, वहा सलाह-मशविरा कर लेगे।"

लोमड की बात सभी को पसन्द आई। सभी जानवर उसकी जय-जयकार करने लगे।

सभा स्थल मे जरा हटकर जानवरो मे गरमागरम बहस शुरू हो गई। सबसे कमजोर और असहाय जानवरो ने चिल्लाना शुरू किया

"हाथी को ही राजा बनाया जाए! वह सबसे बुद्धिमान जानवर है। वह छोटे-बडे सभी के साथ उचित न्याय भी कर सकेगा।"

लेकिन शक्तिशाली और फुर्तीले जानवरो ने शेर का पक्ष लिया। और वे जोर-जोर से दहाडने-चिल्लाने लगे

"शेर को ही राजा बनाया जाए! वह न केवल हाथी से फुर्तीला है, बल्कि सुन्दर भी है। वही हम सबका राजा बन सकता है।"

कई जानवरो ने पासा फेककर फैसला करने की सलाह दी।

लोमड मन ही मन भयभीत था कि शेर नाराज हो जाएगा, उसने लोमड से अपने पक्ष मे बोलने के लिए कह रखा था। धमकाया भी था कि यदि लोमड उसे राजा न बना सका तो शेर लोमड को फाडकर टुकडे-टुकडे कर देगा। इसीलिए लोमड शेर को राजा बनाने के लिए एडी-चोटी का जोर लगा रहा था। आखिर उसे अपनी जान भी तो प्यारी थी।

बस, लोमड ने आव देखा न ताव शेर की वकालत करने के लिए मैदान मे कूद पडा। पहले की तरह झपटकर आगे आया और एक ऊचे से ठूठ पर चढकर बोलने लगा

"सज्जनो, कृपया ध्यान दे! बहुत-से जानवर यह चाहते है कि राजा हाथी को बनाया जाए। यह सच है कि हाथी एक बुद्धिमान, शक्तिशाली जानवर है, वह रक्तपिपासु नही है और दूसरो को भी किसी का खून बहाने नही देगा। लेकिन अब आप खुद ही सोचिए कि एक सुस्त, तोन्दियल जानवर हमारा राजा कैसे बन सकता है? उसके राजा बनते ही हमारे सारे दुश्मन गुलछर्रे उडाएगे। अब से कही ज्यादा आवारागर्दी और लूटपाट करेगे। राजा का उन्हे कोई डर ही न रहेगा। वे तो अच्छी तरह से जानते है कि हाथी उनका कुछ न बिगाड पाएगा – वह जब तक उनका पीछा करेगा, वे रफू-चक्कर हो जाएगे। मेरा ख्याल है कि सबकी भलाई के लिए शेर को ही राजा बनाना उचित होगा। वह फुर्तीला, बुद्धिमान और बलशाली है। जाहिर है कि शेर अपराधियो को दण्डित करने मे भी पीछे नही रहेगा और सभी उससे डरते रहेगे। अपराधी तो शायद ही उसके पजे से बचकर

निकल पाए। शेर तो जिसे चाहे पकड सकता है।"

"यह सब तो ठीक हे," हिरन ने अपनी राय दी। "लेकिन यह तो बताओ कि न्याय कहा है? जिसे चाहे उसे ही हमे अपना राजा बनाना चाहिए। अच्छा यही होगा कि पासा फेककर फैसला कर लिया जाए, ताकि किसी को कोई एतराज न हो।"

"यही ठीक रहेगा!" सभी एकसाथ चिल्लाए।

"लेकिन पासा फेकेगे कैसे?"

"देखो," हिरन ने समझाते हुए कहा। "जो लोग शेर के पक्ष मे मतदान करना चाहे, वे इस कोटर मे एक अखरोट डालकर अपना मत देगे और इसी तरह हाथी के पक्ष मे मतदान करनेवाले बलूत का बीज डालकर अपना मत प्रगट करेगे।"

"यह तो तुमने अच्छी सोची!" सब चिल्लाए। "चलो ऐसे ही करते है।"

जानवरो ने अखरोटो और बलूत के बीजो की एक ढेरी लगा दी। लोमड पिछली टागो पर खडा होकर बोला

"तो चलिए, मतदान शुरू करे।"

सब बारी-बारी से ढेरी के पास आने लगे और अपनी पसद से अखरोट या बलूत का बीज लेकर कोटर मे डालने लगे। रक्तपिपासु, हिसक जानवर अखरोट ले रहे थे, और घास-पात खानेवाले जानवर बलूत के बीज। लोमड ने देखा कि शेर के पक्ष मे फीका मतदान चल रहा है और हाथी का पलडा भारी पड रहा है। उसने चालाकी बरतने की सोची। वह जानवरो के पास जा-जाकर, आख मारने लगा, जैसे यह कह रहा हो

"*श्रीमान जी, अखरोट लीजिए!*"

लेकिन नन्हे, कमजोर जानवरो के कान मे फुसफुसाकर कहता "बलूत के बीज नही, अखरोट उठाओ, नही तो शेर नाराज हो जाएगा और तुम्हे मेढक की तरह दबोच लेगा। और मै भी बाद मे तुम सबसे निपट लूगा, तुम्हारा जीना दूभर हो जाएगा।" नन्हे जानवर भयभीत होकर अखरोट उठा लेते। जब खुद धूर्त लोमड की बारी आई तो उसने एक अखरोट डालने के बजाय कोटर मे

चुपके से मुट्ठी भर अखरोट झोंक दिए।

मतदान के बाद जब अखरोट और बलूत के बीज गिने गए तो उनकी संख्या बराबर थी।

यह देखकर भालू ने कहा

"भाइयो, अब हम क्या करें? इसमें तो कोई चाल है। फिर से मतदान होना चाहिए। लेकिन इस बार यह ध्यान रखना होगा कि कोई एक से अधिक मत न डाले और न कोई किसी को अपने पक्ष में धमकाए या फुसलाए।"

लोमड उचककर आगे आया और बोला

"सज्जनो, अब फिर से चुनाव नहीं किया जा सकता। फिलहाल हम लोग यह घोषित कर दें कि शेर और हाथी के पक्ष में बराबर-बराबर मत डाले गए हैं। और उन दोनों में से हमारा राजा कौन बनेगा यह फैसला बाद में किया जाएगा।"

और वे चल दिए शेर और हाथी को अपना फैसला सुनाने।

लोमड ने फिर से आगे आकर बोलना शुरू किया

"माननीय महानुभावो, हमारे समाज द्वारा मिस्टर शेर और मिस्टर हाथी में से किसी एक को राजा बनाने के लिए मतदान किया गया था। हम सबने बलूत के बीज और अखरोट कोटर में डाले थे—यह फैसला करने के लिए कि राजा कौन बने? मतगणना के बाद यह पता चला कि आप दोनों के पक्ष में बराबर-बराबर मत डाले गए हैं। अब आगे क्या किया जाए, इस मसले पर हमें सोचना होगा। मेरे ख्याल में फैसला इस तरह हो सकता है मिस्टर शेर और मिस्टर हाथी की दौड हो जाए। जो दौडकर आगे निकल जाए वह राजा, पिछड जाए सो प्रजा। चाहें तो आप लोग अभी दौड सकते हैं।"

हाथी ने कहा

"मैं अपने स्वभाव से तेज दौडनेवाला प्राणी नहीं—प्रकृति ने मुझे ऐसा ही बनाया है। लेकिन मेरे ख्याल से राजा का काम है राज करना, तेज दौडना-भागना तो नहीं। उसके लिए आवश्यक है कि राज्य में न्याय व्यवस्था कायम रहे, छोटे-बडे सबके लिए समान, निरपेक्ष न्याय हो। और रही पकड-धकड, भाग-दौड की बात, वह काम मेरी आज्ञा से दूसरे भी कर सकते हैं।"

"अच्छा, तो ठीक है। एक दूसरा रास्ता यह भी हो सकता है आप लोगो मे से जो सबसे ऊपर छलाग लगा जाए — वह राजा, नही तो प्रजा।"

हाथी ने जोरदार विरोध किया

"नही, मै छलाग नही लगा सकता। वैसे ही मैं भारी डील-डौलवाला जानवर हू।"

"तब तो शेर को ही राजा बना दिया जाए!" शेर के समर्थक जोर-जोर से चिल्लाने और दहाडने लगे।

हाथी ने जरा सयत स्वर मे कहा

"भाइयो, मै राजा बनाया जाऊ या नही — इसमे मेरी सेहत पर असर नही पडता। लेकिन ऐसा मनमाना चुनाव तो सरासर अन्याय है। जबकि सच तो यह है कि शेर जो कुछ कर सकता है, वह मेरे लिए मुमकिन नही और जो मै कर सकता हू, वह शेर के लिए सभव नही। अगर ऐसी ही बात है तो शेर मुझसे कुश्ती लड ले। अगर वह मुझे पछाड दे तो उसे ही राजा बना दिया जाए।"

लोमड उदास हो गया लेकिन झटपट उसने एक और चाल सोच निकाली

"खैर, आपकी ही बात मान ली जाती है। निर्णय कुश्ती से ही होगा! लेकिन अब तो बहुत देर हो चुकी है। सभी थके-मादे, भूखे-प्यासे है। बेहतर हो कि कुश्ती का प्रोग्राम सुबह नाश्ते के बाद रखा जाए। लेकिन सज्जनो, ध्यान रहे कि आप लोग यह मल्ल-युद्ध देखने के लिए सुबह तडके ही न पहुच जाए। जाहिर है कि मिस्टर शेर और मिस्टर_हाथी सबके सामने कुश्ती लडना पसन्द न करेगे। उचित यही है कि हम लोग जरा देर से आए और यह जान ले कि मल्ल-युद्ध का विजेता कौन रहा? किसने किसे पछाडा?"

सभी ने लोमड की बात मान ली। इधर रात होते ही हाथी को नीद सताने लगी। वह जगल मे सोने चला गया और एक बलूत वृक्ष का, जिसका तना बहुत मोटा नही था, सहारा लेकर सो गया। हाथी हमेशा खडे-खडे ही सोते है। अगर भारी-भरकम डील-डौलवाला हाथी पसरकर लेट जाए, तो बिना मदद के उठ ही न पाए। थोडी दूर खडा लोमड हाथी पर नजर टिकाए था। जब उसने देखा कि

हाथी गहरी नीद मो गया है, तो वह शेर के पास भागता हुआ आया और बोला

"हुजूर, बस, जल्दी से चलिए। हाथी सो गया है। झटपट उसका पत्ता साफ कर दिया जाए।"

"क्या करे हम?" शेर ने पूछा। "हाथी को पछाडने की ताकत मुझमें कहा? उसकी नीद खुल जाएगी और मै उसे हरा न पाऊगा।"

"हुजूर, उसे मारने या पछाडने की जरूरत नही। मै तो आपसे दूसरी ही बात कह रहा था। हाथी अपनी आदत के अनुसार पेड का सहारा लेकर सोता है। हम लोग पेड को दात से काटकर गिरा देगे। पेड के साथ-साथ हाथी भी धराशायी हो जाएगा। और तब हम घोषणा कर देगे 'हुजूर ने हाथी को कुश्ती मे पछाड दिया'।"

"अक्ल की बात सोची है तूने। लेकिन मै अकेला सुबह होने तक पेड को न काट पाऊगा। दातो का बुरा हाल हो जाएगा। तुम जाकर मदद के लिए किसी को बुला लाओ।"

लोमड दौडकर एक दर्जन भेडियो को बुला लाया। वे सब मिलकर बलूत का पेड काटने लगे। वे भोर होने तक पेड काटते रहे, तने पर दन्ताघात करते रहे, बस, थोडी-सी कसर बाकी रह गई थी। बलूत का पेड जरा-सा झुक चुका था, लेकिन अभी गिरा न था। अब क्या किया जाए? सुबह का उजाला फैलता जा रहा था और हाथी की नीद भी टूट सकती थी। पेड गिरने का नाम न ले रहा था। लोमड ने काम बिगडता देखकर अक्ल दोडाई। उसने तीन भालुओ को बुलाकर कहा

"हमारे भावी महाराजा महामहिम गजराज ने इस बलूत के पेड पर मधु मक्खियो का छत्ता देखा है। रात मे सोने से पहले गजराज ने आप लोगो से शहद का इन्तजाम करने के लिए कहा था। गजराज की नीद खुलने से पहले उनकी आज्ञा का पालन किया जाए, अन्यथा आप दण्ड के भागी हो सकते है।"

तीनो भालू खुशी-खुशी बलूत के पेड पर चढ गए। इसी वक्त लोमड ने ऊपर देखते हुए धीरे से कहा

उस ओर चढ जाइए! हा, हा, ठीक वही पर," लोमड ने चिडिया के

घोमले की तरफ इशारा किया, जो पेड के झुके हुए हिस्से मे झलक रहा था। तीनो भालू बलूत के शिखर तक चढते गए, पेड का तना वजन पडने से एक जोरदार आवाज के साथ ढह गया। और हाथी पीठ के बल धडाम मे गिर पडा। इस तरह वह चारो खाने चित्त हो गया। तमाम कोशिशो के बाद भी खुद न उठ पाया। उधर पेड मे गिरते ही तीनो भालुओ का तत्काल दम निकल गया।

नाश्ते के बाद एक-एक कर सारे जानवर इकट्ठा होने लगे। अजीब दृश्य था। हाथी नीचे और शेर ऊपर। नजदीक ही धूर्त लोमड अपनी दुम हिलाता जा रहा था। जब सारे जानवर एकत्रित हो गए, तो धूर्त लोमड ने कहा

"सज्जनो, अब आप खुद ही देख लीजिए। हमारे सिहराज कितने शक्तिशाली है, उन्होने हाथी को धराशायी कर दिया है। हाथी ने नीचे गिरते वक्त बलूत को पकडना चाहा, लेकिन सिहराज ने हाथी के साथ बलूत को भी गिरा डाला। नाहक बलूत वृक्ष को मजबूत माना जाता हे, जरा-सा झटका न बर्दाश्त कर सका, टूट गया। और तो ओर, तीन भालुओ ने भी हाथी का साथ देना चाहा, लेकिन धन्य हे सिहराज! उन्होने उन भालुओ को ऐसा उछालकर फेका कि अतडिया तक बाहर निकल आई! खुद ही देख लीजिए, सामने मरे पडे है!"

इस हादसे मे जानवर भयभीत होकर कापने लगे। सभी ने जोर से चिल्लाकर कहा

"सिहराज ही हमारे अन्नदाता हे, वही हमारे राजा है!"

उस क्षण मे सभी जानवरो ने भय खाकर शेर को ही अपना राजा मान लिया। अब शेर जैसे ही जगल मे दहाडता, सभी जानवर भय से कापने लगते।

राजा बनते ही शेर ने अपनी मदद के लिए तीन गवर्नर नियुक्त किए। भेडिये को चरागाह, बाघ को जगल और लोमड को खेत-खलिहान का गवर्नर बनाया गया।

गवर्नरो ने सिर झुकाकर सिहराज के प्रति कृतज्ञता प्रगट की और अपना कार्यभार सभालने चल पडे।

इधर जानवरो मे बाते होने लगी

"आखिर भेडिया और लोमड मे कौन-से सुरखाव के पर लगे है, जो गवर्नर

बना दिए गए? हमारी बिरादरी मे इज्जतदार जानवरो की कमी नही। उनसे अच्छे जानवर मोजूद ह, उन्हे तो गवर्नर नहीं बनाया गया।"

हिरन तपाक से बोला

"हा, दोस्तो, दाल मे कुछ काला है! हम ईमानदारी ओर सच्चाई से राजा का मन नही जीत सकते। मुझे इस बारे मे पहले ही शक था—शेर भला इतनी आसानी से हाथी को पछाड सकता है! इसमे जरूर कोई चाल थी। लोमड अपनी धूर्तता के लिए पहले ही बदनाम है और हो सकता ह उसी ने कोई दाव खेला हो। रही भेडियो की बात, यकीनन उन सबने शेर की मदद की होगी और इसीलिए उन्हे रातो-रात गवर्नर बना दिया गया। मै बाघ के बारे मे कुछ नही कहता—वह शक्तिशाली जानवर है और वह गवर्नर की प्रतिष्ठा के योग्य हे। और फिर उसकी उपेक्षा कर पाना शेर के लिए मुमकिन नही—वह शेर से नाराज होकर सारा काम बिगाड सकता ह। शक्ति मे भी बाघ शेर से कम नही।"

"भाइयो, मने भी यही सोचा था," भालू ने जोर से कहा। "अरे, यह तो अन्धा भी बता सकता हे कि कोई चाल खेली गई हे। हाथी की आख मे धूल झोंकी गई है। साथ ही हमारे तीन भाइयो को मोत के घाट उतार दिया। मेरा अनुमान हे कि भेडियो ने मिलकर बलूत का वृक्ष दात से काटकर "

"हा! यही बात है!" सभी चिल्लाए।

अचानक लोमड वहा से गुजरता दिखा। सब चुप हो गए।

"श्च, श्च! चुप! शेतान सुन लेगा, तो मुसीबत आ जाएगी। हम सबकी सिहराज के यहा पेशी हो जाएगी। ओर हमे काले कोस पहुचा दिया जाएगा!"

लोमड ने रुककर पूछा

"यह क्या तमाशा है? कोई साजिश तो नही कर रहे हो?"

"भाई, आप भी खूब हे! अरे, हम लोग तो शेर महाराज के राजतिलक की खुशिया मना रहे हैं, आपस मे बाते कर रहे ह। अहो भाग्य, ऐसा राजा और इतने बुद्धिमान न्यायप्रिय गवर्नर बडे नसीब से मिलते है।"

'अच्छा, यदि ऐसा ह तो कोई बात नही। ख्याल रहे, मजमा जुटाना गैरकानूनी है। आइन्दा ऐसी गलती न हो।"

तव से सभी जानवर अपनी-अपनी अलग जिन्दगी जीने लगे। घास-पात खाने-वाले जीव शान्तिप्रिय जीवन विताते, जबकि हिंसक जानवर खूनी डकैतिया डालते, लूटपाट करते और दुर्वल जानवरो का जीना दूभर करते। लेकिन राजा और कानून के सामने अपने को सच्चा ठहराने के लिए वे यही सावित करते कि जो कुछ वे करते ह, अपनी मनमर्जी मे नही, वल्कि न्याय ओर व्यवस्था के लिए अपने कर्तव्य का निर्वाह करते हे। जब कभी राजा कसूरवार से पूछता "तुमने खरगोश को क्यो मार डाला?" तो अपराधी जानवर झट से कहता "हुजूर, वह आपका मजाक उडा रहा था, आपकी हत्या के लिए प्रजा को भडका रहा था।" राजा अपने गवर्नरो का विश्वास कर लेता ओर उनकी वफादारी के लिए तरह-तरह के इनाम, तमगे या पदक देकर उन्हे अलकृत करता।

लोमड खेत-खलिहान की गवर्नरी से ऊब गया। खेतो मे शिकार के नाम पर मिलता ही क्या था — मामूली चूहे ओर छोटे-छोटे जीव। लेकिन उसका जी करता कि वह मुर्गियो ओर वत्तखो पर हाथ साफ करे, उन्हे चटखारे ले-लेकर मजे से खाए। लोमड वनराज के पास पहुचकर वोला

"महाराज, मुझे मुर्गियो की देख-रेख का कार्यभार सौप दिया जाए। दुश्मनो से उनकी रक्षा करना जरूरी है।"

"इन नाचीज मुर्गे-मुर्गियो का ममला कहा से आ टपका?" वनराज ने दहाडते हुए पूछा। "अरे, मुर्गीखानो मे कौन-सी आफत आ गई?"

"महाराज, गंध-मार्जार और चूहो ने उत्पात मचा रखा है। वे असहाय मुर्गियो ओर उनके चूजो को जीने नही देते। एक मुर्गे ने मुझ से शिकायत की ह और यह भी कहा हे कि उसकी प्रार्थना आप तक पहुचा दू। ऐसा न हो कि सब आपकी हसी उडाए और कहे कि आप राज-काज नही देख पा रहे ह। सब तरफ अव्यवस्था फैल रही हे।"

शेर ने ऐसा रुख अपनाया, जैसे उसे धूर्त लोमड की वात पर विश्वास हो गया है। लोमड खुशी-खुशी दौडता हुआ गाव मे पहुचा। उसी रात से उसने मुर्गीखानो की जाच शुरू कर दी। जितनी वार उन्हे गिनता, हर जाच मे दो-तीन मुर्गिया हडप जाता।

एक बार कोई आदमी लोमड की घात मे वैठ गया और उसे मुर्गीखाने मे ही

दुम से धर पकडा। लोमड को खूब पीटा गया। उसकी ऐसी धुनाई की गई कि लोमड के होश उड गए। वह बेदम-सा हो गया। फिर उस आदमी ने लोमड की दुम रस्सी से बाधकर उसे बाडे पर लटका दिया। आदमी को यह आशका थी कि होश आते ही लोमड भाग जाएगा। जब वह आदमी सोने चला गया, तो लोमड को होश आया और वह जान बचाने की तरकीब सोचने लगा। भागने की कोशिश मे हाथ-पाव मारने लगा।

देर तक कोशिशे करता रहा पर रस्सी टूटने का नाम न ले रही थी—काफी मजबूत जो थी। तब लोमड ने अपनी दुम से ही छुटकारा पाने का निर्णय किया। दुम न सही, जिन्दा तो रह लूगा! वह अपनी दुम काटने लगा, यद्यपि यह बडा पीडादायक अनुभव था। बस, दुम कटकर अलग होते ही लोमड नौ दो ग्यारह हो गया।

खेत मे पहुचकर सोचने लगा अब क्या किया जाए? अपनी प्रजा को मुह कैसे दिखाऊगा? सब मेरी उपेक्षा करेगे और मेरी आज्ञा नही मानेगे। राजा साहब के सामने तो और भी छीछालेदर होगी। अगर कही उन्होने दुम के बारे मे पूछ लिया तो क्या होगा? आखिर बेदुम का गवर्नर होना कितने शर्म की बात है! अच्छा होता कि उस आदमी ने मुझे मार डाला होता! शर्मनाक ही सही पर जिन्दगी तो गुजारनी ही पडेगी। खरगोश की माद मे चलते है, घाव सूखने तक वही रहेगे।

लोमड खरगोश के यहा पहुचा और दरवाजे पर दस्तक देकर बोला

"दरवाजा खोलो, रात बिता लेने दो। मै तुम्हारे काम आऊगा!"

"मै दरवाजा नही खोलूगा। मेरा बडा परिवार है, छोटे-छोटे बच्चे है। वैसे ही जगह की दिक्कत है।"

"लेकिन मै कहता हू, दरवाजा खोलो! जानते हो मै कौन हू? मै खेत खलिहानो का गवर्नर और घरेलू पक्षी विभाग का मैनेजर हू। गाव मे राजा का फरमान लेकर आया हू।"

खरगोश ने लोमड की बडी-बडी बाते सुनते ही डरकर दरवाजा खोल दिया। लोमड खरगोश के घर मे पहुचा, नरम-नरम बिस्तर पर सो गया और उसके बच्चो को एक किनारे ढकेल दिया।

इधर खरगोश अपने बच्चो के लिए चारा लेने गया, उधर लोमड को भूख लगी। उसने झट से खरगोश के एक बच्चे को खा लिया।

खरगोश चारा लेकर घर पहुचा। अपने बच्चो को खाना खिलाने लगा कि देखता क्या है – एक बच्चा गायब है। खरगोश ने लोमड से पूछा

"माननीय महोदय, मेरा एक बेटा कहा है? वह दिख नही रहा है।"

"दो कौडी की ओकात, इत्ती वडी बात! तू मुझसे अपने बच्चो के बारे मे पूछ रहा है! म तेरा कौन हू? नौकर या धाय? तू आबादी बढाता फिरे और म उन्हे हर घडी गिनता-सहेजता फिरू – कितने है, कितने नही। तुझे अगर जान प्यारी है तो मुझसे टकराना मत, नही तो समझ लो हमारे मिहराज, महाराज का पजा तुम्हे जहन्नुम रसीद कर देगा।"

खरगोश माद से निकलकर बाहर आया आर रोने लगा। फिर से बच्चो के लिए चारा-पानी का जुगाड करने निकल पडा। घर लोटा, इस बार भी एक बच्चा गायब था। खरगोश ने कुछ न कहा, अपने शेष बच्चो को खाना खिलाने के बाद वह अपने घर से बाहर आकर फूट-फूटकर रोने लगा।

इसी वक्त एक दूसरा खरगोश कही भागता चला जा रहा था। अपने सबधी को रोता देखकर करीब आकर पूछने लगा

"भाई, क्यो रो रहे हो?"

"क्यो न रोऊ? मेरी माद मे लोमड घुसा बैठा है। मेरे बच्चो को खाता है, डर के मारे मै कुछ कह नही पाता। और ऊपर से धमकाता है 'राजा के पास ले जाऊगा, वह तुझे भी खा जाएगा।'"

"भाई, लेकिन तुम राजा से मिलकर अपना दुखडा तो सुना ही सकते हो।"

"खूब कही, नक्कारखाने मे तूती की आवाज! भैया, राजा के यहा जाना, न जाना बराबर है – राजा भी वैसा ही है। अगर शिकायत करे तो राजा के कारिन्दे उसे बीच मे दबा देगे – वे अपने प्रियजनो का बुरा क्यो चाहेगे?"

दोनो खरगोश अपनी-अपनी राह चल दिए।

उदास खरगोश अपने घर लोटा, लेकिन वहा तो सभी बच्चे गायब थे। खरगोश ऐसा डरा कि अपनी माद के बाहर ही बैठकर दहाडे मारता हुआ रोने

लगा। थोडी दूर पर एक भूरा भेडिया कही भागता चला जा रहा था, उसने खरगोश को देखा, रुककर पूछने लगा

"भैया खरगोश, खैरियत तो है? तुम रो क्यो रहे हो?"

"क्यो न रोऊ? मेरा तो सर्वनाश हो गया। लोमड ने मेरे घर पर कब्जा कर लिया है, मेरे मासूम बच्चो को खा गया और अब मुझे भी खाने की घात लगाए है। अब तो अपने घर मे घुसने से डर लगता है।"

"भाई, तुम दुखी मत हो। मै उसे अभी निकाल बाहर करता हू।"

फिर वे दोनो घर पहुचे। भेडिये ने दस्तक दी और बोला

"तुम कौन हो? बाहर निकलो!"

"मै लोमड हू। मुझसे कौन अकड रहा है?"

"ओह! लोमड भाई, तुम हो!" भूरे भेडिये ने कहा। "तुम्हे शर्म नही आती, कमजोर लोगो पर जुर्म ढाते हो। मै आग्रह करता हू कि घर छोडकर चले जाओ!"

"भेडिया भाई, यह तुम्हारा महकमा नही। मेरे काम मे दखलन्दाजी ठीक नही। अपने इलाके मे जाकर इन्तजाम देखो। रही मेरी बात, उसे मै खुद देख समझ रहा हू।"

भेडिये ने देखा कि कोई परिणाम नही निकल रहा है, वह राजा के यहा लोमड की शिकायत लेकर पहुचा। सिहराज ने हिरन को आदेश दिया कि वह अपराधी लोमड को तत्काल दरबार मे हाजिर करे। जैसे ही लोमड को दरबार मे हाजिर किया गया, सिहराज ने जोर से दहाडा

"तू मेरे राज्य मे अव्यवस्था फैला रहा है!"

लोमड घुटनो के बल सिर झुकाकर बैठ गया और विनीत स्वर मे बोला

"महाराजाधिराज, मौत के घाट उतारने से पहले मेरी प्रार्थना सुन ली जाए!"

"कहो, अपनी सफाई मे क्या कहना चाहते हो?"

"अन्नदाता! मुझे मालूम है कि भेडिये ने ईर्ष्यावश मेरी शिकायत की है। और अगर सच-सच कहा जाए तो सारा अपराध भेडिये का है। मुझे उसने अकारण

वदनाम किया है। खरगोश के बच्चो को मैंने नही, भेडिये ने खाया है। मैंने खरगोश की मदद की तो भेडिये ने मेरी दुम ही काट ली और मै खुद मरते-मरते वचा। हुजूर, खुद ही देख ले कि कैसे उसने मेरी दुम कुतरकर मुझे अपमानित किया है। मैं तो अव कही का न रहा। और तो और, वह सारा गुनाह मुझ पर ही मढ रहा है। आप खुद ही देख लीजिए, महाराज!"

शेर वडी देर तक सोचता रहा, मनन करता रहा, फिर फैसला सुनाते हुए वोला

"मुमकिन है, तुम ही सच कहते हो। फिलहाल तुम्हे गवर्नर के पद से हटाया जाता है और दरवारी खुफिया पुलिस का निदेशक वनाया जाता है। रही भेडिये की बात, मै उसे दण्डित करूगा।"

शेर ने भेडिये को बुलाने के लिए हरकारा भेजा और खुद उधेड-बुन मे पड गया। यह कहना कठिन है कि उन दोनो मे से कौन गुनहगार है और कौन निर्दोप। लगता है कि दोनो झूठ बोल रहे है। और उन दोनो मे से किसे जिन्दा छोडा जाए, यह विचारणीय मसला है। लोमड धूर्त है, उसकी बेजा हरकत साफ-साफ दिखलाई पडती है। लेकिन उसे दण्डित करना उचित न होगा। उसी ने तो अपनी धूर्तता से शेर को राजगद्दी पर विठाया था। और भेडिये ने क्या किया है? यही न कि उसने वलूत का पेड काटकर गिराने मे एडी-चोटी का पसीना बहा दिया था। लेकिन यह कौन-सा वडा काम है? काटने-कुतरने का काम तो कोई मूरख भी कर सकता है। ठीक है, भेडिये को ही दण्ड देना उचित होगा। दोनो को वेदाग छोडना मुमकिन नही।

सिहराज के दरवार मे भेडिया पेश किया गया। शेर ने उसे अपनी बात कहने या सफाई देने तक का मौका न दिया। वस, शेर ने आव देखा न ताव भेडिये को अपने भारी पजो मे दबोचकर मार डाला। जब भेडियो ने सिहराज का अन्याय देखा तो उन्होने विचार-विमर्श करना शुरू किया। आखिर धूर्त लोमडियो और खुद सिहराज से वदला कैसे लिया जाए? फिर जगल मे वगावत की ऐसी आग भडकी कि सारे भेडिये झुण्डो मे इकट्ठे होकर लोमडियो के घरो पर जवर्दस्त हमले करन लगे। देखते ही देखते उनके वेशुमार घर तवाह हो गए, बूढे और जवान लोमड-लोमडियो को मौत के घाट उतारा गया।

क्या पता यह युद्ध कही ज्यादा समय तक चला होता, लेकिन तब तक गाव के लोग हिसक जानवरो के उत्पात से तग आ चुके थे। हर क्षण कभी मुर्गी, कभी भेड, कभी बछडा गायब होता रहता। फिर एक दिन सारे गाववालो ने मिलकर हकवा लगाया। शेर को पकडकर सीखचो मे जकड दिया गया, बहुत-से भेडियो को मार डाला। शेष जानवर सिर पर पैर रखकर वहा से दूर भाग गए और तब से उस इलाके मे लोग अमन-चैन से रहने लगे।



तेलेसिक

पुराने जमाने की वात है। कही कोई बूढा अपनी वुढिया के साथ जिन्दगी के दिन गुजार रहा था। उन दोनो को एक ही मबसे बडा दुख था – वे मन्तानहीन थे। जीवन का यह सूनापन उन्हे अक्सर सताता "वुढापे मे दो जून की रोटी का सहारा कौन वनेगा ? हमारे दुख-मुख कौन सुनेगा ? कोन हमे कन्धा देगा ?" एक दिन उदास वुढिया ने वूढे पति से कहा

"अरे, सुनते हो, जगल मे जाओ और लकडी काटकर एक नन्हा-सा पालना और कठववुआ वना दो। उसे ही पालने मे सुलाकर जी वहला लूगी।"

बूढे ने पहले इमे वुढिया की सनक समझा, कठववुआ और पालना वनाने के लिए राजी न हुआ। लेकिन वुढिया ने अपनी जिद न छोडी, कठपुतला वनाने के लिए वह वार-वार कहती रही। एक दिन वूढे ने सोचा कि चलो, वुढिया के मन-वहलाव के लिए खिलौना वना ही दिया जाए। वूढे ने लकडी काटकर मुन्दर-मा पालना और कठपुतला वनाया। वुढिया उस कठपुतले.को नन्हे-मे पालने मे लिटाकर, झूला झुलाकर यह गीत गाने लगी



'नयनो का तारा तेलेसिक,
मा का प्यारा तेलसिक,
खीर पकाई, दलिया बनाया
तब न आया तलेमिक।

बुढिया उस क्षण तक मगन होकर पालना झुलाती रही, जब तक कि उसे नीद न आ गई। बूढे पति-पत्नी की सुबह आख खुली तो वे हैरान होकर देखते रह गए। पालने मे पडा हुआ कठपुतला नन्हे सुकुमार बेटे मे बदल गया। वे दोनो खुशी से फूले न समाए और उन्होने अपने बेटे का नाम रखा तेलेसिक।

वह शिशु दिन दूना रात चौगुना बढने लगा और एक दिन सुदर नवयुवक बन गया। बूढे बाबा और बुढिया ने खूब खुशिया मनाई।

एक दिन तेलेसिक ने कहा

"पिता जी, मेरे लिए सोने की नाव और चादी की डाड बना दीजिए। मै मछली पकडने जाऊगा, खाने-पीने का इतजाम करूगा।'

बूढे ने बेटे के लिए स्वर्ण नौका और चादी की डाड बनाई—लकडी की नाव पर सोने का कीमती पत्तर चढाया और लकडी की डाट पर चादी मढ दी। तेलेसिक नदी पर नाव खेता हुआ मछली मारने चल पडा। इस तरह वह मछलिया पकडता और माता-पिता की जरूरते पूरी करता, बूढी मा उसके लिए खाना लाती और हर बार यह कहती

"देखो, बेटे! जब मै तुम्हे आवाज दू—तट की तरफ नाव लेकर चले आना, अगर कोई दूसरा आवाज दे—तब इधर मत आना, आगे बढ जाना।"

एक दिन सुबह बूढी मा बेटे के लिए नाश्ता लेकर नदी किनारे आई और जोर-जोर से यह गीत गाने लगी

तेलसिक, मेरे तेलसिक
झटपट आ जा मत कर चिकचिक
दलिया लेकर आई साथ
नदी किनारे जोहू बाट!

तेलेसिक ने यह सुनते ही अपनी नाव से कहा

"नाव, री नाव, झट बढ चल नदी किनारे, माता मेरी जोह रही है, खाना लिए पुकारे।"

तेलेसिक अपनी नाव लेकर नदी किनारे पहुच गया। नाव तट पर ठहरा दी। खा-पीकर स्वर्ण नौका को चादी की डाड से खेता हुआ फिर मछली पकडने चल दिया।

उधर अजदहे ने यह सुन लिया था कि तेलेसिक की मा अपने बेटे को कैसे बुलाती है। अजदहा नदी तट पर आकर जोर-जोर से भद्दी आवाज मे गाने लगा

तेलेसिक मेरे तेलेसिक
झटपट आ जा मत कर चिकचिक
दलिया लेकर आई माय
नदी किनारे जोहू बाट।"

तेलेसिक ने जब यह सुना तो बोला

"यह मेरी मा की आवाज तो नही! नाव, री नाव, आगे बढ चल! नाव, री नाव, आगे बढ चल!"

स्वर्ण नौका चादी की डाड के सहारे आगे बढ चली। और अजदहा देर तक घात लगाए वहा खडा रहा। बाद मे उकताकर खाली हाथ अपने घर लौट गया।

उधर तेलेसिक की मा ने खाना बनाया, उसे लेकर नदी किनारे पहुची और बेटे का नाम लेकर उसे बुलाने लगी

तेलेसिक, मेरे तेलेसिक,
झटपट आ जा मत कर चिकचिक
दलिया लेकर आई माय
नदी किनारे जोहू बाट!

बेटे ने मा की पुकार सुनी और उसने अपनी नाव से कहा

"नाव, री नाव झट बढ चल नदी किनारे, माता मेरी जोह रही है, खाना लिए पुकारे।"

तेलेसिक अपनी नाव लेकर नदी किनारे पहुच गया। उसने भर पेट खाना खाया, पानी पिया, पकडी हुई मछलिया मा को सहेजी और फिर अपनी नाव खेता हुआ आगे बढ गया।

अजदहे ने पहले की तरह नदी किनारे आकर भद्दी आवाज मे तेलेसिक का नाम लेकर वही गीत गाना शुरू किया

'तलेमिक, मेरे तेलेसिक
झटपट आ जा मत कर चिकचिक,
दलिया लेकर आई साथ,
नदी किनार जोहू बाट!

तेलेसिक को ऐमा लगा कि यह उसकी मा की आवाज नही है। फिर वह डाड घुमाते हुए बढ चला

"नाव, री नाव, आगे बढ चल, नाव, री नाव, आगे बढ चल!"

यह सुनते ही नाव आगे बढ गई।

अजदहे ने देखा कि कोई दाव नही लग रहा है। निराश होकर वह लोहार के पाम पहुचा

"लोहार, लोहार! मेरी भद्दी आवाज तेलेसिक की मा की आवाज जैमी सुरीली कर दो।"

लोहार ने ठोक-पीटकर अजदहे की भद्दी आवाज ठीक कर दी। अजदहा नदी किनारे पहुचकर तेलेसिक का नाम पुकारते हुए गाने लगा

तलेसिक, मेरे तेलेमिक,
झटपट आ जा, मत कर चिकचिक
दलिया लकर आई साथ
नदी किनारे जोहू बाट!'

तेलेमिक ने मोचा कि मा खाना लेकर आ गई है। वह अपना नाव मे बोला

"नाव, री नाव, झट बढ चल नदी किनारे, माता मेरी जोह रही है, खाना लिए पुकारे।"

बस, तेलेसिक अपनी नाव लेकर नदी किनारे पहुच गया। अजदहा इसी नाव मे बैठा ही था। उसने तेलेसिक को नाव मे से बाहर खीच लिया और उसे घसीटता हुआ अपने घर की ओर चल दिया।

घर के दरवाजे पर आकर बोला

"अल्योन्का बेटी, दरवाजा खोल!"

अल्योन्का ने दरवाजा खोल दिया, अजदहा तेलेसिक को भीतर घसीटता हुआ बोला

"अल्योन्का बेटी, अलावघर मे खूब आग जलाओ, अगारे दहकाओ और तेलेसिक को भून पकाओ। तब तक मै मेहमानो को न्योता देकर आता हू—मिलकर दावत उडाएगे।"

अजदहा मेहमानो को बुलाने उड चला।

इधर अल्योन्का ने अलावघर में खूब आग जलाई और अगारे दहकाकर तेलेसिक से कहने लगी

"तेलेसिक, बेलचे पर बैठ जाओ!"

वह बोला

"मुझे तो पता नही, कैसे बैठना है।"

"चलो, वक्त बरबाद मत करो!" अल्योन्का ने चीखकर कहा।

तेलेसिक बेलचे पर अपना हाथ रख दिया।

"ऐसे?" तेलेसिक ने पूछा।

"अरे, ऐसे नही! अच्छी तरह बैठ जाओ।"

तेलेसिक बेलचे पर अपना सिर टिका दिया और बोला

"शायद इस तरह?"

"अरे, यू नही, मूरख! अपना समूचा शरीर टिकाकर बैठ जाओ।"

"पर कैसे? शायद इस तरह?" यह कहकर उसने अपना पैर बेलचे पर टिका दिया।

"तुम भी अजीव हो! ऐसे नही!"

"अगर ऐसा ही है तो एक वार वैठकर दिखा दो। मुझे इसका इल्म नही!"

अल्योन्का वेलचे पर वैठकर दिखाने लगी। अभी वह बैठी ही थी कि तेलेसिक ने वेलचे समेत उसे उठाया और दहकते अलावघर मे झोककर उसका दरवाजा वन्द कर दिया। इसके वाद तेलेसिक ने अजदहे के घर मे ताला लगाया और मेपल के एक खूब ऊचे पेड पर चढकर बैठ गया।

थोडी देर वाद अपने दोस्तो और मेहमानो के साथ अजदहा घर पहुचा

"अल्योन्का विटिया, दरवाजा खोलो!"

घर के अन्दर से कोई न बोला।

"अल्योन्का विटिया, दरवाजा खोलो!"

फिर कोई उत्तर न मिला।

"अरी, अल्योन्का, मई! कहा जा मरी?"

अजदहे ने घर का दरवाजा खोला। मेहमानो को घर मे बुलाया। सब खाने की मेज पर बैठ गए। अजदहे ने अलावघर का दरवाजा खोला। भुना हुआ मास निकालकर मेहमानो को परोस दिया। सब खाने लगे – तेलेसिक का मास खा रहे है, उन्हे तो यही ख्याल था।

जब वे छककर खा-पी चुके तो घर से वाहर निकलकर हरी घास पर टहलने लगे

"तेलेसिक का खाकर मास, झूम-झूमकर टहलो आज!"

मेपल के पेड पर वैठा तेलेसिक बोला

"अल्योन्का का खाकर मास, झूम-झूमकर टहलो आज!"

"यह आवाज कहा से आ रही है?" वे सोचने लगे और फिर मे गाने लगे

"तेलेसिक का खाकर मास, झूम-झूमकर टहलो आज!"

तेलेसिक ने भी फिर वही राग छेडा

"अल्योन्का का खाकर मास, झूम-झूमकर टहलो आज!"

सब हैरान हुए "यह कौन बोल रहा है?"

आओ, उसे ढूढा जाए! लगे सब चप्पा-चप्पा छानने। उन्होंने देख लिया कि तेलेसिक तो मेपल के पेड पर बैठा हुआ है। वे सब मेपल के नीचे पहुचे और पेड काटने लगे। वे उसे काटते रहे, काटते रहे, पर पेड कट नहीं रहा था। बहुत मजबूत था, कइयो के दात टूट गए। वे भागे-भागे लोहार के पास पहुच, बोले

"लोहार, लोहार! हमारे लिए खूब पैने दात बना दो ताकि मेपल का पेड काटा जा सके!"

लोहार ने ठोक-पीटकर खूब पैने दात बना दिए। उसके बाद फिर वे मेपल के नीचे पहुचकर पेड काटने मे जुट गए। मेपल कटकर गिरने ही वाला था

इस बीच मेपल के ऊपर से हसो की पात उडती हुई गुजर रही थी। तेलेसिक ने हसो से कहा

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हसो,
सबके प्यारे-प्यारे हसो!
आओ आओ, साथ निभाओ,
मेरे प्यारे घर पहुचाओ!'

लेकिन हसो ने कहा

"हम अगली पात के हस है! तुम बिचली पात के हसो मे मदद मागो।"

उधर अजदहे पेड काटने मे जी-जान से जुटे थे हसो की एक और पात ऊपर से गुजरी। तेलेसिक ने बिचली पात के हसो से कहा

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हसो,
सबके प्यार प्यारे हसो
आओ आओ, साथ निभाओ,
मेरे प्यारे घर पहुचाओ!

लेकिन इस पात के हसो ने कहा

"हम विचली पात के हस है! आखिरी पात के हसो से मदद मागो।"

मेपल चटकने लगा था। अजदहे थोडा सुस्ता लेने के वाद फिर पेड काटने लगे। इस तरह सुस्ता-सुस्ताकर पेड काटते रहे हसो की एक और पात पेड के ऊपर से गुजरी। तेलेसिक ने उनसे विनयपूर्वक कहा

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हसो
सबके प्यारे-प्यारे हसो!
आओ, आओ साथ निभाओ,
मेरे प्यारे घर पहुचाओ!

लेकिन उन हसो ने भी इनकार कर दिया

"आखिरी हम से मदद मागना।" यह कहकर वे आगे बढ गए।

तेलेसिक करता भी तो क्या? उधर एक-एक क्षण पहाड-सा भारी लग रहा था। पेड अव गिरने ही वाला था। इसी क्षण आकाश पर एक हस उडता दिखा—विल्कुल अलग और अकेला था। शायद अपने भाइयो से पिछड गया था। धीरे-धीरे उनकी ओर उडता आ रहा था। तेलेसिक ने उस हस से कहा

"सुन्दर-सुन्दर न्यारे हस,
सबसे प्यारे प्यारे हस!
घर पहुचाकर साथ निभाओ,
सकट आया जान बचाओ!
अजदहे सारे जुटे हुए है,
मुझे मारन अडे हुए है।
भैया मेर, प्यारे हस,
उजल उजले न्यारे हस!'

यह सुनते ही हस को उस पर दया आ गई। उसने कहा

"आओ, मेरी पीठ पर वैठ जाओ!"

हस ने तेलेसिक को अपनी पीठ पर बैठा लिया और उसे लेकर उड चला। पर वह वहुत थका हुआ था—ऊची उडान नही भर पा रहा था। अजदहे ने देखा

कि तेलेसिक हस की पीठ पर बैठा हुआ उडा चला जा रहा है। वह उसका पीछा करने लगा। बस, वह पकडने ही वाला था। झपट्टा मारने भर लेकिन हस झट से कतराकर आगे निकल गया।

थका-मादा हस तेलेसिक के घर के चबूतरे पर उतरा और उसे पीठ से उतारकर बाडे मे चारा चुगने लगा। और तेलेसिक चबूतरे पर बैठा, चुपके-चुपके घर की आहट लेने लगा। बूढे माता-पिता क्या कर रहे है? बुढिया ने कचौडिया बनाई थी, चूल्हे से कचौडिया उतारती और कहती जाती

"यह कचौडी तुम्हारे लिए हे और यह मेरे लिए!"

इसी वक्त तेलेसिक घर के बाहर से बोला

"और मेरे लिए?"

बुढिया ने फिर चूल्हे से कचौडिया उतारी और बोली

"यह कचौडी तुम्हारे लिए और यह मेरे लिए!"

तेलेसिक ने फिर से कहा

"और मेरे लिए?"

उन्हे सुनाई पडा। लेकिन यह किसकी आवाज हे?"

"तुमने सुना, जैसे कोई पुकार रहा है?"

"शायद तुम्हे ऐसे ही लगा हो?" बूढे ने कहा।

बुढिया फिर से कचौडियो का हिसाब लगाने लगी

"यह तुम्हारे लिए, यह मेरे लिए!"

"और मेरे लिए?" चबूतरे से तेलेसिक ने कहा।

"कुछ भी हो, कोई बुला रहा हे!" बुढिया ने कहा। उसने खिडकी से बाहर झाका तो देखा – चबूतरे पर उसका प्यारा बेटा तेलेसिक खडा हे!

बूढे माता-पिता न झट से बाहर आकर बेटे को गले से लगा लिया और खुशी-खुशी उसे घर के अन्दर ले आए।

हस बाडे मे घूम-घूमकर दाना चुग रहा था। बुढिया ने उसे देखकर कहा

"अहा, कितना सुन्दर हस है! अभी उसे काटकर पकाती हू!"

लेकिन तेलेसिक ने मा से कहा

"नही, मा, इस हस को मत मारो, इसे भर पेट दाना चुगाओ। अगर वह मेरी सहायता न करता, तो मै कभी का मर गया होता। इसने ही मेरी जान बचाई है।"

उन सबने खुशी-खुशी हस को बढिया दाना चुगाया, ठण्डा-ठण्डा पानी पिलाया और रास्ते के लिए थोडा-सा दाना पखो के नीचे सहेजकर बाध दिया। इस तरह वह हस अपनी राह उड चला।



जादुई अण्डा

किसी भूले-विसरे जमाने का बहुत पुराना किस्सा है। तब लवा पक्षी राजा था और चुहिया रानी। उनके पास अपना एक खेत था। एक बार खेत मे उन्होने गेहू बोया। फसल पकी तो उसे काटकर वे गेहू का बटवारा करने लगे। गेहू का एक दाना बच गया। चुहिया बोली

"लाओ, मुझे दे दो।"

लवा पक्षी बोला

"नही, यह मेरा है।"

"आओ, गेहू का यह दाना कुतरकर आधा-आधा बाट ले।"

लवा पक्षी उस दाने का बटवारा करने ही जा रहा था कि चुहिया ने झट से दाना मुह मे दबाया और दौडकर अपनी बिल मे घुस गई। फिर क्या था? राजा लवा ने सारे पक्षियो को इकट्ठा करके चुहिया रानी के विरुद्ध निर्णायक युद्ध शुरू कर दिया। उधर रानी चुहिया ने अपनी सहायता के लिए सारे जीव-जन्तुओ की फौज बुला ली।

लवा राजा और चुहिया रानी के बीच दिन भर घमासान लडाई होती रही। दोनो की फौजे लडते-लडते थक गई। शाम हुई तो युद्ध थमा और फौजे विश्राम करने लगी। रानी चुहिया ने देखा कि युद्ध मे भुनगे नदारद



हे। उसने आदेश दिया कि इलाके के सारे भुनगो को हाजिर किया जाए। बस, आदेश देने भर की देर थी। देखते ही देखते सारे भुनगे उड-उडकर इकट्ठे होन लगे। चुहिया ने उन्हे आदेश दिया कि वे रात मे ही जाकर पक्षियो के पखो के नन्हे परो को कुतर डाले।

दूसरे दिन तडके सवेरे ही चुहिया रानी ने युद्ध का आह्वान किया। उसने ललकारते हुए कहा

"उठो, युद्ध भूमि मे फैसला हो जाए!"

पक्षियो ने चुहिया रानी की ललकार सुनी, पर वे उठने की कोशिश करते ही गिर पडते। आर जन्तु उन्हे चिथडे कर डालते। चुहिया रानी ने लवा राजा पर विजय प्राप्त कर ली।

उधर एक उकाब यह समझ गया कि अब खैरियत नही है, वह पेड पर ही बैठा रहा। इसी वक्त एक शिकारी वहा से गुजर रहा था, उसने देखा कि उकाब पेड पर बैठा हे। शिकारी ने उकाब को मारने के लिए जैसे ही निशाना साधा, उकाब ने विनयपूर्वक कहा

"नौजवान शिकारी, मुझे मत मारो, मै वक्त जरूरत पर तुम्हारे काम आऊगा!"

शिकारी ने दुबारा निशाना लगाया, उकाब ने फिर अपनी बात दोहराई

"भाई, मुझे मत मारो, बेहतर हो कि अपने साथ घर ले चलो। तब तुम्हे मेरी कीमत का पता चल पाएगा!"

शिकारी ने एक बार फिर निशाना लगाया, उकाब पहले की तरह गिडगिडाते हुए बोला

"भाई, मुझे मत मारो! मुझे अपने साथ घर ले चलो — मै तुम्हारे काम आऊगा!"

शिकारी ने उकाब की बात पर विश्वास कर लिया। उसने पेड पर चढकर उकाब को घोसले मे से निकाला और उसे अपने घर ले आया। घर आने पर उकाब ने शिकारी से कहा

"भाई, पख मजबूत होने तक मुझे तुम मास खिलाकर मेरी परवरिश करो।"

शिकारी साल भर उकाब को मास खिलाता रहा। एक दिन वह शिकारी से बोला

"मुझे आजाद कर दो, मै उडकर देखता हू मेरे पख उग आए हे या नही।"

शिकारी ने उकाब को आजाद कर दिया। उकाब उडने लगा। उडता रहा, उडता रहा, जब दोपहर हुई तो वापस लौटकर शिकारी से बोला

"भाई, अभी कसर रह गई है।"

शिकारी ने उकाब की बात मान ली और फिर मे साल भर तक उकाव मास खाता रहा। साल भर बाद वह फिर से उडा सारा दिन उडता रहा, शाम होने पर वापस लौटकर शिकारी से बोला

"भाई, अभी वह बात नही आई हे।"

शिकारी ने उकाव को फिर से साल भर तक मास खिलाया और फिर उकाब उडा। वह खूब ऊपर तक उडा, बदलो तक उडा। नीचे उतरने के बाद शिकारी से बोला

"धन्यवाद, नेकदिल नौजवान! तुमने मुझे नया जीवन दिया है। तुम अब आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ!"

शिकारी ने पूछा

"लेकिन क्यो?"

उकाब ने कहा

"बैठो तो!"

शिकारी उकाब की पीठ पर बैठ गया।

उकाब उसे उडाकर बादलो के पार ले गया और वहा मे उसने शिकारी को गिरा दिया। शिकारी हवा मे कलाबाजी खाने लगा, जरा-सी देर मे उकाब ने उसे बीच मे ही पकड लिया। उकाब ने शिकारी से कहा

"कहो, कैसा लगा?"

"बस जान ही निकल गई थी!"

उकाब बोला

"यही हाल मेरा भी हुआ था जब तुमने पहली बार निशाना साधा था। आओ, फिर बैठ जाओ।"

स्पष्ट है कि शिकारी उकाब की पीठ पर नही बैठना चाहता था, लेकिन कोई चारा न था। शिकारी फिर बैठ गया।

उकाब उसे फिर बादलो के पार ले गया और वहा से उसे छोड दिया। लेकिन जमीन पर गिरने से पहले उसने शिकारी को लपककर पकड लिया। फिर उकाब ने पूछा

"कहो, कैसा लगा?"

"ऐसा लगा जैसे मेरी सारी हड्डिया ही बिखर गई हो।"

तब उकाब ने कहा

"यही हाल मेरा भी हुआ था जब तुमने दूसरी बार निशाना साधा था। आओ, मेरी पीठ पर फिर बैठ जाओ।"

शिकारी उकाब की पीठ पर बैठ गया।

उकाब उसे फिर उडाकर बादलो के पार ले गया और वहा से उसने उसे छोड दिया। जमीन पर गिरने से ऐन पहले उसे पकड लिया।

"कहो, इस बार कैसा लगा?"

"ऐसा लगा जैसे मै मर ही चुका होऊ।"

तब उकाब ने कहा

"यही हालत मेरी भी हुई थी, जब तुमने तीसरी बार निशाना साधा था। खैर, अब हमारा हिसाब चुकता हो गया। आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ। अब तुम्हे उडाकर अपने राज मे ले चलता हू।"

वे दोनो उडते रहे, उडते रहे, सफर तय करते रहे और आखिर उकाब के चाचा के घर पहुचे। उकाब ने कहा

"जब तुम चाचाजी के पास जाओगे, तब तुमसे पूछेगे 'तुमने कहीं मेरे भतीजे को तो नही देखा है?' तब तुम कहना 'जादुई अण्डा दीजिए, उसे अभी हाजिर किए देता हू'।"

शिकारी घर पहुचा, उकाब के चाचा ने उससे पूछा

"तुम यहा अपनी मर्जी से आए हो या किसी और की मर्जी से?"

उसने उत्तर दिया

"बहादुर कज्जाक जहा भी जाता है, अपनी मर्जी से जाता है।"

इस पर उकाब के चाचा ने पूछा

"तुमने कहीं मेरे भतीजे को देखा है? मेरा भतीजा लडने गया था, तब से उसका कोई हाल नही मिला। तीन गर्मिया बीत गई। जाने वह कहा होगा?"

शिकारी बोला

"जादुई अण्डा दीजिए, अभी हाजिर किए देता हू।"

लेकिन वह बोला

"जादुई अण्डा सौप देने से तो अच्छा है कि वह कभी न मिले।"

शिकारी वहा से निराश होकर लौट आया। उकाब ने कहा

"चलो, अब आगे उड चले।"

वे उडते रहे, उडते रहे और अन्त मे उकाब के भाई के पास पहुचे। यहा भी वही हुआ, जो चाचा के यहा हुआ था। शिकारी को जादुई अण्डा नही मिला। फिर वे वहा से उडकर पिता के घर पहुचे। उकाब ने शिकारी से कहा

"घर मे जाओ, जब वे मेरे बारे मे पूछे, तब तुम कहना 'जादुई अण्डा दीजिए, उसे अभी हाजिर किए देता हू'।"

शिकारी उकाब के घर पहुचा। वहा माता-पिता ने पूछा

"तुम अपनी मर्जी से आए हो या किसी और की मर्जी से?"

"बहादुर कज्जाक जहा भी जाता है, अपनी मर्जी से जाता है।"

उन्होने फिर सवाल किया

"तुमने मेरे बेटे को तो नही देखा है? युद्ध मे गया था, चौथी गर्मी बीत गई है। पर मेरे बेटे का कही पता नही लगा। शायद रणक्षेत्र मे शहीद हो गया है?"

इस पर शिकारी बोला

"जादुई अण्डा दीजिए, अभी उसे हाजिर किए देता हू।"

उकाब के पिता ने कहा

"भाई, तुम अण्डे का क्या करोगे? चाहो तो मै तुम्हे धन-दोलत से मालामाल कर दू।"

लेकिन उसने कहा

"मुझे दोलत नही चाहिए जादुई अण्डा दीजिए।"

'अच्छा तो मै तुम्हे जादुई अण्डा दे दूगा। बस, तुम मेरे बेटे को जल्दी मे यहा ले आओ।"

शिकारी ने उकाब को लाकर पिता के सामने हाजिर कर दिया। माता पिता अपने बिछुडे बेटे को पाकर खूब खुश हुए। पिता ने शिकारी को जादुई अण्डा देते हुए कहा

"देखो, इसे सभालकर ले जाना। कही रास्ते मे फट न जाए। घर पहुचने पर एक बाडा बनवाना और तभी इसे फोडना।"

शिकारी घर की राह चल पडा। वह चलता रहा, चलता रहा कि अचानक उसे प्यास लगी। पास ही उसे एक कुआ दिखा। उसने कुए से पानी खीचा और जैसे ही पानी पीने चला कि जादुई अण्डा बाल्टी मे टकराकर फूट गया। और उस अण्डे के भीतर से मवेशी निकल-निकलकर बाहर आने लगे। वह इन मवेशियो को हकाता हुआ कभी इस ओर तो कभी उस ओर भगाता रहा, लेकिन उन्हे काबू मे न कर पाया। सारे के सारे मवेशी छितर-बितर हो गए। बेचारा सिर पकडकर बैठ गया, चीखता-चिल्लाता रहा पर सब बेकार। अचानक एक अजदहा उधर आया। वह बोला

'अगर मै सारे मवेशियो को फिर से अण्डे के भीतर हाक दू तो तुम मुझे क्या दोगे?"

शिकारी ने पूछा

"लेकिन तुम्हे क्या चाहिए?"

वह बोला

"तुम मुझे वह दोगे जो तुम्हारे पीछे तुम्हारे घर मे आया है?"

शिकारी ने कहा

"हा, दूगा।"

अजदहे ने सारे के सारे मवेशियो को हाककर अण्डे की भीतर बन्द कर दिया। फिर उसने अण्डे को अच्छी तरह चिपकाकर शिकारी को दे दिया।

वह जादुई अण्डा लेकर घर पहुचा। और देखता क्या हे कि उसके घर बेटा हुआ ह। शिकारी ने सिर पीट लिया

"ओह, मेरे बेटे! मने तो तुम्हे अजदहे को दे डाला है!"

पति-पत्नी बहुत दुखी हुए। फिर आसू पोछकर बोले

"खर, अब क्या किया जाए? रोने-पीटने से क्या होगा? किसी तरह जीना ही होगा।"

शिकारी ने एक बडा-सा बाडा बनवाया, बाडे के अन्दर अण्डा फोडा गया। अण्डा फोडते ही बाडे भर मे मवेशी ही मवेशी भर गए। शिकारी खूब धनवान हो गया।

जिन्दगी के दिन कटते रहे, कटते रहे इधर बेटा बडा हो गया। एक दिन वह बोला

"पिताजी, आपन मुझे अजदहे को दे दिया हे। अब मै उसके पास ही जाता हू–जो होगा देखा जाएगा।"

और शिकारी का बेटा अजदहे के यहा चला आया। लडके को देखते ही अजदहा बोला

"आओ, तीन काम कर लाओ। अगर काम कर लिए तो घर जाने दूगा। नही तो तुम्हे खा जाऊगा!"

अजदहे के घर के पास एक लम्बा-चौडा घास का मैदान था। दूर-दूर तक नजर दौडाओ पर उसका ओर-छोर न मिलता था। अजदहे ने पहला काम उसे सौपते हुए कहा

"रात भर मे इस घास के मैदान को साफ करके इसमे हल चलाओ, गेहू बोने के बाद फसल उगाओ, उसे काटो और गेहू का अबार लगाओ। फिर इसी गेहू से मेरे लिए पावरोटी भी पकाओ। सुबह जब मैं सोकर उठू, तो पावरोटी नाश्ते के लिए तैयार मिले!"

वह बाका जवान चक्कर मे पड गया–एक रात मे इत्ता बडा काम। वह सिर

झुकाए अपनी राह चला जा रहा था। कही थोडी दूर पर पत्थर का एक स्तभ था और इस स्तभ मे अजदहे की लडकी चुनी हुई थी। स्तभ मे सिर टिकाकर नौजवान रोने लगा। स्तभ के अदर मे लडकी ने पूछा

"क्यो रो रहे हो ?"

लडके ने कहा

"रोऊ क्यो न ? अजदहे ने ऐसा काम बताया है, जिसे मै उमर भर मे कभी न कर पाऊगा, एक रात की तो बात दूर रही।"

लडकी ने फिर पूछा

"लेकिन उसने तुम्हे कौन-सा काम बताया है ?"

नवयुवक ने सब विस्तार से कह सुनाया। तब लडकी बोली

"तुम्हारा यह काम एक शर्त पर ही कर सकती हू। तुम्हे मुझसे शादी करनी होगी ! बोलो, मजूर है ?"

लडके ने कहा

"हा, मजूर है।"

अजदहे की लडकी ने कहा

"तो जाओ, सो जाओ, कल जरा जल्दी उठ जाना—पावरोटी लेकर दे देना।"

फिर क्या था ? घास के मैदान मे जाकर उसने सीटी बजाई और लो, मैदान मे दबादब जुताई, बुआई होने लगी—सुबह होते न होते उसने नई फसल के गेहू से बढिया पावरोटी बनाकर तैयार कर दी। नवयुवक उसे लेकर अजदहे के यहा पहुचा। पावरोटी उसने मेज पर रख दी।

अजदहे की नीद खुली तो वह हैरान रह गया। सामने मैदान मे गेहू का अबार लगा हुआ था। तब वह बोला

"तो तुमने पहला काम पूरा कर लिया। अब मै दूसरा काम बतलाता हू। वह जो पहाड है, उसे खोद डालो ताकि द्नेपर नदी वहा से बहने लगे। द्नेपर के किनारे अनाज रखने के लिए गोदाम बना दो जिसमे कि जहाज यहा आकर लगर डाल सके और गेहू बेचा जा सके। सुबह जब मैं उठू तो सब कुछ तैयार हो।"

लडका फिर पत्थर के स्तभ के पास आकर जोर-जोर से रोने लगा। अजदहे की बेटी ने फिर पूछा

"क्यो रो रहे हो ?"

लडके ने फिर अपनी व्यथा सुना दी, अजदहे ने जो कहा था वह सब बतला दिया।

अजदहे की बेटी बोली

"जाओ, सो जाओ। सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

उसने जोर से सीटी बजाई और देखते ही देखते पहाड फट गया, दनेपर नदी कल-कल करती हुई वहा पर बहने लगी। नदी के किनारे अनाज के गोदाम बनाए जाने लगे तब उसने आकर लडके को जगाया, ताकि वह जहाज से आनेवाले सौदागरो के हाथ गेहू बेच सके।

अजदहा सोकर उठा। उसने आश्चर्य से मुह फाड लिया। नौजवान से जो-जो कहा गया था, वह सब उसने कर डाला था।

तब अजदहे ने तीसरा काम करने के लिए कहा

"जाओ, अब तुम सुनहरा खरगोश पकडो और सुबह होते ही मेरे घर ले आओ!"

वह फिर उस स्तभ के पास पहुचा और फूट-फूटकर रोने लगा। अजदहे की बेटी ने लडके से पूछा

"इस बार तुम्हे कौन-सा काम करना है?"

वह बोला

"अब मुझे सुनहरा खरगोश पकडना है।"

तब अजदहे की बेटी ने कहा

"यह काम आसान नही! कौन जाने उसे कैसे पकडना है? खैर, चलो, उस चट्टान की ओर चलते है।"

जब वे चट्टान के पास पहुचे तो अजदहे की बेटी ने कहा

"तुम माद के मुह पर खडे हो जाओ। मै उसे खदेडूगी, तुम उसे पकडना। हा, चौकस रहना जो कोई भी माद से बाहर आए, उसे तुरन्त पकड लेना—

वही सुनहरा खरगोश होगा। "

अजदहे की बेटी अदर जाकर खदेडने लगी। देखते ही देखते उस माद व अन्दर मे फनफनाता हुआ काला साप निकल भागा। लेकिन लडके ने उसे नही पकडा। लडकी जब माद से निकलकर बाहर आई तो उसने पूछा

"कहो, कोई बाहर नही निकला?"

"नही। एक काला साप रेंगता हुआ निकला था और मैंने डरकर उसे छोड दिया।"

लडकी ने कहा

वाह रे तुम! वही सुनहरा खरगोश था! लेकिन इस बार ध्यान रखना। मैं जाकर उसे हाकती हू। जैसे ही कोई माद मे निकले और यह कहे कि यहा सुनहरा खरगोश नही है, तुम उसका यकीन मत करना, बस, झट से उसे दबोच लेना।" अजदहे की बेटी अदर जाकर फिर खदेडने लगी। अचानक वहा से एक बिल्कुल ही जर्जर बुढिया निकलती दिखलाई दी। बुढिया ने उस लडके से पूछा

"बेटे, यहा तुम किसका इन्तजार कर रहे हो?"

वह बोला

"सुनहरे खरगोश का।"

बुढिया ने उत्तर दिया

"सुनहरा खरगोश और वह भी यहा? बेकार अपना वक्त बरबाद कर रहे हो।"

यह कहने के बाद बुढिया आगे बढ गई। इधर अजदहे की लडकी आकर पूछने लगी

"क्या खरगोश नही निकला? यहा मे कोई नही गुजरा?"

लडके ने कहा

"हा, एक बुढिया दिखलाई पडी थी, उसने पूछा कि मैं यहा क्या ढूढ रहा हू। मैंने कहा—सुनहरा खरगोश, लेकिन बुढिया ने कहा—यहा तो वह नहीं है, और तब मैंने उसे जाने दिया।"

"हाय रे, यह तुमने क्या किया! अरे, यह सुनहरा खरगोश ही था। अब

वह तुम्हे कही न मिल पाएगा। सुनो, ऐसा करते हे म अपना रूप वदलकर सुनहरा खरगोश वन जाऊगी और तुम मुझे ले जाकर मेज पर छोड देना। हा, ध्यान रखना कि तुम मुझे अजदहे के हाथो मे न सौप देना, नही तो वह रहस्य जान लेगा ओर तव हम दोनो की शामत आ जाएगी। वह हमारे टुकडे-टुकडे कर डालेगा।"

अजदहे की वेटी झट से सुनहरा खरगोश वन गई। लडके ने उसे लाकर अजदहे के यहा मेज पर रख दिया और बोला

"लो, यह रहा सुनहरा खरगोश। अव मै यहा से जाता हू।"

"ठीक हे, तुम अव जा सकते हो!"

नवयुवक वहा से चल पडा।

जैसे ही अजदहा घर मे वाहर निकला, सुनहरा खरगोश फिर सुन्दरी वन गया ओर वह दौडकर नवयुवक के पास जा पहुची। अव वे जान हथेली पर रखकर भागने लगे। इस वीच अजदहा ममझ गया कि यह सुनहरा खरगोश नकली था, उसकी वेटी ने ही रूप वदल लिया था। उसे वडा गुस्सा आया। उसने अपने वेटे छोटे अजदहे को पीछा करने भेजा ताकि वह लडकी को पकडकर उसके टुकडे-टुकडे कर डाले। भगोडो को भी खतरे का आभास हो गया—धरती थर-थर कापने लगी थी तव युवती बोली

"हमारा पीछा हो रहा हे। मै गेहू की फसल वन जाती हू और तुम वूढे वावा। जव तुमसे पूछा जाए 'तुमने किसी युवक-युवती को इधर मे गुजरते तो नही देखा है?' तव तुम कहना कि जव इस फसल की वुआई हो रही थी, तव एक युवक-युवती इधर से गुजरे थे।"

लो, छोटा अजदहा वहा आ धमका। वूढे से पूछने लगा

"क्यो, वावा, तुमने किसी युवक-युवती को इधर मे गुजरते तो नही देखा?"

वूढे ने जवाव दिया

"हा, देखा हे।"

तव छोटे अजदहे ने पूछा

"कव देखा था?"

बूढ़े ने कहा

"तब, जब खेत में गेहूं की बुआई हो रही थी।"

छोटा अजदहा बोला

"अरे, बाबा, गेहूं की फसल तो काटने का वक्त आ गया है, पर वे दोनों तो अभी कल ही भागे हैं।"

यह कहते हुए छोटा अजदहा वापस लौट गया। उधर अजदहे की बेटी ने फिर से मनुष्य का रूप धारण कर लिया और बूढ़ा बाबा गायब होकर एक हट्टा-कट्टा नौजवान बन गया। युवक-युवती फिर से भागने लगे।

छोटा अजदहा घर लौट आया। तब अजदहे ने पूछा

"कहो, उनको नहीं पकड़ पाए? रास्ते में कोई नहीं मिला?"

बेटा बोला

"हां मिला तो था। एक बूढ़ा खेत की रखवाली कर रहा था। मैंने पास जाकर पूछा कि उसने किसी युवक-युवती को तो नहीं देखा है, शायद यहां नजदीक से गुजरे हों। लेकिन उसने कहा 'हां, वे इधर आए थे, लेकिन उन दिनों जब गेहूं बोया जा रहा था। पर अब तो वह फसल काटने लायक हो गई है।' यह सुनते ही मैं वापस चला आया।"

तब अजदहे ने कहा

"अरे, यह तूने क्या किया? वे लोग वहीं पर मौजूद थे। जल्दी उनका पीछा करो।"

छोटा अजदहा फिर से उड़ चला। धरती दहल उठी। उन दोनों ने यह भाप लिया कि अब ख़ैरियत नहीं। झट से लड़की ने कहा

"मैं अपना रूप बदलकर पुराना किला बन जाती हूं और तुम सैनिक। जब छोटा अजदहा तुमसे पूछे 'तुमने अमुक व्यक्तियों को देखा है?' तब तुम कहना 'हां, तब देखा था जब यह किला बन रहा था'।"

छोटा अजदहा उस सैनिक के पास आया और पूछने लगा

"सैनिक, क्या तुमने एक नौजवान जोड़े को इधर से गुजरते हुए देखा है?"

"हां, तब देखा था जब यह किला बन रहा था।"

इस पर छोटा अजदहा बोला

'खूब अक्ल पाई है तूने! अरे, वे तो कल ही घर से भागे है और यह किला तो जाने कब बना था।"

यह कहकर बेटा अजदहा वापस लौट गया और बाप से बोला

"एक किले के पास मैंने एक सैनिक देखा। मैंने उससे पूछा तो यह पता चला कि वे दोनो वहा से तब गुजरे थे, जब किला बन रहा था। और किला न जाने कब बना था, जबकि वे तो कल ही गायब हुए है।"

तब अजदहे ने कहा

"अरे, बुद्धू, तूने उस सैनिक को मारकर उस किले को क्यो नही ढहा डाला? ये दोनो वही लोग थे। अब मुझे खुद उनकी खबर लेने के लिए जाना होगा।"

अजदहा हवा की चाल मे उड चला। धरती दहल उठी, तपन लगी और वे दोनो समझ गए कि इस बार बडा अजदहा उनका पीछा कर रहा है।

तब लडकी ने लडके से कहा

"अब हम बेमौत मारे गए। अब मेरा बाप अजदहा खुद भागता चला आ रहा है। चलो, मैं तुम्हे नदी बना देती हू और खुद कवाई मछली बन जाऊगी।"

अजदहा दौडकर वहा पहुचा और नदी से बोला

"तो कहो? तुम दोनो भाग निकले?"

फिर क्या था? देखते ही देखते अजदहे ने बडे-बडे जबडोंवाले पाइक मच्छ का रूप धारण कर लिया और कवाई मछली का पीछा करने लगा। लेकिन जैसे ही वह कवाई पर झपटने लगता, वह घूमकर अपने नुकीले पंख उसकी ओर कर देती, सो वह उसे दबोच न पाता। बडी देर तक वह कवाई का पीछा करता रहा लेकिन उसे पकड न पाया। तब उसने समूची नदी पी जाने का निर्णय किया। वह नदी का पानी पीता गया, पीता गया और इतना ज्यादा पी गया कि उसका पेट ही फट गया।

तब उस लडकी ने, जिसने मछली का रूप धारण कर लिया था, नदी से कहा

"अब डरने की कोई बात नही। चलो, तुम्हारे माता पिता के पास चला

है। बस, इतना ध्यान रखना घर मे पहुचकर सबमे गले मिलना सिर्फ भतीज से गले न मिलना, क्योकि उसे गले लगाते ही तुम मुझको भूल जाओगे।"

युवक अपने घर पहुचा, सबसे गले मिला और असमजस मे पड गया "आखिर अपने भतीजे से क्यो न मिला जाए? लोग बुरा मानेगे।" उसने आगे बढकर उस लडके को गले लगा लिया। भतीजे से गले मिलते ही वह सुन्दरी को भूल गया।

थोडा समय बीता या ज्यादा—यह तो नही मालूम, लेकिन एक दिन युवक ने शादी करने का निर्णय किया। उसे एक अच्छी-सी लडकी बतलाई गई। उस लडकी को तो वह कभी का भूल चुका था, जिसने उसे अजदहे से बचाया था। इस तरह एक दूसरी लडकी के साथ शादी तय कर दी गई।

विवाह से पूर्व एक शाम को गाव की सभी लड़कियो को वर के घर मिठाइया बनाने और गीत गाने का न्योता दिया गया। उस लडकी को भी बुलाया गया, जिसके साथ वह अजदहे के यहा से भागा था, हालाकि गाव मे कोई नही जानता था कि यह लडकी कौन है और कहा से आई है। सब मिलकर मिठाइया बनाने और गीत गाने लगी। उस लडकी ने गुधे मैदे का एक कबूतर और एक कबूतरनी बनाकर उसे ऊपर की ओर उछाल दिया। वे जीवित होकर उडने लगे। कबूतरनी गुटरगू करते हुए बोली

"कबूतर, कबूतर! क्या तुम भूल गए कि मैने तुम्हारे लिए घास का मैदान साफ कर गेहू बोया था और उस गेहू के आटे से मैने पावरोटी पकाई थी, ताकि तुम अजदहे को ले जाकर दे सको?"

कबूतर ने उत्तर दिया

"भूल गया, भूल गया, भूल गया।"

उसने फिर पूछा

"तुम यह भी भूल गए कि कैसे मैंने पहाड हटाया था, और द्नेपर का रुख मोडा था ताकि नदी पर व्यापारियो के जहाज आए और तुम उन्हे गेहू बेच सको?"

लेकिन कबूतर ने उत्तर दिया

"भूल गया, भूल गया, भूल गया।"

फिर कबूतरनी ने कहा

"तुम यह भी भूल बैठे कि हम लोग कैसे सुनहरा खरगोश पकडने गए थे? तुम मुझे भुला बैठे?"

कबूतर ने फिर वही दोहराया

"भूल गया, भूल गया, भूल गया।"

तब बाके युवक को उस सुदरी का ध्यान आया। दोनों की धूम-धाम से शादी हो गई। और वे अब तक खुशी-खुशी जिन्दगी के दिन बिता रहे ह।



चरवाहा

यह कहानी पुराने जमाने की है। वहीं एक किशोर चरवाहा रहता था। भेडे चराना, दीन-दुनिया से बेखबर और मस्त रहना — यही उसका काम था। एक बार आसमान से एक पत्थर आ गिरा। पत्थर भी खूब बडा और भारी-भरकम था, यही कोई चार मन का रहा होगा। चरवाहा इस पत्थर से मन बहलाया करता था। कभी उसे अपने कोडे से बाध लेता, कभी उसे हवा मे खूब ऊपर उछाल देता और खुद सारे दिन के लिए सोने चला जाता। जब सोकर उठता तो देखता कि पत्थर अभी हवा मे उड रहा है और जैसे ही वह गिरता, जमीन के भीतर तक धस जाता। मा उसे डाटती-फटकारती

"कैसा मूरख है रे, तू? इतने बडे पत्थर से खिलवाड करता है! नाभ खिसक जाएगी।"

जबकि उसे खरोच तक न आती।

एक बार उस राजा पर सकट आया, जिसके राज्य मे चरवाहा रहता था — एक बहुत बडा अजदहा वहा आ पहुचा। बारह-बारह मन के पत्थर लेकर वह अपने लिए एक महल बनाने लगा। और तुर्रा यह कि राजा अपनी बेटी उसे सौप दे।

राजा भयभीत हो गया। उसने सारे राज्य मे अपने हरकारे भेजे और डुग्गी



पिटवाई कि ऐसा कोई सूरमा भी है, जो उस दैत्य अजदहे को पराजित कर सके, उसकी चुनौती का मुहतोड जवाब दे सके। बडी छानबीन की गई पर ऐसा पराक्रमी योद्धा न मिल सका। लेकिन इसी दौरान यह खबर चरवाहे तक पहुची। जब उसने सुना तो डीग मारने लगा

"मैंने तो उस अजदहे को अपने कोडे की एक फटकार मे मार डाला होता।"

शायद उसने मजाक मे ही ऐसा कहा हो, लेकिन यह खबर उस राजा तक पहुची ओर राजा ने उसे तुरन्त बुला भेजा। चरवाहे को राजा के सामने हाजिर किया गया। राजा ने उसे गौर से देखा। अरे, यह तो बहुत छोटा है! बोला

"तुम तो बहुत छोटे हो!"

यह सच हे कि चरवाहा अभी किशोर ही था। लेकिन उसने जवाब दिया

"आप फिक्र न करे।"

राजा ने चरवाहे की मदद के लिए पूरी दो रेजिमेंटे दे दी। चरवाहा उन सैनिको के पास आकर इस तरह आदेश देने लगा जैसे बीस बरस से फौज मे रहा हो। ऐसे अनोखे सेनापति को देखते ही राजा ने आश्चर्य से कहा

"बहुत खूब!"

सिपाहियो को लेकर चरवाहा अजदहे का सामना करने चल दिया। उसके महल से थोडी दूर पर वे ठहर गए। चरवाहे ने अपने सैनिको को वही छोड दिया और बोला

"देखो, जब अजदहे के महल से धुआ निकले तो समझना कि मैंने उसे मार डाला। और अगर लपटे निकले तो मुझे मरा समझ लेना।"

चल पडा वह नौजवान अकेला। सैनिको को वही पर छोड गया था। वह अजदहा भी इतना शक्तिशाली था कि अपने आसपास किसी को फटकने न देता था। बस, एक सास मे उसे मार डालता था। चरवाहे को देखते ही अजदहे ने आग-सी तपती सास छोडी। लेकिन वह टस से मस न हुआ।

"यहा आने की वजह बताओ! दोस्ती करने आए हो या दुश्मनी?"

"दोस्ती करने नही, युद्ध के लिए ललकारने आया हू," चरवाहे ने कहा।

"जाओ, अभी तीन साल तक और खेलो-खाओ, तब मेरा मुकाबला करना," अजदहे ने कहा।

"नही, फैसला इसी क्षण होना है।"

"लेकिन तुम मेरा मुकाबला कैसे करोगे?"

"यह देखो, इस कोडे से।"

उसका कोडा भी ऐसा-वैसा न था। समझो पूरे साड की खाल से बना था और उसके सिरे पर पत्थर बधा हुआ था।

"तो चलो, करो अपना वार!" अजदहे ने कहा।

"नही, पहले तुम वार करो!"

अजदहे के पास एक बारह हाथ लम्बी बडी मजबूत तलवार थी, लोहे की या फौलाद की। उसने पूरे जोर से चरवाहे पर वार किया और लो, तलवार टुकडे-टुकडे हो गई!

"सभलो! अब मैं वार करता हू!"

यह कहते ही चरवाहे ने अपने कोडे से ऐसा प्रहार किया कि अजदहा एक ही वार मे लम्बा हो गया और उसके महल की चिमनी से धुआ उठने लगा।

उसके सैनिक खुशिया मनाने लगे, विजय-ध्वनि होने लगी, गीत गाए जाने लगे। खुद राजा ने उस नवयुवक की अगवानी की और उसे आदर-सत्कार के साथ अपने महल मे ले गया। राजा ने अपनी बेटी की शादी चरवाहे के साथ कर दी और उसके लिए एक महल बनवा दिया। शादी के बाद चरवाहा और राजा की बेटी उस महल मे रहने लगे।

लेकिन बात यही खत्म न हुई। दूसरे राजाओ मे कानाफूसी शुरू हो गई "राजा ने अपनी बेटी चरवाहे के साथ ब्याह दी!" राजा को भी अफसोस होने लगा। सो उसने एक शाही फरमान राज के कोने-कोने मे भिजवा दिया कि क्या हमारे राज मे कोई ऐसा सूरमा भी है जो चरवाहे को पराजित कर सके? ऐसे

दो आदमी मिले। राजा ने उन्हे चरवाहे के पास लडने के लिए भेज दिया। चरवाहा अपने महल मे वैठा किताव पढ रहा था ओर भाप गया था कि उससे लडने आ रहे है।

उधर वे दोनो चरवाहे के पास आ पहुचे। उसने उनसे पूछा

"कहो, बाके जवानो, लडने आए हो या दोस्ती करने?"

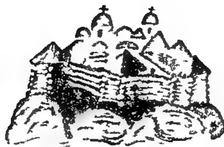
"बेशक, लडने!"

"तो चलो, प्रहार करो!" चरवाहे न कहा।

फिर क्या था? उनमे से एक सूरमा ने बाए कन्धे की ओर से प्रहार किया– तलवार टूटकर खण्ड-खण्ड हो गई। ओर दूसरे ने दाई ओर से तिरछा वार किया, सिर्फ कमीज ही फटकर रह गई। तव चरवाहे की बारी आई, उसने उन दोनो को पकडकर ऐसी जोर से दवाया कि उनकी हड्डी-पसली चूर-चूर हो गई। तव उसने उन हड्डियो को समेटकर मुट्ठी मे दवाया और क्रोध से तमतमाते हुए राजा के सामने पहुचकर बोला

"कहो, यह देख रहे हो? अव तुम्हारा भी यही हाल होगा!"

यह सुनते ही राजा सिर पर पाव रखकर भागा। और उस वक्त से अव तक वहा का राजपाट चरवाहा सभाल रहा है।



खलडीउधेड किरील

बहुत पुराने जमाने की बात है। कीयेव नगर मे एक राजा राज करता था। नगर से थोडी दूर पर एक विशालकाय अजदहा रहता था। इस खूखार अजदहे ने सारे राज्य मे आतक फैला रखा था। अजदहा हर साल एक युवक या युवती की वलि लेता था। एक वार खुद राजकुमारी की बारी आई। राजा करता भी तो क्या? आखिर नगरवासियो ने भी तो अपने प्रियजनो का विछोह सहा है—उसे भी वैसा ही करना पडा। राजा ने अपनी बेटी को अजदहे के पास भेज दिया।

और राजकुमारी भी गजब की सुन्दरी थी। ऐसी रूपवती कि उसके रूप का बखान न कहकर सुनाया जा सके, न लिखकर रचा जा सके।

उस सुन्दर राजकुमारी को देखते ही अजदहा मुग्ध हो गया।

एक दिन राजकुमारी ने अजदहे के प्रति प्रेम प्रदर्शित करते हुए पूछा "इस दुनिया मे क्या कोई ऐसा भी इनसान है, जो तुम्हारी ताकत को चुनौती दे सके?"

"हा, एक आदमी है," अजदहे ने कहा। "वह कीयेव मे द्नेपर नदी के तट पर रहता है। आदमी भी गजब का है। वह अपनी झोपडी गरमाने के लिए जसे ही आग जलाता है, वैसे ही धुए का बादल आसमान को ढक लेता है। और



जब नदी पर खाल भिगोने के लिए जाता है तो एक नही, बारह-बारह खाले मजे से उठाकर ले जाता है। वे खाले दनेपर के जल म पानी सोखकर खूब भारी हो जाती है। मै उन्हे पकड लेता हू — लेकिन उम मरदूद को इसम कोई फर्क नही पडता खाले खीचकर निकालता है तो साथ में मुझे भी घसीटने लगता ह। बस इसी आदमी से म डरता हू।"

राजकुमारी उधेड-बुन मे पड गई। सोचने लगी कि किस तरह यह खबर अपने घर भेजी जाए और कैसे जान बचे। उसके आसपास कोई था ही नही, सिर्फ एक कबूतर था। जब वह कीयेव मे पिता के यहा हसी-खुशी के दिन गुजार रही थी, तब उसने यह कबूतर पाला था। इस तरह वह देर तक खोई-खोई, विचारसागर मे डूबती-उतराती रही। फिर उसने पिता को पत्र लिखा

"पिताजी, कीयेव नगर मे किरील नाम का एक आदमी रहता ह, उसे लोग खलडीउधेड भी कहते ह। कृपया मेरी आपबीती उस तक पहुचाकर, उस आदमी को किसी तरह समझा-बुझाकर राजी कर ले, ताकि वह खौफनाक अजदहे से टक्कर ले। क्या वह मुझ बदनसीब को दत्य अजदहे के चगुल से निकालना और इस नारकीय गुलामी से छुटकारा दिलाना नहीं चाहेगा? पिताजी, उससे विनयपूर्वक कह-सुनकर या उपहारो की भेट देकर, जैसे भी वह मेरी मदद के लिए राजी हो, उसे अवश्य मना लीजिए। पर इस बात का जरूर ख्याल रखिएगा कि कोई उल्टी-सीधी बात कहकर उसे नाराज न कर दे। मै ईश्वर से सदैव उसकी और अपनी खैर मनाती रहूगी।"

इस प्रकार राजकुमारी ने चिट्ठी लिखकर कबूतर के परो के नीचे बाध दी और उसे खिडकी मे से उडा दिया। कबूतर बादलो के पार उड गया और राजकुमारी के घर पर आ पहुचा। जब बच्चो ने उस कबूतर को देखा तो लगे जोर-जोर से चिल्लाने

"पिताजी, पिताजी, वह देखिए, बहन के पास से कबूतर आया है!"

राजा उसे देखते ही खुश हुआ। लेकिन तुरन्त उदास होकर विचारो मे खो गया। दुखी मन से सोचने लगा "क्या हत्यारा अजदहा मेरी बेटी को खा गया?" फिर उसने कबूतर को अपनी ओर बुलाया और देखा कि उसके पखो के नीचे

एक पत्र बंधा हुआ है। राजा अपनी बेटी का पत्र पढने लगा। पत्र पढकर राजा ने झटपट अपने राज्य के सभी बुजुर्गों को बुलाया और पूछा

क्या हमारे राज्य मे किरीन खलडीउधेड नाम का कोई आदमी रहता है?"

हा, महाराज! वह दूनेपर नदी के किनारे रहता है।"

"क्या उपाय किया जाए कि वह हमारे काम आ सके?"

उन सबने मिलकर आपस मे राय मशविरा किया। उसके बाद उनमे से सबसे अधिक उम्र और अनुभव के धनी वृद्धजनो को उसके पास भेजा गया। वे उसकी झोपडी पर पहुचे, उन्होंने झोपडी का दरवाजा खोला। उन सबका भय से बुरा हाल हो रहा था। उन्होंने देखा कि खलडीउधेड उनकी ओर पीठ किए जमीन पर बैठा है और हाथ में ही बारह खाले मुलायम करता जा रहा है। उन्होंने उसे बुलाने के लिए खखारा।

खलडीउधेड डर गया और बारह खाले एकसाथ चर्र-चर्र करके फट गई। खलडीउधेड ने मुडकर देखा, वे लोग सिर झुकाकर बोले "भाई, राजा ने हम लोगो को तुम्हारे पास विनयपूर्वक यह सन्देश देकर भेजा है कि " और खलडीउधेड न उनकी ओर देखता है और न उनकी बात ही सुनता है। उसे बडा गुस्सा आ रहा था कि उनकी वजह से ही उसका इतना नुकसान हो गया है।

वे वृद्धजन फिर उससे विनयपूर्वक कहने लगे और घुटनो के बल खडे होकर मिन्नते करने और गिडगिडाने लगे लेकिन खलडीउधेड उनकी कोई भी बात सुनने को तैयार न था! वे लोग उसे देर तक मनाते, गिडगिडाते रहे और जब उसने उनकी एक न सुनी तो मायूस होकर वापस चले गए।

अब क्या किया जाए? राजा उदास था और वृद्धजनो को अपनी हार का पछतावा था।

इसके बाद यह तय किया गया कि नौजवानो को उसके पास भेजा जाए।

नौजवान उसकी झोपडी पर पहुचे। और लगे प्रार्थना करने, गिडगिडाने। पर खलडीउधेड मुह लटकाए, नाक सुडसुडाता हुआ बैठा रहा, सुनी अनसुनी करता रहा। उसे उन खालो के फट जाने का इतना अफसोस जो था!

अब राजा ने नन्हे-मुन्ने बच्चो को उसे मनाने के लिए भेजा। नन्हे-मुन्ने बच्चे

आए और प्रार्थना करने लगे। फिर जैसे ही वे घुटनो के बल खडे होकर रोने लगे, तो खलडीउधेड द्रवित हो उठा। वह खुद भी रोने लगा। फिर आसू पोछते हुए बोला

"अरे, नन्हे-मुन्नो! अब चुप हो जाओ। तुम्हारी खुशी के लिए मै अजदहे से लड़ूगा।"

खलडीउधेड राजा के पास आकर बोला

"मुझे बारह पीपे राल और बारह ठेले सन के दिलाओ।"

राजा ने राल और सन मगवा दिया। खलडीउधेड ने सन को अपने शरीर पर खूब अच्छी तरह लपेटा और फिर सारी की सारी राल से सन को खूब भिगो लिया। फिर उसने चार मन की तलवार उठाई और खूखार अजदहे से भिडने चल पडा।

"किरील, तुम मुझसे लडने आए हो या दोस्ती करने?" अजदहे ने उससे पूछा।

"तुझसे दोस्ती? तुझसे लडने आया हू, दुष्ट!"

फिर क्या था? दोनो भिड गए—धरती कापने लगी। अजदहा लपककर अपने दातो से झपट्टा मारता और किरील के शरीर से राल का टुकडा उधेड लेता, फिर से लपककर झपट्टा मारता और सन का टुकडा नोच लेता। किरील अपनी तलवार से अजदहे पर ऐसा वार करता, कि उसे जमीन मे धसा देता। अजदहे के अग-अग से लपटे निकल रही थी, वह तीखी गर्मी से झुलसा जा रहा था। वह जल्दी से द्नेपर नदी मे प्यास बुझाने और ठण्डा होने के लिए भागा। इस बीच किरील खलडीउधेड ने फिर से अपने शरीर पर ढेर सारा सन लपेटा और उस पर भली-भाति राल पोत दी।

दुष्ट अजदहा नदी से निकलकर खलडीउधेड की ओर लपका तो उसने तलवार का जोरदार वार किया। अजदहा थोडा हटकर फिर लपका, इस बार किरील ने सभलकर तलवार से लगातार कई वार किए।

किरील अजगर के दात खट्टे करता जा रहा था, वह बिना रुके प्रहार पर प्रहार करता रहा, धुए का बादल-सा उठने लगा, चिनगारिया उडने लगी। किरील

न दुष्ट अजदहे को जलाकर मार कर डाला जैसे लोहार अपनी भट्टी मे लोहा गला डालता है। दैत्याकार अजदहा मुश्किल से सास ले रहा था। उसके नीचे धरती तक कराह रही थी आततायी के भार से दबी जा रही थी।

टीलो पर जमा लोग बुत बने यह युद्ध देख रहे थे, हाथ बाधे प्रतीक्षा कर रहे थे कि अब आगे क्या होगा? तभी अजदहे ने तडफडाकर दम तोड दिया। लोग किरील की वाहवाही करने लगे।

सो किरील ने अजदहे को मार डाला और राजा की बेटी को दैत्य के चगुल से छुडाकर पिता को सौप दिया।



चोर

यह कहानी बड़ी पुरानी है। तब शायद हमारे बाप-दादे भी पैदा न हुए थे। उन दिनों एक गरीब आदमी किसी तरह दो-चार की खेती द्वारा अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। पति-पत्नी के अलावा उस परिवार में एक बेटा भी था, पर ऐसा निखट्टू कि किसी को नसीब न हो। वह दिन-दिन भर बेकार समय गंवाया करता और अलावघर पर बैठा रहता। कभी मां उसे खाना देती तो खाने में खा लेता और खाना न मिलता तो भूखा ही बैठा रहता। पर काम-काज की बात से उसे मतलब न था। बस, मटरगश्ती किया करता था।

मां-बाप बेटे के लिए परेशान रहते। एक दिन बूढ़ा पिता बोला।

"बेटे, तेरी काहिली से जी भर चुका है। आखिर हम क्या करें? तू हमारी छाती का कांटा बन गया है! सभी बच्चे मां-बाप की मदद करते हैं, उन्हें सहारा देते हैं और तू मटरगश्ती करता है!"

बूढ़े मां-बाप देर तक दुखी होते रहे, रोते-कलपते रहे। पर कोई लाभ न हुआ। एक दिन बुढ़िया ने कहा



"बाबा, जरा औलाद का ख्याल करो। लडका सयाना हो गया है, लेकिन पूरा काठ का उल्लू है। इसे कोई काम सीखने के लिए ही भेज दो – शायद पराये लोग ही इसे कुछ सिखा दे।"

पिता ने बेटे को खेत मे काम करने भेज दिया। लडका वहा तीन दिन रहा और भाग खडा हुआ। फिर अलावघर पर बैठकी जमाकर मक्खिया मारने लगा।

बूढे पिता ने पुत्र को डाटा-फटकारा और उसे दर्जी के यहा काम सीखने के लिए भेज दिया। वह दर्जी के यहा से भी भाग निकला। उसे लोहार और मोची का काम सीखने के लिए भी भेजा गया – कोई असर न पडा। लडका फिर भागकर घर आ गया और अपने पुराने अड्डे अलावघर पर जा बैठा। पिता पुत्र से परेशान हो गया। आखिर अब क्या किया जाए? बूढे ने एक युक्ति सोची और लडके से बोला

"ठहर, बच्चू, अब तुझे काले कोसो भेजे देता हू, वहा दूसरे राजा का राज है। देखता हू कि अब तू कैसे भागता है?"

बाप-बेटे चल पडे, थोडी देर चले या देर तक चलते रहे – यह तो नही मालूम। पर चलते-चलते वे एक काले बियाबान जगल मे जा पहुचे। वे थककर चूर हो गए थे। अचानक उन्होने एक जला हुआ ठूठ देखा। बूढा सुस्ताने के लिए उस ठूठ पर बैठ गया और बोला

"ओह, मै आज कितना थक गया हू!"

इतना कहते ही न जाने कहा से एक छोटा-सा बूढा, जिसके शरीर पर बेपनाह झुर्रिया थी और घुटनो तक लम्बी, हरी दाढी हवा मे फहरा रही थी, वहा आकर बोला

"बोलो, क्या चाहिए?"

बूढा हैरान था यह अनोखा आदमी कहा से आ टपका, और बोला

"मैने तो तुम्हे नही बुलाया।"

"कैसे नही बुलाया? ठूठ पर बैठते ही तुमने कहा था 'ओह!'"

"हा, मै थक गया था। थकान के कारण मेरे मुह मे 'ओह!' निकल पडा। और, भाई, तुम कौन हो?"

"मैं जगल का राजा ओह हू। तुम कहा जा रहे हो?"

"लडके को काम से लगाने या कोई हुनर सिखाने के लिए परदेश ले जा रहा हू। शायद भले लोगो की सगत मे अक्ल की चार बाते सीख जाए, अपने गाव मे तो पडा-पडा बरबाद ही होगा। जहा-जहा इसे काम पर लगाया—भागकर चला आया। बस, दिन-दिन भर अलावघर पर बैठा रहता है!"

"चलो, इसे यही छोड दो, मेरे यहा काम करेगा और शऊर की बाते सीखेगा। बस, शर्त यह है कि तुम साल भर बाद अपना बेटा लेने आओगे और उसे पहचानकर ही घर ले जाओगे—अगर न पहचान पाए तो उसे मेरे यहा एक साल और बिताना होगा। बोलो, मजूर है?"

"हा, मजूर है," बूढे बाप ने कहा।

उसके बाद उन्होंने एक दूसरे के हाथ पर हाथ मारा। और इस तरह शर्त पक्की करके बूढे बाप ने बेटे को ओह के पास छोडा और अपने घर की ओर चल पडा।

ओह उस लडके को एक दूसरी दुनिया मे ले आया। जमीन के नीचे पाताल लोक मे ओह का हरा घर था। उस घर मे सब कुछ हरे रग का था घर की दीवारे, रसोई, पलग, फर्नीचर! यहा तक कि ओह की पत्नी और बच्चे भी हरे रग के थे। और घर के नौकर-चाकर भी इसी रग के थे। ओह ने लडके को उठाया और खाना लाने के लिए कहा। उसे वहा हरे रग की रोटी और हरा शोरबा खिलाया गया। और जब उसने पानी पिया तो वह भी हरा था।

"अच्छा, अब काम का वक्त हो गया है। जाओ, जगल से लकडी काट लाओ।"

लडका चल पडा। लकडी काटना तो दूर रहा, घास पर लेटकर खर्राटे भरने लगा। ओह जगल मे पहुचा, वहा उसने लडके को सोता हुआ पाया। ओह ने तुरन्त अपने नौकर को आवाज दी और लकडिया इकट्ठी करने के लिए कहा, फिर उसने लडके को लकडी के ढेर पर लिटाकर नीचे से आग लगा दी।

वह युवक जलकर भस्म हो गया। ओह ने उस राख को हवा मे उडा दिया, मगर एक कोयला राख मे गिर गया। ओह ने उस कोयले पर प्राण-जल छिडक दिया। पानी छिडकते ही वह लडका ऐसे उठ बैठा, जैसे कुछ हुआ ही न हो।

ओह ने उसे फिर से लकडी काटकर लाने के लिए भेजा। वह फिर सो गया। ओह ने पहले की तरह आग जलाने का हुक्म दिया। जब आग दहकने लगी तो फिर उसे आग मे झोक दिया, राख हवा मे छितरा दी और कोयले पर प्राण-जल छिडक दिया। युवक जीवित हो गया और एक ऐसा नौजवान बनकर निकला कि उसे देखते ही बनता था। ओह ने उसे तीसरी बार भी जलाकर राख कर दिया, फिर से कोयले पर प्राण-जल छिडका – इस तरह एक निखट्टू लडका एक सुडौल, कर्मवीर नौजवान बन गया। वह भी ऐसा, जिसके बारे मे न सोचा गया, न अनुमान ही लगाया गया, सिर्फ परीकथाओ मे ही ऐसे नायको के रूप-गुण का बखान किया जाता है।

इस तरह वह युवक साल भर तक ओह के घर मे रहा। उधर पिता अपना बेटा वापस लेने चल पडा। जगल मे उसी जले हुए ठूठ पर बैठकर बोला

"ओह!"

ओह उस ठूठ के नीचे से बाहर निकल आया

"नमस्ते, दादा।"

"नमस्ते, ओह। मै वेटे को लेने आया हू।"

"आओ, पहचानकर बेटे को ले जाओ! यदि उसे न पहचान पाए तो तुम्हारा वेटा मेरे यहा एक साल ओर काम करेगा।"

वे दोनो हरे घर मे पहुचे। ओह ने एक थैला वाजरा विखरा दिया, देखते ही देखते गौरैयो का झुड वाजरे पर टूट पडा।

"जाओ, अपने वेटे को पहचान लो!"

बूढा वाप अपने वेटे को ढूढने लगा। सभी चिडिया तो एक जैसी थी। वह वेटे को न पहचान पाया।

"अब तुम घर जाओ," ओह ने कहा। "अभी साल भर तक तुम्हारा वेटा यही रहेगा।"

दूसरा साल आया। बूढा ओह से मिलने चल पडा। जगल मे आकर उसी ठूठ पर बैठ गया

"ओह!"

यह सुनते ही ओह ठूठ के नीचे से वाहर निकल आया। "आओ, अपने वेटे को पहचान लो।" यह कहकर ओह उस बूढे को अपने वाडे में ले आया। वहा सिर्फ भेडे ही भेडे थी। वूढा वाप फिर अपने बेटे को न पहचान पाया।

"अब तुम घर जाओ," ओह ने कहा। "एक साल और तुम्हारा वेटा यही रहेगा।"

बूढा वाप दुखी हो गया। लेकिन करता भी तो क्या? शर्त ही ऐसी थी। वूढा घर लौट गया।

तीसरा साल आया। वूढा फिर अपने वेटे को लेने चल पडा। वह जगल से होकर चला जा रहा था कि लगा एक मक्खी उसके कान के पास भनभना रही है।

वूढे ने हाथ हिलाकर उसे भगा दिया। लेकिन थोडी देर मे फिर वही मक्खी

बूढे के कान पर आ बैठी। अचानक बूढे के कान में सुनाई दिया

"पिताजी, मै आपका पुत्र हू। ओह ने मुझे तरह-तरह की विद्याए सिखला दी हे। मै यहा नजर बचाकर आपकी मदद करने आया हू। वह आपको फिर मुझे पहचानने के लिए कहेगा और बहुत-से कबूतरो को चारा चुगने के लिए छोड देगा। आप किसी कबूतर को न चुनिएगा, सिर्फ उसी कबूतर को पहचानकर चुन लीजिएगा, जो छाती मे सिर गडाए बैठा होगा और दाना नही चुग रहा होगा।"

बूढा खुश होकर बेटे से थोडी देर और बतियाना चाहता था, लेकिन मक्खी भनभनाते हुए कही दूर उड गई।

बूढा जले हुए ठूठ के पास पहुचकर बोला

"ओह!"

ठूठ के नीचे से ओह निकलकर बाहर आया और उसे पाताल लोक मे ले गया। उसे अपने हरे घर मे ले आया, जमीन पर दाना छितरा दिया ओर सारे कबूतर उसे जल्दी-जल्दी चुगने लगे। वे सारे के सारे एक जैसे लग रहे थे।

"हा, तो अपने बेटे को पहचान लो।"

सभी कबूतर दाना चुगने मे लगे हुए थे, लेकिन एक कबूतर अपने पख फुलाए, छाती मे सिर गडाए बेठा था और दाना नही चुग रहा था।

"वह रहा मेरा बेटा!"

"अच्छा, तो तुम बेटे को पहचान ही गए। अब तुम इसे ले जा सकते हो।"

ओह ने उस कबूतर को पकडकर अपनी बाई तरफ उडा दिया। ओर वह पलक झपकते ही ऐसा फुर्तीला नौजवान बन गया कि बस देखते ही रह जाओ। बूढा पिता खुशी से उछल पडा, बेटे को उसने सीने से लगाया, प्यार से चूमा और आख भरकर देखा। बेटा भी इतने दिन बाद पिता से मिलकर बहुत खुश हुआ।

पिता-पुत्र घर की राह चल पडे। वेटा अपने वारे मे वह सब बतला रहा था कि कैसे उसने तीन वर्ष ओह के यहा विताए।

"वेटे, तुम तीन साल तक ओह के यहा रहे, लेकिन कोई कमाई नहीं हुई, हम लोग वैसे ही गरीब बने रह गए। लेकिन मुझे इसका कोई अफसोस नहीं। गनीमत है कि तू सही-सलामत वहा से लौट आया!"

"पिताजी, अफसोस मत करिए, सब ठीक हो जाएगा।"

पिता-पुत्र चले जा रहे थे कि अचानक उन्हे जगल मे शिकारी मिले, दूसर इलाके के जमीदार लोग लोमडी का शिकार करने आए थे। लडके ने झट से शिकारी कुत्ते का भेस बना लिया और पिता से वोला

"जमीदार लोग तुमसे शिकारी कुत्ते का सौदा करेगे। तीन सौ रूबल मे वेच देना, बस पट्टा न बेचना।"

यह कहकर वह खुद एक लोमडी के पीछे भागा और उसे दबोच लिया। शिकारी बूढे के पास झट से पहुचे। उनमे से एक ने कहा

"बाबा, यह तुम्हारा कुत्ता है?"

"हा, मेरा है।"

"लाजवाब कुत्ता है! उसे वेच डालो!"

"खरीद लो!"

"कितने का बेचोगे?"

"तीन सौ रूवल मे, लेकिन पट्टे के विना दूगा।"

"कुत्ते के पट्टे मे कौन-सी खास बात है? इससे बढिया पट्टा खरीद लेगे। लो, रकम सभालो और कुत्ते को हमारे हवाले करो।"

शिकारी ने कुत्ता खरीदा और उसे लोमडी को पकडने के लिए छोड दिया। लेकिन वह लोमडी का शिकार करने के बजाय जगल मे कही गायब हो गया। कुत्ता फिर से युवक वन गया और अपने पिता के पास आ पहुचा।

पिता ने कहा

"वेटा, सिर्फ तीन सौ रूबल मे क्या होगा? यह तो ऊट के मुह मे जीरा है। घर-गृहस्थी और झोपडी की मरम्मत मे ही खर्च हो जाएगा। लेकिन गुजारा करने के लिए क्या वचा?"

"पिताजी, चिन्ता न कीजिए। रास्ते मे अभी चिडीमार मिलेगे, वटेर का शिकार कर रहे होगे। मै वाज वन जाऊगा और तुम मुझे उनके हाथ तीन सौ रूबल मे वेच देना, वस टोपी मत वेचना।"

वे मैदान पार करते हुए अपने घर चले जा रहे थे, इतने मे चिडीमार आ पहुचे। उन्होने वूढे के हाथ मे एक वाज देखा। एक चिडीमार ने कहा

"वावा, इस वाज को वेच डालो।"

"खरीद लो।"

"कितने का वेचोगे?"

"तीन सौ रूवल मे, लेकिन टोपी के विना दूगा।"

"हमे तुम्हारी टोपी नही चाहिए! हम इसके लिए मखमल की टोपी वनवा देगे।"

वूढे ने तीन सौ रूवल लेकर वाज को वेच दिया। और फिर घर की राह चल पडा।

जैसे ही चिडीमार-शिकारियो ने उस वाज को वटेरो पर छोडा, वह सीधे जगल मे उड गया और नीचे जमीन से टकराते ही फिर वाका जवान वनकर झट से अपने पिता के पास पहुच गया।

पिता ने कहा

"हा, अव थोडा गुजर-वसर हो जाएगा!"

"पिताजी, अभी तो कसर रह गई है। जव हम लोग मेले के करीव पहुचेगे, मै घोडा वन जाऊगा और तुम मुझे वहा वेच देना। तुम्हे एक हजार रूवल मिल

जाएगे। बस, मेरी लगाम मत बेचना।"

वे दोनो मेले मे आ पहुचे। बेटे ने घोडे का रूप धारण कर लिया। वह भी ऐसा चचल और फुर्तीला कि करीब आने मे डर लगे। बूढा मुश्किल से उसकी लगाम सभाल रहा था, लगता था अभी हाथ से छूटी कि छूटी। घोडा सुमो से जमीन खोद रहा था। देखते ही देखते उस घोडे के इर्द-गिर्द खरीदार और तमाशबीन इकट्ठे होने लगे। घोडे का मोल-भाव शुरू हो गया।

"लगाम के बिना घोडे की कीमत एक हजार रूबल है। इससे कम मे न बेचूगा।"

"घोडे की लगाम हमारे किस काम की! हम जरी के कामवाली बढिया लगाम खरीद लेगे," सौदागरो ने कहा।

सौदागर पाच सौ रूबल देने लगे। लेकिन बूढा अपनी जिद पर अडा रहा। अचानक एक काना जिप्सी वहा आकर मोल-भाव करने लगा

"बोलो, इस घोडे का क्या लोगे?"

"लगाम के बिना एक हजार रूबल।"

"बाप रे, इत्ता महगा और वह भी लगाम के बिना। यह लो पाच सौ रूबल, लगाम समेत घोडा बेच दो।"

"रहने दो, हाथ न लगाना।"

"अच्छा, चलो, छह सो रूबल ले लो।"

वह जिप्सी मोल-भाव करता हुआ अपनी कीमत पर अडा रहा। जब सौदा न पटा तो बोला

"अच्छा, बाबा, लो, एक हजार रूबल ही ले लो, बस लगाम के साथ दे दे।"

"नही, लगाम मेरी है!"

"भले आदमी, कही तुमने बिना लगाम का घोडा भी बिकते देखा है? लगाम

के विना मे उसे तुम्हारे हाथ से लूगा कैसे?"

"घोडा खरीदो या न खरीदो – म इसकी लगाम न वेचूगा।"

"अरे वावा, लगाम के पाच रूवल और दे दूगा। लाओ, घोडा मुझे दो!"

बूढे ने सोचा "दो कौडी की लगाम के पाच रूवल मिल रहे है। आखिर उसे वेचने मे हर्ज ही क्या है?"

बूढे ने लगाम समेत घोडा वेच दिया।

दोनो ने हाथ पर हाथ मारकर सौदे की वात पक्की की। बूढा घर की ओर चल पडा। उधर जिप्सी खरीदार उचककर घोडे पर सवार हो गया। लेकिन यह जिप्सी कोई और नही, खुद ओह था। उसने लडके को चकमा दे ही दिया! घोडा तीर की तरह उड चला। वह पेडो से ऊपर और वादलो से नीचे, हवा से वाते करता उडता चला जा रहा था। वह ओह को गिराने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसे गिरा न पाया।

ओर लो, वे सीधे धरती के नीचे, पाताल लोक मे जा पहुचे। घोडे को पेड मे वाधकर ओह घर के अदर गया।

"यह लो, शैतान के वच्चे को पकड लाया," ओह ने अपनी पत्नी से कहा। "शाम को इसे ले जाकर पानी पिला लाना।"

शाम को ओह की पत्नी घोडे को पानी पिलाने नदी पर ले गई। पानी पीते-पीते घोडा गहरे पानी मे उतरने लगा। ओह की पत्नी उसके पीछे-पीछे चली। उसे बुरा-भला कह रही थी लेकिन वह था कि गहरे पानी मे उतरता ही जा रहा था। अचानक घोडे ने सिर झटका, लगाम औरत के हाथ से छूट गई। घोडा पानी मे कूदा और कवई मछली वन गया। ओह की पत्नी चिल्लाने लगी, ओह झपटकर भागता हुआ आया, पलक झपकते पाइक मच्छ वन गया और लगा कवई का पीछा करने। पाइक ने कहा

"प्यारी कवई, प्यारी कवई, जरा सिर इधर तो घुमाओ, आओ, दो बात कर ले।"

लेकिन कवई ने उत्तर दिया

मुझसे बात करनी है, तो बोलती जाओ, मुझे तो सिर घुमाए बिना ही सुनाई दे रहा है।"

बहुत देर तक पाइक मच्छ कवई का पीछा करता रहा। कवई मछली थक गई। तभी उसने नदी के किनारे एक शाही स्नानागार देखा। राजा की बेटी वहा नहाने आई थी। कवई अब रत्नमणि जडी सोने की अगूठी बन गई और राजकुमारी के पैर से जा टकराई। राजकुमारी ने अगूठी देखी।

'अहा, कितनी सुन्दर अगूठी है!" राजकुमारी ने उसे उठाकर अगुली म पहन लिया।

घर लौटकर राजकुमारी न अगूठी की प्रशसा करते हुए कहा

"पिताजी, देखिए, मैंने कितनी सुन्दर अगूठी पडी पाई है!"

राजा उस सुन्दर अगूठी की कारीगरी और रत्नमणि देखकर मन ही मन बहुत खुश हुआ।

ओह ने देखा कि कवई मछली अगूठी बनकर राजमहल मे पहुच गई है। उसने भी आव देखा न ताव जौहरी का भेस बनाया और राजदरबार मे जा पहुचा

'महाराजाधिराज की जय हो! गुस्ताखी माफ हो, हुजूर! मै आपके दरबार मे एक जरूरी काम से आया हू। मेहरबानी करके राजकुमारी से कहकर मेरी अगूठी वापस दिलवा दीजिए। मै उसे अपने राजा के [illegible] रहा था कि वह अचानक नदी तट पर गिर गई। मुझे [illegible] कि [illegible] को यह मिली है।"

राजा ने राजकुमारी को [illegible]

"बेटी, यह अगूठी [illegible] दो। [illegible]

राजकुमारी रोने और पैर पटकने लगी

"पिताजी, अगूठी मै नही दूगी। इसे मुह मागी कीमत देकर खरीद लीजिए।"

ओह भी हार माननेवाला न था। बोला

"महाराज, अगर यह अगूठी मैने अपने राजा को न पहुचाई, तो मै जिदा नही बचूगा।"

राजा बेटी को मनाने लगा

"दे दो, बेटी, क्यो हमारे कारण किसी को कष्ट पहुचे।"

"अगर ऐसा है तो लो!" राजकुमारी ने कहा। "यह अगूठी न तुम्हारी रहेगी और न मेरी!"

और उसने अगूठी जमीन पर फेक दी। अगूठी गिरते ही मोती बन गई और ढेर सारे मोती चारो तरफ बिखर गए। लेकिन एक नन्हा-सा मोती लुढका और राजकुमारी के पास आकर उसके पैर तले दब गया। उधर ओह हस बनकर मोती चुगने लगा। बीन-बीनकर मोती चुगता रहा, चुगता रहा। इस तरह उसने सारे मोती चुग लिए। वह चुगे हुए मोतियो के कारण मुश्किल से चल पा रहा था। राजकुमारी के पैर तले दबा हुआ एक मोती उसकी नजरो से बचा रह गया। वह मोती राजमहल के फर्श पर लुढका और लुढकता-लुढकता बाज बनकर हस पर टूट पडा।

हस का पेट वैसे ही फटा जा रहा था। वह जान बचाने के लिए उड न पाया। इधर बाज ने हस पर अपनी पैनी चोच से ताबडतोड कई प्रहार किए। हस का वही दम निकल गया। इस तरह ओह के प्राण पखेरु उड गए। बाज धरती से टकराया और एक खूबसूरत नौजवान बन गया। पहली नजर मे ही राजकुमारी उसे अपना दिल दे बैठी, उसे प्यार करने लगी। वह अपने पिता से बोली

"पिताजी, यह युवक ही मेरा भावी पति हो सकता है। मै किसी और से शादी नही करुगी।"

राजा तो नही चाहता था कि उमकी फूलो-मी मुकुमार बेटी की शादी एक मामूली युवक से हो। वह सोच मे पड गया, लेकिन करता क्या। राजकुमारी के विवाह की वडे धूम-धाम मे तैयारिया होने लगी। मेहमानो के लिए निमत्रण भेजे गए। तरह-तरह के पकवान और सेकडो तरह के व्यजन वनाकर तेयार किए गए। पेय की कमी न थी। राजकुमारी के विवाह की ऐसी दावत हुई कि लोग उसे वरसो तक याद करते रहे।

ओर नन्हे-मुन्नो, मै भी उस दावत मे माजूद था। मैने भी खूब छककर खाया। शहद और सोमरस तो इतना पिया कि मुह मे न समा रहा था। दाढी पर बहने लगा। बहता रहा, बहता रहा और मेरी दाढी उसी दिन मे सफेद हो गई।



लुढकनमटर

यह बात बहुत पुरानी है। किसी गाव मे एक आदमी रहता था। उसके छह बेटे थे और एक बेटी। एक दिन बेटे खेत जोतने के लिए जाने लगे। उन्होने अपनी बहन से खेत पर खाना पहुचाने के लिए कहा।

"लेकिन तुम लोग खेत मे किस जगह पर काम करोगे? मुझे तो मालूम नही,' बहन ने पूछा।

भाइयो ने उत्तर दिया

"ठीक है। हम अपने घर से खेत के उस छोर तक एक हलरेखा बना देगे, जहा हम खेत जोतेगे। तुम इस हलरेखा को देखती हुई चली आना।"

यह कहकर वे खेत की ओर चल दिए।

खेत के पास जगल मे एक भयानक अजदहा रहता था। उसने भाइयो द्वारा बनाई गई हलरेखा को मिटाकर अपने घर की तरफ जानेवाली एक नई हलरेखा बना दी। बहन अल्योन्का अपने भाइयो का खाना लेकर हलरेखा के सहारे चलती गई। चलते-चलते वह अजदहे के अहाते मे पहुच गई, वहा अजदहे ने उसे पकड लिया।

शाम होने पर छहो भाई अपने घर लौटे और मा से बोले

राजा तो नहीं चाहता था कि उसकी फूलो-सी सुकुमार बेटी की शादी एक मामूली युवक से हो। वह सोच मे पड गया, लेकिन करता क्या! राजकुमारी क विवाह की बडे धूम-धाम से तैयारिया होने लगी। मेहमानो के लिए निमत्रण भेजे गए। तरह-तरह के पकवान और सैकडो तरह के व्यजन बनाकर तैयार किए गए। पेय की कमी न थी। राजकुमारी के विवाह की ऐसी दावत हुई कि लोग उसे बरसो तक याद करते रहे।

और नन्हे-मुन्नो, मै भी उस दावत मे मौजूद था। मैने भी खूब छककर खाया। शहद और सोमरस तो इतना पिया कि मुह मे न समा रहा था। दाढी पर बहने लगा। बहता रहा, बहता रहा और मेरी दाढी उसी दिन से सफेद हो गई।



लुढकनमटर

यह बात बहुत पुरानी है। किसी गाव मे एक आदमी रहता था। उसके छह बेटे थे और एक बेटी। एक दिन बेटे खेत जोतने के लिए जाने लगे। उन्होने अपनी बहन से खेत पर खाना पहुचाने के लिए कहा।

"लेकिन तुम लोग खेत मे किस जगह पर काम करोगे? मुझे तो मालूम नही," बहन ने पूछा।

भाइयो ने उत्तर दिया

"ठीक है। हम अपने घर से खेत के उस छोर तक एक हलरेखा बना देगे, जहा हम खेत जोतेगे। तुम इस हलरेखा को देखती हुई चली आना।"

यह कहकर वे खेत की ओर चल दिए।

खेत के पास जगल मे एक भयानक अजदहा रहता था। उसने भाइयो द्वारा बनाई गई हलरेखा को मिटाकर अपने घर की तरफ जानेवाली एक नई हलरेखा बना दी। बहन अल्योन्का अपने भाइयो का खाना लेकर हलरेखा के सहारे चलती गई। चलते-चलते वह अजदहे के अहाते मे पहुच गई, वहा अजदहे ने उसे पकड लिया।

शाम होने पर छहो भाई अपने घर लौटे और मा से बोले



"हम दिन भर हल चलाते रहे, खेत जोतते रहे और तुमने हमारे लिए खाना तक नही भेजा!"

"भेजा कैसे नही? तुम्हारा खाना लेकर अल्योन्का गई थी! मै तो यह सोच रही थी कि वह तुम लोगो के साथ ही घर लौटेगी। कही मेरी बिटिया रास्ता तो नही भटक गई?"

"हम जाकर उसे ढूढ लाते है," भाइयो ने मा से कहा।

इस प्रकार वे छहो भाई अजदहे की बनाई हलरेखा पर चलकर अजदहे के यहा पहुच गए। उनकी बहन वही पर थी।

"मेरे प्यारे भाइयो, अभी अजदहा उडता आएगा। कहा छिपाऊ तुम्हे मै? वह तो तुम्हे खा जाएगा!" बहन ने दुखी होकर कहा।

अभी यह बात खत्म भी न हो पाई थी कि फुफकारता हुआ अजदहा आ पहुचा।

"यहा तो मानुष गन्ध आ रही है!" अजदहे ने फुफकारते हुए कहा। "क्यो रे, जवानो, दोस्ती करने आए हो या दुश्मनी?"

"दुश्मनी!" वे एक स्वर मे चिल्लाए।

"तो फिर आओ, लोहे के खलिहान मे ही फैसला होगा!"

वे लोहे के खलिहान मे पहुच गए। लेकिन यह लडाई झटपट खत्म हो गई। अजगर के पहले ही वार मे वे चारो खाने चित्त हो गए और फौलादी खलिहान के फर्श मे जा धसे। अजदहे ने उन्हे बाहर निकाला तो उनका दम फूल रहा था। उनमे थोडी जान थी। अजदहे ने उन्हे एक काल-कोठरी मे फेंक दिया।

माता-पिता अपने बेटो की वापसी का इन्तजार करते रहे, एक-एक पल उनकी बाट जोहते रहे। पर वे घर वापस न लौटे।

एक बार मा नदी पर कपडे धोने के लिए गई। रास्ते मे उसने एक नन्हे मटर के दाने को लुढकता हुआ देखा। उसने मटर के दाने को उठाकर खा लिया।

थोडे समय बाद उनके घर मे एक बेटा पैदा हुआ। माता-पिता ने बेटे का नाम रखा लुढकनमटर।

समय बीतता गया। बेटा बडा होने लगा। कम उम्र मे ही वह खूब बडा हो गया।

एक दिन लुढकनमटर अपने पिता के साथ मिलकर कुआ खोद रहा था। पिता पुत्र काफी गहराई तक खोदते रहे, मेहनत करते रहे। अचानक बीच मे एक भारी भरकम चट्टान आ गई। पिता चट्टान को खोदने और उठाने मे मदद लेने के लिए लोगो को बुलाने गए। लेकिन मददगारो के आने से पहले ही लुढकनमटर काम मे जुट गया और उसने चट्टान को उठाकर बाहर फेक दिया। लोगो ने वहा पहुचकर देखा तो दग रह गए। उसकी अपार शक्ति से डर गए और उन्होंने उसे मार डालने का निर्णय कर डाला। इस बीच लुढकनमटर ने एक और करिश्मा कर दिखाया। उसने चट्टान को उठाकर हवा मे ऊपर उछाला और पलक झपकते ही हाथ पर रोक लिया। लोगो ने जब उसकी ताकत का ऐसा चमत्कार देखा तो वे भाग खडे हुए।

पिता-पुत्र फिर से जमीन खोदने लगे। वे लगातार खोदते चले जा रहे थे। अचानक उन्हे लोहे का एक बहुत बडा टुकडा मिला। लुढकनमटर ने उसे बाहर निकालकर छिपा दिया।

एक दिन लुढकनमटर ने अपने माता-पिता से पूछा

"क्या मेरे कोई भाई-बहन नही थे?"

"बेटा, कभी तुम्हारी एक बहन थी और छह भाई। खूब हट्टे-कट्टे और जवान " माता-पिता ने लुढकनमटर को सारा किस्सा कह सुनाया।

"अच्छा तो मै उन्हे खोजकर लाता हू," लुढकनमटर ने कहा।

माता-पिता ने अपने इस बेटे को बार-बार रुकने को कहा और मिन्नते की।

"बेटे, तुम वहा मत जाओ। तुम्हारे भाई भी गए थे और वे छह के छह लौटकर नहीं आए। तुम तो बिल्कुल अकेले हो। तुम दुश्मन का मुकाबला कैसे कर सकोगे?"

"नहीं, मैं जरूर जाऊगा। अपने भाई-बहन को कैद से छुडाकर लाऊगा।"

उसने लोहे का वह टुकडा उठाया जो जमीन खोदते समय मिला था और उसे लेकर लोहार के यहा जा पहुचा।

"मुझे खूब बडी तलवार बना दो," उसने लोहार से कहा।

लोहार ने खूब बडी और भारी-भरकम तलवार बना दी। वह इतनी वजनी थी कि कई लोग उसे उठाकर लोहारखाने से बाहर लाए। लेकिन लुढकनमटर ने उसे सहज ही उठाया, उसकी मूठ पकडकर हवा मे लहराया और खूब ऊपर उछाल दिया। फिर पिता से बोला

"मै अब सोने जा रहा हू। बारह दिन बाद जब तलवार उडकर वापस आ जाए तब मुझे जगा देना।"

वह बारह दिन तक गहरी नीद सोता रहा। तेरहवे दिन वह तलवार सनसनाती हुई नीचे उतरती दिखलाई दी। पिता ने लुढकनमटर को जगाया। पुत्र ने नीद से जागते ही मुट्ठी ऊपर उठाई। तलवार उसकी मुट्ठी से टकराकर दो टुकडे हो गई और जमीन पर गिर पडी।

"ऐसी तलवार भला किस काम आएगी? मै अपनी बहन और भाइयो की खोज के लिए यह तलवार नही ले जा सकता। कोई दूसरी ही तलवार होनी चाहिए," लुढकनमटर ने कहा।

खण्डित तलवार लेकर वह फिर लोहार के पास जा पहुचा।

"सुनो, इस टूटी तलवार से फिर एक नई तलवार बना दो, जो मेरे मन माफिक हो!"

लोहार ने और बडी तलवार बना दी। लुढकनमटर ने फिर उसे आकाश की ओर उछाला और पुन बारह दिन के लिए गहरी नीद सो गया। तेरहवे दिन वह तलवार सनसनाती, आवाज करती नीचे की ओर उतरती दिखलाई दी। धरती थर-थर कापने लगी। लुढकनमटर को जगाया गया, वह उछलकर खडा हो गया। उसने अपनी मुट्ठी ऊपर उठाई, तलवार उससे आ टकराई, मगर पहले की तरह टूटी नही, बस जरा-सी मुड जरूर गई।

"हा, यह तलवार मेरे काम की है। इसे साथ लेकर बहन-भाइयो को खोजने

जा सकता हू। मा, रास्ते के लिए रोटिया बना दो और रस्क तैयार कर दो। मुझे झटपट यहा से चल देना होगा।"

उसने वह तलवार ली, रस्क रखकर अपने माता-पिता से विदा ली और निकल पडा।

वह अजदहे की बनी हलरेखा पर चल दिया जो तब तक काफी मिट चुका था। चलता-चलता जगल मे जा पहुचा। जगल में काफी देर तक चलता रहा, आगे बढता रहा। इस तरह एक बहुत बडे अहाते तक पहुच गया। अहाता चहारदीवारी से घिरा हुआ था। उसे पार करके वह एक विशाल महल मे जा पहुचा। वहा उसे अजदहा तो नही मिला। पर बहन अल्योन्का मे मुलाकात हो गई।

"नमस्ते, रूप की रानी!"

"नमस्ते, साहसी नोजवान! तुम यहा किसलिए आए हो? अजदहा अभी आकर तुम्हे खा जाएगा।"

"शायद न खा पाए! लेकिन यह तो बताओ कि तुम कोन हो?"

"मै अपने माता-पिता की इकलौती बेटी थी। अजदहे ने मुझे कैद कर लिया। मेरे छह भाइयो ने मिलकर अजदहे का मुकाबला करना चाहा, मुझे कैद से छुडाने की कोशिश की। पर वे नाकामयाब रहे।"

"मगर वे हे कहा?"

"अजदहे ने उन्हे काल-कोठरी मे डाल रखा हे। मे तो यह भी नही जानती कि वे जिन्दा हे या मर गए।"

"शायद मै तुम्हे कैद से छुडा सकू।" लुढकनमटर ने जवाब दिया।

"तुम्हारी बिसात क्या? जब मेरे छह भाई मुझे आजाद न करा पाए, मुझे अजदहे की केद मे न छुडा पाए, तो भला तुम अकेले उसका क्या मुकाबला कर पाओगे!"

"ऐसी भी क्या बात हे?" लुढकनमटर ने उत्तर दिया।

वह खिडकी पर बैठकर अजदहे का इन्तजार करने लगा।

इसी वक्त अजदहा वापस लौटा। वह जोर-जोर से नाक सुडसुडाता हुआ बोला

"यहा तो मानुष गन्ध आ रही है!"

"बेशक तुम्हे मानुष गन्ध आ रही होगी — मै जो यहा पर मौजूद हू," लुढकनमटर ने कहा।

"अहा, तो तुम हो यहा! बोलो, तुम क्या चाहते हो, दुश्मनी या दोस्ती?"

"बेशक दुश्मनी! तुमसे तो लडने आया हू। दोस्ती कैसी?" लुढकनमटर ने तपाक से जवाब दिया।

"तो फिर चलो लोहे के खलिहान मे। अभी फैसला हुआ जाता है।"

"चलो, चलते है!"

वे लोहे के खलिहान मे जा पहुचे।

"चलो, प्रहार करो!" अजदहे ने कहा।

"नही, पहल तुम्हे करनी है!" लुढकनमटर ने जवाब दिया।

अजदहे ने लुढकनमटर पर भरपूर वार किया। वह टखनो तक लोहे के खलिहान के फर्श मे जा धसा। लेकिन लुढकनमटर तुरन्त बाहर निकल आया। उसने अपनी तलवार लहराते हुए अजदहे पर जवाबी हमला किया। अजदहा घुटनो तक अदर धस गया। लोहे के फर्श से बाहर निकलकर अजदहे ने लुढकनमटर पर हमला किया और वह भी घुटनो तक फर्श मे धस गया। अब जो लुढकनमटर ने हमला किया तो अजदहा कमर तक फर्श मे धस गया। लुढकनमटर ने तीसरा प्राणघातक हमला किया और अजदहा वही का वही ढेर हो गया।

तब वह काल-कोठरी की ओर गया। काल-कोठरी गहरी और अन्धकारमय थी। उसने अपने भाइयो को वहा से बाहर निकाला। वे लोग मुश्किल से सास ले पा रहे थे, अन्तिम घडिया गिन रहे थे। लुढकनमटर अपने छह भाइयो और बहन अल्योन्का को साथ लेकर घर को चल दिया। उसने सोने-चादी से भरपूर उस खजाने को भी अपने साथ समेट लिया जो अजदहे के घर मे जमा था।

लुढकनमटर ने उन लोगो को यह नही बताया कि वह उनका ही सगा भाई है। वे कब तक चलते रहे, कितना लम्बा सफर तय करते रहे, यह कोई नही जानता। रास्ते मे वे एक बलूत वृक्ष के नीचे आराम करने बैठे। लुढकनमटर अपने दुश्मन के साथ हुए युद्ध मे थककर चूर हो चुका था। वह शीघ्र ही गहरी नीद सो गया। इस बीच उसके छहो भाइयो ने आपस मे सलाह की

'लोगो को जब यह पता चलेगा कि हम छहो मिलकर अजदहे को नही मार पाए और इसने अकेले ही उसे मार डाला, तो वे हमारी खिल्ली उडाएगे और अजदहे का बेशकीमती खजाना भी यही हथिया लेगा।"

वे देर तक सोच-विचार करते रहे। आखिर उन्होने फैसला कर ही डाला इस समय वह नीद मे बेहोश था। हमे तुरन्त छाल की रस्सी बना लेनी चाहिए। फिर उसे बलूत वृक्ष से बाध देगे। वह इसे तोडकर भाग नही पाएगा। बस, इस तरह दरिंदे उसे खा जाएगे। उन्होने जो सोचा, वह कर भी डाला। वे सोते हुए लुढकनमटर को पेड के साथ बाधकर घर की ओर चल दिए।

लुढकनमटर गहरी नीद सोता रहा। वह इस कदर बेखबर था कि उसे कुछ पता न चला। दिन भर सोया, रात भर सोया और जब नीद खुली तो खुद को पेड के साथ बधा पाया। उसने जैसे ही एक झटका दिया, बलूत जड समेत उखड गया। बलूत वृक्ष को कन्धे पर उठाकर वह घर की तरफ चल दिया। झोपडी के करीब पहुचकर उसने अपने भाइयो को मा से यह पूछते हुए सुना

'मा, क्या हमारा कोई और भी भाई हुआ था?"

"हा, यह सच है। मेरे उस बेटे का नाम लुढकनमटर है। वह ही तुम्हे कैद से छुडाने गया था।"

वे बोले

"हम लोगो ने अपने भाई को ही बाध दिया! अभी जाकर उसे खोलना होगा।"

लेकिन लुढकनमटर ने बलूत वृक्ष को कन्धो से उठाकर झोपडी पर पटक दिया – झोपडी चकनाचूर होते-होते रह गई।

"सभालो अपना घर, लानत है तुम्हे!" उसने कहा। "अब मै चला दुनिया का चक्कर लगाने।"

और तलवार कन्धे पर रखकर वह निकल पडा।

वह चलता गया, चलता गया। आखिर उसे दो पहाड दिखाई दिए। एक दाई ओर, दूसरा बाई ओर। उनके बीच एक आदमी अपने हाथ-पैर उन पर टिकाए खडा था और उन्हे अलग कर रहा था।

"नमस्ते!"

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रहे हो, भले आदमी?"

"पर्वतो को खिसका रहा हू ताकि रास्ता बनाया जा सके।"

"और तुम कहा जा रहे हो?"

"अपनी किस्मत आजमाने।"

"मेरा भी इरादा यही है! तुम्हारा नाम क्या है?"

"पर्वतपलट। और तुम्हारा?"

"लुढकनमटर। चलो, साथ-साथ चलते है!"

"चलो, चलते है।"

फिर क्या, वे साथ-साथ चल दिए। वे चलते रहे, चलते रहे कि अचानक उन्हे जगल मे एक आदमी दिखाई दिया। वह बलूत के पेडो को गाजर-मूली की तरह उखाडता चला जा रहा था। बस, हाथ हिलाता और पेड जड समेत उखडकर जमीन पर गिर पडता।

"नमस्ते!"

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रहे हो, भले आदमी?"

"पेडो को उखाड रहा हू ताकि रास्ता बनाया जा सके।"

"और तुम जा कहा रहे हो?"

"अपनी किस्मत आजमाने।"

"हमारा भी इरादा यही है। भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

"वलूतउखाड। और तुम्हारे नाम?"

"लुढकनमटर और पर्वतपलट। चलो, हम साथ-साथ चलते है!"

"चलो, चलते है।"

वे तीनो साथ-साथ चलने लगे। चलते रहे, चलते रहे, अचानक उन्हे नदी किनारे खूब लम्बी-सी मूछोवाला एक आदमी खडा दिखाई दिया। जैसे ही वह अपनी मूछ ऐंठता वैसे ही नदी की धारा दो हिस्सो मे बट जाती। नदी के बीचोबीच पानी थम जाता, रास्ता बन जाता और इस रास्ते मे होकर नदी को पार किया जा सकता था।

"नमस्ते!" तीनो ने एकसाथ कहा।

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रहे हो, भले आदमी?"

"नदी पार जाने के लिए पानी को रोक रहा हू।"

"तुम जा कहा रहे हो?"

"अपनी किस्मत आजमाने।"

"हमारा भी इरादा यही है। तुम्हारा नाम क्या है?"

"नदीपकड। और तुम्हारे नाम?"

"लुढकनमटर, पर्वतपलट और वलूतउखाड। चलो, हम साथ-साथ चलते है!"

"चलो, चलते है।"

वे चारो साथ-साथ चल दिए। रास्ता आसानी से तय होता रहा—पर्वतपलट मार्ग मे आनेवाले पहाडो को एक तरफ खिसका देता, वलूतउखाड मिनटो मे जगल साफ करके रास्ता बनाता और नदीपकड रास्ते मे पडनेवाली नदी की धारा को रोककर बीच से रास्ता बना देता।

इस तरह रात-दिन चलते-चलते वे एक जगल मे पहुचे। उन्होने वहा पर एक झोपडी देखी। जब वे अन्दर गए तो झोपडी खाली थी।

"यहा रात बिताई जा सकती है," लुढकनमटर ने कहा।

रात भर वे झोपडी मे रहे। और अगले दिन सुबह लुढकनमटर ने कहा

"पर्वतपलट, तुम यहा ठहरो, खाने का इन्तजाम करो और हम तीनो शिकार करने जा रहे है।"

फिर वे तीनो शिकार पर चले गए। पर्वतपलट ने खाना बनाया और उसके बाद दम मारने के लिए सो गया। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया

"दरवाजा खोलो!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही कि मैं दरवाजा खोलू, खुद खोल ले!" पर्वतपलट ने लेटे ही लेटे जवाब दिया।

दरवाजा खुल गया। फिर वही आवाज सुनाई पडी

"मुझे उठाओ, दहलीज को पार कराओ!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही, खुद ही दहलीज पार कर ले!" पर्वतपलट ने जवाब दिया।

तुरन्त एक छोटे-से बूढे ने दहलीज पार की। यह बूढा था तो छोटा-सा, पर उसकी दाढी खूब लम्बी थी। जब वह चलता था तो उसकी दाढी दूर तक जमीन पर घिसटती चली जाती थी। इस बूढे ने पर्वतपलट के सिर पर हाथ मारा, उसके बालो की लट को पकडा और उसे दीवार मे लगी खूटी पर टाग दिया। इसके बाद वह खाने पर टूट पडा और जो कुछ बना था, वह सब खा गया। पीने के लिए जो कुछ था, उसे भी सुडक गया। इस तरह खा-पीकर चलता बना।

खूटी पर लटका हुआ पर्वतपलट देर तक छटपटाता, हाथ-पाव मारता, छूटने की कोशिशे करता रहा। आखिर बालो की लट खोकर वह खुद को छुडा पाया, फिर से खाना बनाने लगा। अभी वह खाना बना भी न पाया था कि उसके साथी शिकार से लौट आए।

"अरे, अभी तक खाना नही बना?"

"मुझे नीद आ गई थी," पर्वतपलट ने जवाब दिया।

सबने खाना खाया और सो गए। अगले दिन सुबह लुढकनमटर ने कहा

"यहा रात विताई जा सकती है," लुढकनमटर ने कहा।

रात भर वे झोपडी मे रहे। और अगले दिन सुवह लुढकनमटर ने कहा

"पर्वतपलट, तुम यहा ठहरो, खाने का इन्तजाम करो और हम तीनो शिकार करने जा रहे है।"

फिर वे तीनो शिकार पर चले गए। पर्वतपलट ने खाना बनाया और उसके बाद दम मारने के लिए सो गया। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया

"दरवाजा खोलो!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही कि मै दरवाजा खोलू, खुद खोल ले!" पर्वतपलट ने लेटे ही लेटे जवाव दिया।

दरवाजा खुल गया। फिर वही आवाज सुनाई पडी

"मुझे उठाओ, दहलीज को पार कराओ!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही, खुद ही दहलीज पार कर ले!" पर्वतपलट ने जवाव दिया।

तुरन्त एक छोटे-से बूढे ने दहलीज पार की। यह बूढा था तो छोटा-सा पर उसकी दाढी खूब लम्बी थी। जब वह चलता था तो उसकी दाढी दूर तक जमीन पर घिसटती चली जाती थी। इस बूढे ने पर्वतपलट के सिर पर हाथ मारा, उसके बालो की लट को पकडा और उसे दीवार मे लगी खूटी पर टाग दिया। इसके बाद वह खाने पर टूट पडा और जो कुछ बना था, वह सब खा गया। पीने के लिए जो कुछ था, उसे भी सुडक गया। इस तरह खा-पीकर चलता बना।

खूटी पर लटका हुआ पर्वतपलट देर तक छटपटाता, हाथ-पाव मारता, छूटने की कोशिशे करता रहा। आखिर बालो की लट खोकर वह खुद को छुडा पाया, फिर से खाना बनाने लगा। अभी वह खाना बना भी न पाया था कि उसके साथी शिकार से लौट आए।

"अरे, अभी तक खाना नही बना?"

"मुझे नीद आ गई थी," पर्वतपलट ने जवाव दिया।

सवने खाना खाया और सो गए। अगले दिन सुबह लुढकनमटर ने कहा

"हमारा भी इरादा यही है। भाई, तुम्हारा नाम क्या है?"

"वलूतउखाड। और तुम्हारे नाम?"

"लुढकनमटर और पर्वतपलट। चलो, हम साथ-माथ चलते हैं।"

"चलो, चलते है।"

वे तीनो साथ-माथ चलने लगे। चलते रहे, चलते रहे, अचानक उन्हे नदी किनारे खूब लम्बी-सी मूछोवाला एक आदमी खडा दिखाई दिया। जैसे ही वह अपनी मूछ ऐठता वैसे ही नदी की धारा दो हिस्सो मे वट जाती। नदी के बीचोबीच पानी थम जाता, रास्ता वन जाता और इस रास्ते मे होकर नदी को पार किया जा सकता था।

"नमस्ते!" तीनो ने एकसाथ कहा।

"नमस्ते!"

"तुम यह क्या कर रहे हो, भले आदमी?"

"नदी पार जाने के लिए पानी को रोक रहा हू।"

"तुम जा कहा रहे हो?"

"अपनी किस्मत आजमाने।"

"हमारा भी इरादा यही है। तुम्हारा नाम क्या है?"

"नदीपकड। और तुम्हारे नाम?"

'लुढकनमटर, पर्वतपलट और बलूतउखाड। चलो, हम साथ-माथ चलते है!"

"चलो, चलते है।"

वे चारो साथ-साथ चल दिए। रास्ता आसानी से तय होता रहा—पर्वतपलट मार्ग मे आनेवाले पहाडो को एक तरफ खिसका देता, वलूतउखाड मिनटो मे जगल साफ करके रास्ता वनाता और नदीपकड रास्ते मे पडनेवाली नदी की धारा को रोककर बीच से रास्ता बना देता।

इस तरह रात-दिन चलते-चलते वे एक जगल मे पहुचे। उन्होने वहा पर एक झोपडी देखी। जव वे अन्दर गए तो झोपडी खाली थी।

"यहा रात विताई जा सकती है," लुढकनमटर ने कहा।

रात भर वे झोपडी मे रहे। और अगले दिन सुवह लुढकनमटर ने कहा

"पर्वतपलट, तुम यहा ठहरो, खाने का इन्तजाम करो और हम तीनो शिकार करने जा रहे है।"

फिर वे तीनो शिकार पर चले गए। पर्वतपलट ने खाना बनाया और उसके वाद दम मारने के लिए सो गया। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया

"दरवाजा खोलो!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही कि मै दरवाजा खोलू, खुद खोल ले!" पर्वतपलट ने लेटे ही लेटे जवाव दिया।

दरवाजा खुल गया। फिर वही आवाज सुनाई पडी

"मुझे उठाओ, दहलीज को पार कराओ!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही, खुद ही दहलीज पार कर ले!" पर्वतपलट ने जवाब दिया।

तुरन्त एक छोटे-से बूढे ने दहलीज पार की। यह बूढा था तो छोटा-सा, पर उसकी दाढी खूब लम्बी थी। जब वह चलता था तो उसकी दाढी दूर तक जमीन पर घिसटती चली जाती थी। इस बूढे ने पर्वतपलट के सिर पर हाथ मारा, उसके वालो की लट को पकडा और उसे दीवार मे लगी खूटी पर टाग दिया। इसके वाद वह खाने पर टूट पडा और जो कुछ वना था, वह सब खा गया। पीने के लिए जो कुछ था, उसे भी सुडक गया। इस तरह खा-पीकर चलता बना।

खूटी पर लटका हुआ पर्वतपलट देर तक छटपटाता, हाथ-पाव मारता, छूटने की कोशिशे करता रहा। आखिर वालो की लट खोकर वह खुद को छुडा पाया, फिर से खाना बनाने लगा। अभी वह खाना वना भी न पाया था कि उसके साथी शिकार से लौट आए।

"अरे, अभी तक खाना नही बना?"

"मुझे नीद आ गई थी," पर्वतपलट ने जवाव दिया।

सवने खाना खाया और सो गए। अगले दिन सुबह लुढकनमटर ने कहा

वलूतउखाड आज तुम घर पर रहोगे और हम तीनों शिकार पर जाएंगे।'

वे तीनों शिकार पर चले गए इधर वलूतउखाड ने खाना बनाया, उसके बाद दम मारने के लिए सो गया। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया

"दरवाजा खोलो!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही कि मै दरवाजा खोलू!" वलूतउखाड ने जवाब दिया।

फिर वही आवाज सुनाई पडी

'मुझे उठाओ दहलीज को पार कराओ!"

"तू कोई राजा-महाराजा नही, खुद ही दहलीज पार कर ले!"

एक छोटे-से बूढे ने दहलीज पार की। यह बूढा था तो छोटा-सा, पर उसकी दाढी खूब लम्बी थी। जब वह चलता था तो उसकी दाढी दूर तक जमीन पर घिसटती चली जाती। इस छोटे-से बूढे ने वलूतउखाड के सिर पर हाथ मारा, उसके बालो की लट को पकडा और उसे दीवार मे लगी खूटी पर टाग दिया। इसके बाद वह खाने पर टूट पडा और जो कुछ बना था, वह सब खा गया। पीने के लिए जो कुछ था, उसे सुडक गया। इस तरह खा-पीकर चल दिया।

खूटी पर लटका हुआ वलूतउखाड देर तक छटपटाता, हाथ-पाव मारता, छूटने की कोशिशे करता रहा। थोडी देर बाद खूटी से छूटकर नीचे गिर पडा। वह फिर से खाना बनाने लगा। अभी वह खाना बना भी न पाया था कि उसके दोस्त शिकार से वापस लोट आए।

"अरे अभी तक खाना नही बना?"

"मुझे नीद आ गई थी," वलूतउखाड ने जवाब दिया।

पर्वतपलट मौन खडा रहा—वह तो सारी असलियत को जानता था।

तीसरे दिन नदीपकड की बारी आई। उस रोज भी यही घटना घटी।

लुढकनमटर ने कहा

"तुम सब खाना पकाने मे बेहद सुस्त और निकम्मे हो! खैर, कल तुम लोग

शिकार खेलने जाओगे और घर का काम मैं देखूगा।"

अगले दिन सुबह उसके तीनो दोस्त शिकार पर गए और लुढकनमटर झोपडी पर रह गया। उसने खाना बनाकर रख दिया, उसके बाद जरा दम मारने के लिए लेट गया। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया

"दरवाजा खोलो!"

"ठहरो, अभी खोलता हू," लुढकनमटर ने जवाब दिया।

दरवाजा खोला और देखा कि एक छोटा-सा बूढा खडा है। यह बूढा था तो खूब छोटा पर उसकी दाढी इतनी लम्बी थी जो जमीन पर घिसट रही थी।

"मुझे उठाओ, दहलीज को पार कराओ!" बूढे ने कहा।

लुढकनमटर उसे अन्दर ले गया। बूढा उसकी ओर उछलने लगा। लुढकनमटर यह न समझ पाया कि आखिर माजरा क्या है?

"बता, तू क्या चाहता है?" लुढकनमटर ने पूछा।

"ठहर जरा, अभी बताए देता हू," बूढे ने यह कहकर लुढकनमटर के सिर के बाल पकडने के लिए हाथ बढाया। वह उसके बाल पकड पाता कि इससे पहले ही लुढकनमटर ने गरजते हुए कहा

"कौन हो तुम?" यह कहते हुए लुढकनमटर ने बूढे की दाढी धर पकडी।

उसने झट से कुल्हाडी उठाई और बूढे को घसीटता हुआ एक बलूत वृक्ष के पास ले आया। बलूत के तने को दो भागो मे चीर डाला और बूढे की लम्बी दाढी उसमे अच्छी तरह फसा दी ताकि वह उसे छुडाकर भाग न पाए।

"तू मेरे बाल पकडने चला था। अब तुझे मेरे लौटने तक यही बधा रहना होगा।"

वह झोपडी मे लौट आया—उसके दोस्त वापस लौट चुके थे।

"क्या खाना तैयार है?" उन्होने पूछा।

"वह तो बहुत पहले ही तयार हो चुका है!" लुढकनमटर ने उत्तर दिया।

उन सबने खाना खाया। उसके बाद लुढकनमटर बोला

"आओ, तुम लोगो को एक विचित्र तमाशा दिखाता हू।"

लुढकनमटर अपने मित्रो को बलूत के पास ले गया। लेकिन वहा पर न बूढा ही था और न बलूत का पेड। जाहिर है कि उसने बलूत को जड समेत उखाडा और उसे साथ लेकर कही गायब हो गया था।

तब लुढकनमटर ने अपने दोस्तो को सारा किस्सा कह सुनाया। फिर उन सबने यह बता दिया कि किस तरह उस छोटे-से बूढे ने उनके बाल पकडकर उन्हे खूटी पर टाग दिया था।

"अगर वह ऐसा ही सूरमा है तो देर काहे की। उसकी खोज-खबर करनी ही होगी!" लुढकनमटर ने कहा।

बूढा बलूत वृक्ष को जिस रास्ते घसीटता हुआ गुजरा था, वहा-वहा जमीन पर बलूत के निशान बने हुए थे। चारो दोस्त इन निशानो को टोहते हुए चलते रहे।

और वे चलते-चलते एक बावली तक आ पहुचे जो अथाह गहरी थी।

"पर्वतपलट, तुम इस बावली मे उतर जाओ," लुढकनमटर ने कहा।

"भाई, मै तो नही उतरता!"

"चलो, फिर तुम ही उतरो, बलूतउखाड!"

लेकिन बलूतउखाड ही नही, नदीपकड के भी छक्के छूट गए।

"अगर ऐसी ही बात है तो मै खुद ही नीचे उतरता हू। लाओ, रस्मा बाध लेते है," लुढकनमटर ने कहा।

उन सबने कसकर रस्सा बाध लिया। फिर लुढकनमटर ने उसका एक छोर अपने हाथ पर बाध लिया और कहा

"हा, तो अब मुझे नीचे उतारो!"

उन्होंने रस्से को ढील देनी शुरू की। लुढकनमटर रस्से के सहारे नीचे उतरने लगा। बडी देर तक बावली मे उतरता रहा। आखिर तल का पता चल ही गया।

लुढकनमटर नीचे पहुचकर घूमने लगा। अचानक उसे एक बहुत बडा महल दिखाई दिया। वह उसके भीतर जा पहुचा। बडा अद्‌भुत महल था। उस महल का चप्पा-चप्पा सोने से चमचमा रहा था। उसकी दीवारो मे जडे कीमती हीरे-जवाहरात अपनी रुपहली आभा बिखेर रहे थे। लुढकनमटर मजे से महल मे घूमता रहा। अचानक उसने एक खूबसूरत राजकुमारी को अपनी ओर भागकर आते देखा। हूर की परी थी वह राजकुमारी। उसकी सुन्दरता का बखान न लेखनी कर सके, न आदमी बता सके।

"भले आदमी, तुम यहा किसलिए आए हो?" राजकुमारी ने पूछा।

"रूप की रानी, मै एक बूढे को ढूढ रहा हू जिसकी दाढी तो बेहद लम्बी है और जो खुद बित्ते भर का है," लुढकनमटर ने जवाब दिया।

"अरे, वह तो बलूत के पेड मे फसी अपनी दाढी छुडा रहा है। लेकिन उसके पास जाना मत। वह तुम्हे मार डालेगा। बडा खूखार है। बहुत-से लोगो की जान ले चुका है!"

"वह मुझे न मार सकेगा," लुढकनमटर ने कहा। "उसकी दाढी मैने ही फसाई है। मगर तुम कौन हो, यहा किसलिए रहती हो?"

"मै एक राजकुमारी हू। यह बूढा मुझे उठा लाया है और यहा पर उसने मुझे कैद कर रखा है।"

"मै तुम्हे उसकी कैद मे छुडा दूगा। बस मुझे उस बूढे तक ले चलो।"

राजकुमारी उसे बूढे के पास ले गई। सचमुच वह बूढा वहा बैठा था और उसने बलूत मे फसी अपनी दाढी निकाल ली थी। लुढकनमटर को वहा देखते ही वह क्रोध मे चीखा

"तुम यहा क्यो आए हो? बोलो, दोस्ती चाहते हो या दुश्मनी?"

"मै तुमसे दोस्ती नही चाहता!" लुढकनमटर ने कहा। "बेशक लडने आया हू।"

फिर वे आपस मे जूझ पडे। लडते रहे एक दूसरे पर हमले करते रहे। युद्ध

वहुत देर तक चलता रहा। फैसला ही न हो पा रहा था। अन्त मे लुढकनमटर ने अपनी तलवार से बूढे का काम तमाम कर डाला।

इसके वाद उसने और राजकुमारी ने मिलकर वहा का सारा धन-दौलत, सोना-चादी ओर तरह-तरह के कीमती हीरे-जवाहरात तीन वोरो मे भरे और वे उस ओर चल दिए जहा पर बावली मे वह नीचे उतरा था। उसने जोर से आवाज़ देकर पूछा

"भाइयो, तुम यही हो?"

'हा-हा, यही ह!"

उसने एक बोरा रस्से से बाधा और उसे ऊपर खीचने के लिए कहा।

"मेरे दोस्तो, यह तुम्हारे लिए है!" वह जोर से चिल्लाकर बोला।

दोस्तो ने बोरा ऊपर खीच लिया और रस्सा नीचे लटका दिया। उसन फिर दूसरा बोरा भी रस्से से बाध दिया।

"मेरे दोस्तो, यह भी तुम्हारे लिए हे," उसने फिर जोर से चिल्लाकर कहा।

हीरे-जवाहरात का तीसरा वोरा भी उसने उन्हे सोप दिया। इस तरह लुढकन मटर ने बूढे का सारा कीमती माल-खजाना अपने दोस्तो को सौप दिया।

अव उसने राजकुमारी को रस्से से बाधा और ऊपर खीच लेने को कहा

"और यह मेरी अमानत है!" उसने नीचे से चिल्लाते हुए कहा।

तीनो दोस्तो ने राजकुमारी को भी ऊपर खीच लिया। अब केवल लुढकनमटर ही नीचे रह गया था। दोस्तो ने सोचा

"उसे अब किसलिए ऊपर खीचा जाए? बेहतर यही होगा कि वह नीचे ही पडा रहे। ऐसे मे राजकुमारी भी हमारे ही कब्जे मे आ जाएगी। बस, उसे ऊपर खीचकर छोड देगे। और वह गिरकर दम तोड देगा।"

लेकिन लुढकनमटर इस कुचक्र को ताड गया था। इसलिए उसने रस्से के साथ एक भारी पत्थर बाध दिया और जोर से बोला

"दोस्तो, अब मुझे भी ऊपर खीच लो!"

उन लोगो ने बचे हुए पत्थर को काफी ऊंचाई तक खीचा और फिर रस्सा छोड दिया। पत्थर धडाम से नीचे जा टकराया।

"वाह रे, मेरे दोस्तो,' लुढकनमटर ने कहा, "तो ऐसी बात है?"

अब वह नीचे ही नीचे पाताल लोक की अनजानी दुनिया मे भटकने लगा। वह चलता रहा, चलता रहा अचानक बादल घिर आए, झमाझम वर्षा होने लगी और तावडतोड ओले गिरने लगे। लुढकनमटर एक बलूत वृक्ष के नीचे छिप गया।

तभी पेड पर बने घोसले से उकाब के बच्चो की चिचियाहट उसे सुनाई दी। लुढकनमटर पेड पर चढ गया और उसने उकाब के बच्चो को अपने कोट से ढक दिया। बारिश रुकने पर एक खूब बडा, भारी-भरकम उकाब – इन बच्चो का बाप – उडता हुआ अपने घोसले मे आ पहुचा। उसने देखा कि बच्चे गर्म कोट से ढके हुए है। उकाब ने बच्चो से पूछा

"तुम्हे किसने ढक रखा है?"

"आप उसे न खाने का वायदा करे, तभी हम बताएगे," बच्चो ने जवाब दिया।

"नही, मै उसे कतई नही खाऊगा।"

"पेड के नीचे बैठे हुए उस आदमी ने ही हमे बचाया है।"

यह सुनते ही उकाब पक्षी उडकर लुढकनमटर के पास आ गया।

"भले आदमी, जो चाहिए माग लो। मै तुम्हारी हर मुराद पूरी करूगा। मेरी जिन्दगी मे यह पहला अवसर है, जब मेरे बच्चो को मूसलाधार बारिश मे मरने से किसी ने बचाया है।"

"मुझे अपनी दुनिया मे पहुचा दो, जहा से मै यहा आया हू।"

"भले आदमी तुमने मुझे बेहद मुश्किल काम सौपा है! खैर, अब किया ही क्या जा सकता है, मै वचन दे चुका हू। हा, उडान मे पहले रास्ते के लिए खान-पीने का जुगाड करना होगा। छह पीपे मास और छह पीपे पानी रास्ते के

लिए काफी होगा। उडते वक्त जब मै अपनी गर्दन दाई तरफ घुमाऊ, तो तुम मेरे मुह मे मास का एक टुकडा डाल देना और जब गर्दन बाई तरफ घुमाऊ, तो मुझे थोडा-सा पानी पिला देना। ऐसा ही करना नही तो वहा तक उड पाना मुमकिन न होगा।"

उकाब की पीठ पर छह पीपे मास और छह पानी के लादे गए। फिर लुढकन मटर भी उस पर सवार हो गया। उकाब उड चला। वे उडते रहे, सफर तय करते रहे। उकाब अपनी गर्दन कभी दाए, कभी बाए मोडता रहा, सिर घुमाता रहा। लुढकनमटर रास्ते भर उसे मास का एक-एक टुकडा पकडाता रहा और थोडा-थोडा पानी पिलाता रहा। इस तरह वे बहुत समय तक उडते रहे। सफर पूरा ही होनेवाला था कि उकाब ने दाई तरफ गर्दन घुमाई, पर मास का एक भी टुकडा बाकी न रहा था। फिर क्या, झट से लुढकनमटर ने अपनी जाघ से मास का एक टुकडा काटा और उकाब के मुह मे डाल दिया। अब तक उकाब धरती पर उतर गया और उसने लुढकनमटर से पूछा

"भाई, अभी तुमने बडा स्वादिष्ट मास खिलाया था। क्या था?"

"मैने तुम्हे अपना ही मास खिलाया था," लुढकनमटर ने अपनी जाघ का कटा हुआ हिस्सा उसे दिखाया।

तब उकाब ने मास का वह टुकडा उगल दिया। वह झट से उडा और प्राण-जल लेकर वापस लौटा। उसने मास के इस टुकडे को जाघ से जोडकर बैठाया और थोडा-सा पानी वहा पर लगा दिया। देखते ही देखते जाघ पहले जैसी हो गई।

उकाब अपने घर की तरफ वापस उड चला। इधर लुढकनमटर अपने दोस्तो की तलाश मे निकल पडा।

उधर तीनो दोस्त पहले ही राजकुमारी के पिता के यहा पहुच गए थे। वे वही उसके राजमहल मे रहने लगे। वे आपस मे झगडते रहते थे – उनमे से हरेक राजकुमारी से शादी करना चाहता था। किसी एक के साथ राजकुमारी की शादी तय ही न हो पा रही थी। तीनो शादी के लिए अडे हुए थे।

लुढकनमटर अपने दोस्तो की तलाश करता हुआ राजमहल तक आ पहुचा। उसे देखते ही वे भय से थर-थर कापने लगे। वे आशकित थे कि लुढकनमटर उन्हे देखते ही मार डालेगा। पर लुढकनमटर ने कहा

"मेरे सगे भाइयो ने मुझे धोखा दिया, मुझसे छल किया, तब तुम लोगो से उम्मीद कैसी? तुम्हे तो माफ ही करना होगा।"

और उसने उन्हे माफ कर दिया।

लुढकनमटर की शादी राजकुमारी के साथ हो गई और वे खुशी-खुशी सुखमय जीवन बिता रहे ह।



इवान-पहलवान

पुराने जमाने मे किसी गाव के करीब एक खूखार अजदहा रहता था। यह नरभक्षी अजदहा गाववालो का सफाया करने लगा। एक दिन ऐसा भी आया, जब पूरा का पूरा गाव अजदहे के पेट मे समा गया। गाव मे सिर्फ एक बूढा ही जिन्दा बचा था।

"अच्छा, तो कल सुबह होते ही इसे भी खा जाऊगा।" अजदहे ने कहा।

इसी वक्त उस वीरान गाव से होकर एक गरीब लडका कही जा रहा था कि रास्ते मे शाम हो गई। उसने बूढे की झोपडी देखी और उसके यहा रात बिता लेने की प्रार्थना की।

"क्या तुम अपनी जिन्दगी से ऊब चुके हो?" बूढे ने पूछा।

"ऐसी भी क्या बात है?" गरीब युवक ने पूछा।

बूढे ने उसे विस्तार से सारा किस्सा कह सुनाया कि कैसे हत्यारे अजदहे की वजह से सारा गाव वीरान हो चुका है, सभी मारे जा चुके है और कल सुबह होते ही वह उसे भी निगल जाएगा।

"लेकिन वह मुझे न निगल पाएगा।"



अगले दिन भोर होते ही अजदहा उडता हुआ बूढे की झोपडी पर आया, युवक को देखकर खुशी से फूला न समाया

"क्या खूब! एक तो था ही, दूसरा भी चला आया!"

लेकिन उस युवक ने कहा

"सोच-समझ लो, कही म तुम्हारे गले मे ही न फस जाऊ!"

अजदहे ने आखे फाडकर देखा। क्रोध से बोला

"तुम क्या मुझसे ज्यादा शक्तिशाली हो?"

"बेशक।"

"तो आओ, देखते ह कौन ताकतवर ह! यह लो, मेरी ताकत भी देख लो!" और देखते ही देखते अजदहे ने एक बडे-से पत्थर को दबाकर चूर-चूर कर दिया।

"यह कौन-सा कमाल ह?" युवक ने कहा। "अरे, तुम इसे ऐसे कसकर दबाओ कि पत्थर से पानी टपकने लगे।"

युवक ने झट से अक्ल दौडाई, पनीर का बडा-सा टुकडा एक कपडे मे लपेटा और उसे कसकर निचोड दिया। देखते ही देखते पोटली मे पानी टपकने लगा।

"तो ठीक हे, चलते हे, अब तुम मेरे दोस्त बन गए।"

वे दोनो चल दिए। रास्ते मे अजदहे ने उससे पूछा

"तुम्हारा नाम क्या हे?"

"इवान-पहलवान कहते ह मुझे," युवक ने अजदहे से कहा।

यह सुनते ही अजदहा एकदम डर गया। उसने मन ही मन सोचा "कही मुझे मार ही न डाले।"

दोपहर मे खाने का वक्त आया, अजदहे ने कहा

"जरा जाकर एक बैल तो उठा लाओ, खाना पकाएगे।"

युवक चल दिया। वेल तो क्या एक वकरा तक वह नही उठा सकता था। युवक पशुओ के रेवड मे घुस गया और वेलो की दुम एक-एक कर आपस मे वाधने लगा। उधर अजदहा वडी देर तक उसका इन्तजार करता रहा। इन्तजार करते करते थक गया, तो खुद भागता हुआ उसके पास पहुचा।

"अरे, यह तुम क्या कर रहे हो?"

"हु, क्या मे एक-एक वेन उठाकर लाता रहूगा? सारे के सारे वैलो को एकसाथ वाधे निए आ रहा हू।"

"धत् तेरे की! तुम तो मेरे सारे रेवड का ही सत्यानाश कर दोगे।"

अजदहे ने वेल की खाल उधेडी और युवक को थमाते हुए वोला

"जाओ, मशक भर लाओ।"

युवक ने वैल की खाल सभाली और जैसे-तैसे उसे कुए तक उठा ले गया। पानी भरने के लिए खाल कुए मे उतार दी, लेकिन उसे ऊपर खीच नही पा रहा था। तव उसने लकडी का एक वेलचा बनाया और कुए के चौतरफा घूम-घूमकर जमीन खोदने लगा। अभी वह जमीन खोद ही रहा था कि भागता हुआ अजदहा वहा पहुचा

"यह क्या कर रहे हो तुम?"

"हु, क्या मशक-मशक भर पानी ढोकर लाऊगा? सारा कुआ ही खोदकर ले आ रहा हू।"

"अच्छा, छोडो!" अजदहे ने कहा। उसकी शक्ति से वह भय खा गया और खुद ही भारी मशक उठाकर चल दिया।

"चलो, जाओ, ईंधन का ही इन्तजाम कर दो, लकडी काट लाओ। बस, वलूत का एक सूखा पेड काट लो—काफी होगा।"

"हु, तो अव मे छोटे-छोटे काम करू? एकसाथ वीस पेड काट लाने को

कहा होता, तो कुछ बात होती!" यह कहते हुए वह रूठने का बहाना करके बैठ गया। टस से मस न हुआ। उधर अजदहे ने खाना बनाया और बैठकर खाने लगा। लेकिन इवान-पहलवान रूठा हुआ बैठा था। अजदहे के साथ खाना खाने से उसकी मामूली खुराक का रहस्य खुल जाता। आखिर इतनी मामूली खुराकवाला व्यक्ति ऐसा ताकतवर पहलवान कैसे हो सकता है? जब अजदहा भर पेट खा चुका और पतीले मे जरा-सा भोजन बचा, इवान ने पलक मारते ही पतीला साफ कर डाला और बोला

"बडा थोडा बनाया!"

"थोडा रहा तो चलो मा के घर चलते ह," अजदहे ने कहा। "मेरी मा छककर खिलाएगी।"

"ठीक है, चलना है तो चलो," इवान बोला और खुद सोचने लगा "अब तो मारा गया बेमौत।"

इवान अजदहे के साथ उसकी मा के घर पहुचा। अजदहे की मा ने बडी-बडी बीस देगचिया भरकर खाना पकाया। वे दोनो खाने बैठे। अजदहा खाने पर टूट पडा, देगचिया खाली करता जा रहा था। इवान अजदहे की नजर बचाकर अपने हिस्से का खाना कभी कमीज के अन्दर छिपाता, तो कभी आस्तीन मे ठूसता जाता। जब वे खा चुके तो अजदहे ने कहा

"चलो, पत्थर पर लोट लगाए।"

"चलो, जैसी तुम्हारी मर्जी।"

अजदहा पत्थर पर जो लोटा तो चिनगारिया उडने लगी।

"अरे, यह भी कोई लोट लगी! लोटो तो ऐसे कि धार बह निकले," और कपडो मे छिपा खाना ऐसे कसकर पत्थर मे दबाया कि रस की धारे फूट निकली।

अजदहा भय से कापने लगा। फिर साहस जुटाकर कहने लगा

"चलो, देखते है, सीटी कौन तेज वजाता है।"

"चलो, यह भी सही।"

अजदहे ने जो सीटी वजाई, तो पेड तक उसकी आवाज से थरथरा उठे।

इवान-पहलवान ने भी अपनी अक्ल दौडाई, अब क्या किया जाए? अचानक इवान ने लोहे का एक टुकडा पडा देखा, वस, उसे रास्ता सूझ गया। अजदहे को सावधान करते हुए वोला

"देखो, तुम अपनी आखे बन्द कर लो, ऐमा न हो कि मैं सीटी वजाऊ और तुम्हारी आखे वाहर निकल आए।"

अजदहे ने सहमकर आखे मूद ली और इवान-पहलवान ने झट मे लोहे की छड उठाकर अजदहे के माथे पर दे मारी। अजदहे की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

"ठीक ही कह रहे थे तुम। आखे न बन्द कर लेता, तो आखे वाहर निकल पडती।"

अजदहे ने गाव के वाहर इवान के लिए एक झोपडी वनाई, ताकि उसके साथ न रहना पडे। इवान उस झोपडी मे अकेला ही रहने लगा। उधर अजदहे ने इवान-पहलवान को मारने का कुचक्र रचा। मा-वेटे चुपके-चुपके वाते कर रहे थे कि इवान से कैसे निपटा जाए?

"उसे रात मे सोते समय जलाकर मार डाला जाए," अजदहे ने कहा।

इवान-पहलवान ने यह वातचीत सुन ली। वह उस रात झोपडी मे नही सोया–वही वाहर ही छिप गया। रात मे अजदहे ने इवान की झोपडी म आग लगा दी। लेकिन सुबह इवान उसी जगह पर खडा होकर राख झाड रहा था जैसे कि अभी-अभी राख के ढेर मे निकलकर आया हो।



उडनखटोला

यह किस्सा पुराने जमाने का है। एक था बूढा और एक थी बुढिया। उनका अपना घर-परिवार था। तीन बेटे थे दो बुद्धिमान ओर तीसरा बुद्धू। माता-पिता वुद्धिमान बेटो को प्यार करते थे। बुढिया अपने उन दोनो बेटो को अच्छे-अच्छे कपडे पहनाती, उनकी सुख-सुविधाओ का ख्याल रखती। और बुद्धू बेचारा सबकी हसी का पात्र बनता, सभी उसे डाटते-फटकारते और उसकी उपेक्षा करते। वह फटी-पुरानी, पैवन्द लगी कमीज पहनकर दिन-दिन भर अलावघर पर बैठा रहता। बुढिया उसे जब कभी खाना देती तो खा लेता, नही तो भूखा बैठा रहता।

एक दिन गाव मे राजा का फरमान आया। "महाराज ने अपनी बेटी के विवाह का निर्णय किया हे। इस अवसर पर महाराज ने सारे राज्य के लोगो को राजभोज का निमत्रण भिजवाया है। महाराज अपनी बेटी का विवाह उसी युवक के साथ करेगे, जो एक उडनखटोला बनाएगा और उसी पर सवार होकर राजभोज मे आएगा।"

अक्लमन्द भाइयो ने उडनखटोला बनाने का फैसला किया और जगल की ओर लकडी काटने चल पडे।

उन्होंने लकडी काटी और बैठकर दिमाग लडाने लगे। आखिर उडनखटोला कैसे बनाया जाए?



उडनखटोला

यह किस्सा पुराने जमाने का हे। एक था बूढा ओर एक थी बुढिया। उनका अपना घर-परिवार था। तीन बेटे थे दो बुद्धिमान और तीमरा बुद्धू। माता-पिता बुद्धिमान बेटो को प्यार करते थे। बुढिया अपने उन दोनो बेटो को अच्छे-अच्छे कपडे पहनाती, उनकी सुख-मुविधाओ का ख्याल रखती। ओर बुद्धू बेचारा मबकी हमी का पात्र बनता, सभी उमे डाटते-फटकारते और उसकी उपेक्षा करते। वह फटी-पुरानी, पैवन्द लगी कमीज पहनकर दिन-दिन भर अलावघर पर बैठा रहता। बुढिया उसे जब कभी खाना देती तो खा लेता, नही तो भूखा बैठा रहता।

एक दिन गाव मे राजा का फरमान आया। "महाराज ने अपनी बेटी के विवाह का निर्णय किया हे। इस अवमर पर महाराज ने मारे राज्य के लोगो को राजभोज का निमन्त्रण भिजवाया हे। महाराज अपनी बेटी का विवाह उमी युवक के माथ करेगे, जो एक उडनखटोला बनाएगा और उमी पर मवार होकर राजभोज मे आएगा।"

अक्लमन्द भाइयो ने उडनखटोला बनाने का फैसला किया और जगल की ओर लकडी काटने चल पडे।

उन्होने लकडी काटी और बैठकर दिमाग लडाने लगे। आखिर उडनखटोला कैमे बनाया जाए?



वे अभी सोच-विचार कर ही रहे थे कि एक बूढे वावा उधर से गुजरे और उनके पास आकर वोले

"जुग-जुग जिओ, मेरे लाडलो! हो मके तो थोडी-सी आग दे दो, पाइप सुलगाना है।"

"जाओ, कही और देख लो। हमारा बक्त बरबाद न करो!"

यह कहकर वे फिर सोचने लगे। उडनखटोला आखिर कैसे वने?

"उडनखटोला न मही, पर सूअर के लिए वढिया-सा कठौता जरूर वना लोगे। राजकुमारी तुम्हारे नसीब मे नही!"

यह कहकर बूढा अन्तर्ध्यान हो गया। वे दोनो भाई देर तक मगजपच्ची करते रहे, पर उडनखटोला न वन पाया।

"चलो, छोडो! घोडो पर सवार होकर चलते है। राजकुमारी से भले शादी न हो, पर राजभोज का लुत्फ ही उठाएगे," बडे भाई ने कहा।

बडे धूमधाम से राजा के यहा दावत मे जाने की तेयारिया होने लगी। बूढे और वुढिया ने उन्हे आशीर्वाद दिया, रास्ते के लिए खाने-पीने की चीजे साथ मे बाध दी गई। वुढिया ने वढिया-वढिया पकवान बनाए और अगूरी की सुराही सामान के माथ बाध दी।

दोनो भाई अपने-अपने घोडे पर सवार हुए और राजमहल की ओर चल दिए।

वुद्धू भाई को पता चला कि उसके भाई शहर गए है, तो उसने भी कहा

"मै भी राजा के यहा दावत मे जाऊगा।"

"अरे, वुद्धू, तू कहा जाएगा!" मा ने कहा। "तुझे तो जगल मे भेडिये ही खा जाएगे!"

"नही, मै जरूर जाऊगा!"

लडके ने जाने की रट लगा ली। उसे मनाया न जा सका। तव वुढिया ने उसके झोले मे रूखी-सूखी रोटिया रख दी और एक सुराही मे पानी देकर उसे घर मे विदा कर दिया।

वुद्धू भाई जगल मे पहुचा। रास्ते मे उसे एक बूढे वावा मिले। वावा की सफेद वुर्राक दाढी कमर तक लम्वी थी।

"नमस्ते, दादाजी।"

"नमस्ते, बेटे।"

"आप कहा जा रहे ह?"

"बेटे, में लोगो के दुख-दर्द बटाता हू, उनकी मदद करता हू। तुम किधर जा रहे हो?"

"राजा के यहा दावत मे।"

"तो क्या तुम्हे उडनखटोला बनाना आता है?"

"नही तो।"

"तो फिर किमलिए जा रहे हो?"

"मेरे भाई वहा गए ह, सो मै भी चल दिया। शायद मेरी किस्मत वहा खुल जाए।"

"अच्छा, बेठो। थोडा आराम कर ले, कुछ खाए-पिए। अपने झोले से खाना निकालो।"

"लेकिन दादाजी, आप खा न पाएगे मेरे पास मिर्फ रूखी-सूखी रोटिया ह।"

"कोई वात नही, जो भी हे निकालो।"

बुद्धू ने थैले मे मे रोटिया निकाली। लेकिन ये मोटे अनाज की रूखी रोटिया न थी, जो मा ने झोले मे रखी थी। उसमे तो गेहू की नरम-नरम रोटिया थी, ऐमी वढिया-वढिया, जो पर्व-त्योहार पर अमीर लोग खाते थे। बुद्धू हैरान था और बूढे वावा अपनी लम्वी दाढी हिला-हिलाकर हस रहे थे।

उन्होंने छककर खाया-पिया और आराम किया। बूढे ने बुद्धू को उमके आतिथ्य-मत्कार के लिए धन्यवाद देते हुए कहा

"बेटे मुनो! जगल मे जाओ, वहा मवमे वडा वलूत का वृक्ष ढूढो, जिम पर मलीब के निशानवाली शाखाए उगी हो। उम बलूत पर अपनी कुल्हाडी मे तीन बार प्रहार करो और खुद मुह के बल जमीन पर लेट जाओ और तब तक लेटे रहो, जब तक तुम्हे कोई आवाज न दे। इम तरह उडनखटोला बन जाने के बाद जहा चाहो, बैठकर उड जाना। लेकिन यह ध्यान रखना कि रास्ते मे जो भी मिले उमे अपने माथ उडनखटोले मे बैठा लेना!"

वृद्ध ने बुजुर्ग के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और वे अपनी-अपनी राह चल दिए। वृद्ध जगल मे पहुचा, उसने एक पुराना बलूत का पेड ढूढा, जिस पर सलीब के निशानवाली शाखाए उगी हुई थी। उसने कुल्हाडी से बलूत पर तीन बार प्रहार किए और खुद जमीन पर मुह के बल लेट गया। लेटा रहा, लेटा रहा कि अचानक उसे लगा कि कोई पुकार रहा है

"उठो, तुम्हारा भाग्य जाग उठा है।"

वह झट से उठ बैठा। उसने देखा कि एक सुन्दर-सा उडनखटोला उडने के लिए तैयार खडा है। चमचमाता हुआ सोने का उडनखटोला, चादी का मस्तूल और रेशमी पाल। बस, बैठने और उडने भर की देर थी।

वह थोडी देर सोचकर झट से उडनखटोले मे जा बैठा। उसने पाल तान दिए और हवा की लहरो पर सनसनाता हुआ उड चला।

तेजी से उडने लगा। उडनखटोला उडता रहा, उडता रहा और वृद्ध जमीन पर नजर गडाए देखता रहा। उसने देखा कि एक आदमी जमीन पर कान लगाए कुछ सुन रहा है। वृद्ध ने आवाज दी

"नमस्ते, भले मानस! क्या कर रहे ह आप?"

"राजमहल के समाचार सुन रहा हू। सारे मेहमान पहुचे या नही।

"क्या आप दावत मे जा रहे है?"

"हा, वही जा रहा हू।"

"आइए, फिर साथ ही चलते है।"

वह आदमी उडनखटोले पर बैठ गया और वे उड चले।

वे उडते रहे, उडते रहे कि अचानक एक और आदमी दिखाई दिया। उसका एक पैर कान के साथ बधा था और दूसरे पैर पर वह उछल रहा था। वृद्ध ने उसे भी पुकारा

"नमस्ते, भले मानस! आप उछल क्यो रहे है?"

"इसलिए कि मैं एक ही पैर से चलता हू—यदि मैं दूसरा पैर खोल दू तो एक कदम मे सारी दुनिया को नाप लू। लेकिन मै ऐसा नही चाहता।"

"आप कहा जा रहे है?"

"राजा के यहा दावत मे।"

"आइए, हमारे साथ वैठ जाइए!"

'यह तो अच्छा है!"

वह भी वेठ गया। उडनखटोला फिर उड चला।

वे उडते रहे, उडते रहे कि अचानक उन्हे एक निशानेबाज मिला, वह तीर का निशाना साध रहा था, लेकिन आसपास कुछ न दिखाई दे रहा था न कोई परिन्दा था, न कोई चरिन्दा – सिर्फ सपाट मेदान ही मैदान था।

"नमस्ते, भले मानस! किसे निशाना बना रहे है? न कोई पक्षी दिखाई पड रहा है, न जानवर।"

"तुम्हे नही दिखता, न दिखे। पर मुझे तो साफ-साफ दिख रहा है।"

"लेकिन आप किसे देख रहे है?"

"अरे, वो सामने, जगल के पीछे, ठीक सौ कोस दूर बलूत के पेड पर एक उकाब वैठा हे।"

"आइए, हमारे साथ वेठ जाइए!"

वह आदमी भी उडनखटोले पर वैठ गया। फिर वे उड चले। उडते रहे, उडते रहे कि अचानक एक बूढा राहगीर कही जाता हुआ दिखलाई दिया। उसकी पीठ पर बोरा भर रोटिया लदी हुई थी।

"दादाजी, आप कहा जा रहे है?"

"खाने के लिए रोटिया लेने।"

"आपके पास तो वेसे ही बोरा भर रोटिया है!"

"तुम्हे ये ज्यादा लगती हे। ये तो एक कौर के बराबर है।"

"आइए, वैठ जाइए।"

बूढा उडनखटोले पर बैठ गया और वे फिर अपनी राह उड चले।

अचानक एक बूढा झील के किनारे कुछ ढूढता हुआ दिखलाई पडा।

"दादाजी, आप क्या ढूढ रहे है?" बुद्धू ने आवाज दी।

"प्यास लगी है। पर पीने भर का पानी नही मिल रहा है।"

"अरे, आपके सामने तो झील का अथाह पानी है! जितना चाहे, पी लीजिए।"

"खूब कही! इसे तुम अथाह पानी कहते हो। अरे, यह तो एक घूट के बराबर है।"

"आइए, हमारे साथ बैठ जाइए।"

बूढा बैठ गया। वे फिर उड चले। रास्ते मे एक और बूढा मिला। गाव की ओर एक बोरा फूस लिए चला जा रहा था।

"नमस्ते, दादाजी! आप ये फूस कहा लिए जा रहे है?"

"गाव की ओर।"

"आप भी कमाल करते है! क्या गाव मे घास-फूस का अकाल पड गया है?"

"अरे, यह मामूली घास-फूस नही हे!"

"आखिर इसमे कौन-सी खास बात हे?"

"यह एक खास तरह का फूस हे। कैसी भी जानलेवा गर्मी पड रही हो, सूरज कितना भी झुलसाता हो, इस फूस को फैला दो – तुरन्त पाला पडने लगेगा, बर्फ गिरने लगेगी।"

"आइए, हमारे साथ बेठ जाइए!"

"चलो, चलते ह!"

बूढा बैठ गया। उडनखटोला उड चला।

वे लोग देर तक उडते रहे या थोडी देर तक, पर राजा के यहा दावत मे समय पर पहुच गए। राजमहल के खूबसूरत, लम्बे-चौडे अहाते मे मेज-कुर्सिया लगी हुई थी। मेजो पर तरह-तरह के व्यजन परोसे गए थे तरह-तरह का भुना हुआ मास, तरह-तरह के भुने हुए परिन्दे, और न जाने क्या-क्या उस दावत मे सजा हुआ था। इसके अलावा अगूरी और बियर के पीपे के पीपे लगा दिए गए थे। जी भरकर खाने-पीने का बढिया इन्तजाम था! दावत मे आधे राज्य के लोग एकत्रित थे बूढे, जवान, गरीब-अमीर – सभी तो थे! उसी भीड-भाड मे वे दोनो अक्लमन्द भाई भी मेज के सामने शान से बैठे हुए थे।

इमी वक्त वुद्धू भाई भी अपने दोस्तो के साथ सोने के उडनखटोले मे बैठकर राजमहल के अहाते मे उतरा। वे उडनखटोले से वाहर निकलकर सीधे दावत मे पहुचे।

राजा ने देखा कि मोने के उडनखटोले मे वेठकर मामूली किसान का बेटा आया है। कपडे के नाम पर फटी-पुरानी, पेबन्द पर पैबन्द लगी कमीज और पुरानी, मामूली-मी पतलून पहने है। पैरो मे जूते तो ह ही नही।

राजा तो शर्म से पानी-पानी हो गया।

"क्या मे अपनी वेटी की शादी ऐमे दरिद्र किसान से कर सकता हू? यह सभव नही!'

ओर वह सोचने लगा कि उम फटेहाल किमान युवक मे कैमे छुटकारा पाया जाए। उमने कुछ गूढ काम सोचा। अपने मेवक को वुलाकर राजा ने कहा

'जाओ, उस किसान से कहो भले ही वह सोने के उडनखटोले मे वैठकर आया है, लेकिन उमे तव तक राजकुमारी मे मिलने नही दिया जाएगा, जब तक कि वह प्राण-जल लेकर नही आता। यह काम उसे दावत खत्म होने से पहल करना है। अगर वह पानी न ला पाया तो मेरी तलवार उसकी गर्दन को धड से अलग कर देगी।"

राजमेवक चल दिया।

उधर मवरअन्दाज ने मुन लिया था कि राजा ने क्या कहा है। उसने बुद्धू को बता दिया। वुद्धू उदाम हो गया वह न खा रहा था, न पी रहा था, बस मिर झुकाए बैठा था।

पवनचाल ने पूछा

तुम उदाम क्यो हो गए?"

राजा एक वडा मुश्किल काम मोपना चाहता है दावत खत्म होने मे पहले मुझे प्राण-जल लाना ह। मैं इमे कैमे ला पाऊगा?"

'तुम दुखी मत हो, इमे मैं ला दूगा।"

"वडी मेहरवानी होगी।'

तब तक राजसेवक आदेश लेकर आ पहुचा। वुद्धू को तो पहले ही सब कुछ पता चल गया था।

"जाकर राजा साहब से कह दो – ले आऊगा।"

पवनचाल ने कान से बधा हुआ एक पैर खोला और जैसे ही कदम बढाया, बस, पलक झपकते ही प्राण-जल भर लिया। हा, पानी तो भर लिया पर थक-सा गया। "जब तक लोग दावत खा रहे है, मै झाडी के नीचे बैठकर सुस्ता लू," उसने सोचा। वह बैठ गया और उसे नीद आ गई।

उधर राजा की दावत का वक्त खत्म हो रहा था, लेकिन पवनचाल अब तक न पहुचा था। वुद्धू की जान गले मे अटकी थी। न मरा, न जिन्दा।

"कही गुम हो गया है," वुद्धू ने सोचा। खबरअन्दाज जमीन पर कान लगाकर सुनने लगा। सुनता रहा, सुनता रहा

थोडी देर बाद बोला

"भाई, तुम दुखी मत हो। वह झाडी के नीचे सो रहा है।"

"लेकिन अब मै क्या करू?" वुद्धू ने पूछा। "आखिर उसे कैसे जगाया जाए?"

निशानेबाज ने तपाक से कहा

"तुम फिक्र न करो, मै उसे जगाए देता हू।"

निशानेबाज ने झट मे धनुष चढाया और झाडी को निशाना बनाते हुए तीर छोड दिया। शाखाए हिली और पवनचाल से टकराई। वह झट से उठ बैठा। बस, एक कदम बढाया और वहा पहुच गया। मेहमान अभी दावत खत्म न कर पाए थे कि पवनचाल प्राण-जल लेकर आ गया।

राजा हैरान रह गया, लेकिन कुछ न बोला।

"जाओ, उस युवक से कह दो," राजा ने सेवक को आदेश देकर कहा, "यदि वह और उसके दोस्त मिलकर दो दर्जन भेडो का भुना हुआ गोश्त और बारह तन्दूरो मे पकी रोटिया खा लेगे तो मै अपनी बेटी का ब्याह उस युवक से कर दूगा। और अगर वह न खा पाए, तो मेरी तलवार उसकी गर्दन को धड से अलग कर देगी।"

उधर खबरअन्दाज ने यह सुन लिया और फिर से सब कुछ उसे कह सुनाया।
"अब मै क्या करू ? म तो एक बार मे ममूची रोटी भी नही खा सकता," बुद्धू ने उदास होकर कहा।
और उसने गमगीन होकर सिर झुका लिया। आखिर वह करता भी क्या ?
भोजनभट्ट को यह समाचार मिला। उसने युवक को तमल्ली दी
"दोस्त, तुम दुखी मत हो। मैं तुम्हारा और सभी साथियो का खाना खा लूगा, मुझे तो वह पूरा भी नही पडेगा।"
इतने मे राजसेवक वहा आ पहुचा। बुद्धू बोला
'पता हे, पता हे राजा का क्या आदेश है। जाओ, कह दो—हम लोग भोजन के लिए तैयार हे। खाना पकाया जाए।"
दो दर्जन भेडो का मास भूना-पकाया गया और बारह तन्दूरो मे पकाकर रोटियो का पहाड लगा दिया गया। उधर भोजनभट्ट ने खाना शुरू कर दिया। थोडी ही देर मे सारा का सारा खाना खा गया। वह और खाना मागने लगा।
"खाना और वह भी आधा पेट! अच्छा होता कि इतना ही खाना और मिल जाता!"
राजा क्रोधित हो उठा। उसने एक और बडा काम उसे सौपा। इस बार एक ही साम मे बारह पीपे बियर और बारह पीपे अगूरी पीनी थी। राजा ने यह कहकर अपने सेवक को भेजा।
"अगर यह काम न हुआ, तो मेरी तलवार उसकी गर्दन को धड से अलग कर देगी।"
खबरअन्दाज ने ये बाते पहले ही सुन ली और बुद्धू को बतला दी। लेकिन समुद्रसोख ने उसे धैर्य रखने के लिए कहा
"दोस्त, दुखी मत हो। मैं सब कुछ पी जाऊगा, फिर भी कम पडेगा।"
बारह पीपे बियर और बारह पीपे अगूरी के लाकर रख दिये गए। समुद्रसोख एक एक पीपा करके सब पी गया। यहा तक कि आखिरी बूद तक चाट गया और कहने लगा

"राजा ने पिलाया भी तो इत्ता थोडा! मैं तो इतना ही और पी जाता।"

राजा ने देखा कि अब काम बिगड रहा है। उसने आव देखा न ताव बुद्धू को मारने की योजना बना डाली।

उसने पुन अपना सेवक भेजा

"जाओ, उससे कह दो कि शादी से पहले हम्माम मे हो आए।"

इधर राजा ने लोहे के हम्माम को तपाकर लाल करने का हुक्म दिया। उसके करीब जाना ही मुमकिन न था, नहाना तो दूर रहा।

बुद्धू को राजा का आदेश सुनाया गया। वह हम्माम की ओर चल पडा। उसके आगे-आगे हिमबाबा अपना फूस लेकर चल रहे थे। अभी वे हम्माम के बाहर ही थे, तेज गर्मी मे झुलसे जा रहे थे। हिमबाबा ने अपना करामाती फूस फैला दिया, देखते ही देखते वहा खूब ठण्ड हो गई। बडी मुश्किल से बुद्धू नहाया, फिर अलावघर पर बैठकर देर तक बदन सेकता रहा।

राजा ने अपने सेवक को यह पता लगाने भेजा कि बुद्धू का क्या हुआ? राजा सोच रहा था कि वह जलकर खाक हो गया होगा। लेकिन बुद्धू तो अलावघर पर बैठा बदन सेक रहा था। वह बोला

"शाही हम्माम है या बर्फ का गोदाम? इसे क्या जाडे भर गरम ही नही किया था?"

राजा परेशान हो गया। लेकिन अब क्या किया जाए?

बडी देर तक वह उधेड-बुन मे पडा सोचता रहा, सोचता रहा। फिर अच्छी तरह सोच-समझकर बोला

"पडोसी राजा हम पर आक्रमण करनेवाला है। मै योग्य वर की परीक्षा लेना चाहता हू अपनी पुत्री का ब्याह उसी युवक से करूगा, जो युद्ध मे सबसे पराक्रमी सिद्ध होगा।"

दूर-दूर से बडे-बडे पराक्रमी योद्धा एकत्रित होने लगे। बडे भाई भी अपने-अपने घोडे पर सवार हो गए। बुद्धू के पास अपना घोडा तक न था। उसने शाही घुडसाल मे एक घोडा मागा। घोडा भी क्या था? एक खूब बूढी दुमकटी घोडी! वह मरियल घोडी घिसट-घिसटकर चलती थी। सभी योद्धा अपने-अपने घोडे

पर सवार होकर उससे आगे निकल गए और वह टिक-टिक करता उसे हकाता रह गया, पर वह तो टम से मम न हुई।

इसी वक्त जगल से वही बूढे बाबा आ निकले, जिनकी सहायता से बुद्धू को उडनखटोला मिला था।

"दुखी मत हो, बेटे! म तुम्हारी मदद के लिए आया हू," बूढे बाबा ने कहा। "जैसे ही तुम बडे जगल से होकर गुजरोगे, दाहिनी ओर तुम्ह लम्बी-लम्बी शाखाओवाला एक लिण्डन का पेड दिखाई देगा। पेड के करीब जाकर कहना 'लिण्डन, लिण्डन, हटके दिखाओ!' लिण्डन का पेड दो हिस्सो मे बट जाएगा, उसके बीच से जीन कसा हुआ एक घोडा बाहर आएगा। घोडे की जीन से बधा हुआ एक झोला मिलेगा। जब तुम्हे मदद की जरूरत हो, तब तुम कहना 'झोले मे से निकल आओ!' तब देखना क्या होता है! अच्छा, अब चलता हू।"

बुद्धू खुशी मे फूला न समाया। दुमकटी घोडी से उतर गया — उस पर सवार होकर तो कही पहुचने मे रहा। वह पैदल ही जगल की ओर दौड चला। और लिण्डन का पेड ढूढकर उसके करीब पहुचा

"लिण्डन, लिण्डन, हटके दिखाओ!"

लिण्डन का पेड दो हिस्सो मे बट गया। उसके भीतर से एक अद्भुत घोडा निकला — सुनहरा अयाल था और चमचमाता साज। जीन पर योद्धा का कवच रखा था और बगल मे एक झोला लटक रहा था।

बुद्धू ने रक्षा-कवच पहना और जोर से आवाज देकर बोला

"ऐ, झोले मे से निकल आओ!"

कहने भर की देर थी। झोले के अन्दर से सैनिक कूद-कूदकर निकलने लगे। अनगिनत सैनिक बाहर निकल आए।

बुद्धू भाई उचककर घोडे पर सवार हुआ और अपनी सेना के आगे-आगे, हवा से बाते करता हुआ दुश्मन से लडने चल पडा।

शीघ्र ही दुश्मन की सेना से भिडन्त हुई — अपने सैनिको के साथ वह दुश्मन की फौज को गाजर-मूली की तरह काटने लगा। शीघ्र ही उसने दुश्मन के छक्के छुडा दिए। युद्ध खत्म होने से थोडा पहले ही उसकी टाग मे घाव लग गया।

इसी दौरान राजा और राजकुमारी युद्ध देखने आए। राजकुमारी ने देखा कि सूरमा घायल हो गया है, उसने अपने रूमाल के दो टुकडे किए। एक टुकडा अपने पास रख लिया और दूसरे टुकडे की पट्टी बनाकर उसके घाव मे बाध दी।

युद्ध खत्म हुआ, बुद्धू जगल मे लिण्डन के पेड के करीब आकर बोला "लिण्डन, लिण्डन, हटके दिखाओ!"

यह सुनते ही लिण्डन दो हिस्सो मे बट गया। उसने घोडा, झोला और रक्षा-कवच लिण्डन के पेड को वापस कर दिया। सब कुछ वैसे ही छिपा दिया और फिर से वही पैवन्द लगी कमीज और पुरानी पतलून पहन ली।

इधर राजा ने उस सूरमा को बुला भेजा। चारो तरफ हरकारे भेजे गए, सूरमा को ढूढने लगे, जिसके घाव पर राजकुमारी का रूमाल बधा हुआ था। लेकिन वह कही न मिला। तब राजा ने हुक्म दिया कि उसे सारे राज्य मे ढूढा जाए। अमीर-गरीब सभी के यहा उसे ढूढा जाने लगा। राजसेवको ने उसे गरीबो की सभी झोपडियो मे भी ढूढा पर वह कही न मिला। आखिर राजा के दो सेवक नगर की सबसे किनारेवाली झोपडी मे उसे ढूढते हुए आए। वहा दोनो बडे भाई खाना खा रहे थे और बुद्धू भाई रोटिया पकाकर उन्हे खिला रहा था। उसकी टाग पर राजकुमारी का रूमाल बधा हुआ था। राजसेवक उसे तुरन्त शाही दरबार मे हाजिर कर देना चाहते थे।

लेकिन उसने कहा

"भाइयो, मै फटे-पुराने कपडे पहनकर राजा के दरबार मे कैसे जाऊगा! ठहरिए, मै जरा नहा-धो लू। तब तक आप लोग भोजन करिए, मै अभी आता हू।"

"अच्छा, तो ठीक है! जाइए, जल्दी से नहा-धो लीजिए।"

और वे बैठकर खाना खाने लगे। बुद्धू दौडकर जगल मे पहुचा। झट से लिण्डन के पेड के पास आकर बोला

"लिण्डन, लिण्डन हटके दिखाओ!"

यह सुनते ही लिण्डन का पेड दो हिस्सो मे बट गया और भीतर से घोडा निकल

आया। बुद्धू ने झटपट कपडे बदले और वह ऐसा खूबसूरत नोजवान लगने लगा कि उसे देखो तो बस देखते ही रह जाओ। वह उचककर घोडे पर बैठ गया और सीधे राजमहल की ओर चल पडा।

राजा और राजकुमारी की खुशियो का ठिकाना न रहा, उस सूरमा का दोनो ने धूम-धाम से स्वागत किया और उसी क्षण राजा ने अपनी बेटी की शादी उस वीर युवक से कर दी।



कृषकपुत्र इवान

बहुत पहले की बात है। कही एक राजा राज्य करता था। राजा-रानी के कोई सन्तान न थी। और जब बुढापा आया, तो बेटा हुआ। वे खुशी से फूले न समाए। जब बेटा जवान हुआ, तो राजा ने उसकी शादी का निर्णय किया। लेकिन बेटा राजा से बोला

"पिताजी, शादी मैं तब करूगा, जब आप मुझे एक ऐसा घोडा उपहार मे देगे, जो अगारे खाए, लपटे पिए और जब दौडे तो बीस-बीस कोस तक धरती कापे और बलूत की पत्तिया झडने लगे।"

राजा ने अपने सूरमाओ को बुलाकर पूछा

"शायद आप लोगो ने कभी ऐसे घोडे के बारे मे सुना हो, जो अगारे खाए, लपटे पिए और जब दौडे तो बीस-बीस कोस तक धरती कापे और बलूत की पत्तिया झडने लगे?"

सभी ने कहा कि उन्होने न ऐसा घोडा देखा है, न उसके बारे मे सुना है और उसकी तलाश कर पाना नामुमकिन है।

विवश होकर राजा ने सारे राज्य मे यह फरमान जारी कर दिया

"शायद किसी ने ऐसे घोडे के बारे मे सुना हो या खुद उसे ला सकता हो,



ऐसा व्यक्ति तुरन्त मेरे दरबार मे हाजिर हो।"

राजा का यह फरमान किसी गाव मे पहुचा। किसानो ने उसे पढा। एक किसान ने घर आकर अपनी पत्नी को फरमान की मारी वात वतायी।

यह वातचीत किसान का वेटा सुन रहा था। वह वोला

"पिताजी, मै जानता हू ऐसा घोडा कहा है!"

पिता को गुस्सा आ गया

"कोरी बकवास करता है! कहा तो तू घर से बाहर पाव रखता है और गाव के लडके तेरी पिटाई करते हैं, कहा तू ऐसे घोडे की डीग हाक रहा है!"

वेटे ने झटपट कपडे पहने और वोला

"पिताजी, आइए, जरा वाहर चलते ह।"

पिता-पुत्र घर से बाहर निकले। पुत्र ने हाथ बढाकर बलूत का एक पेड पकडा और उमे जमीन तक नीचे झुका दिया। पिता के तो होश ही उड गए और चेहरा भय से फीका पड गया।

"वेटे, अब मुझे विश्वास हो गया।"

वे दोनो परगनाधीश के यहा पहुचे। पुत्र को बाहर छोडकर वह अकेला ही परगनाधीश के सामने हाजिर हुआ और बोला

"हुजूर, गुस्ताखी माफ हो! एक अर्ज है कि "

"कहो "

"हुजूर, मेरा वेटा ऐसा घोडा ला सकता है, जो "

सभी एकसाथ जोर से चिल्लाए

"इन ऐरे-गैरो को काल-कोठरी मे डाल दो! इसका वेटा भी भला कुछ कर सकता है? उमे तो घर से निकलते ही गाव के मव छोकरे पीटते है।"

मो, उन्हे काल-कोठगी में डाल दिया गया। पिता-पुत्र देर तक वहा वन्द बैठे थे, उधर परगनाधीश सोचने लगा

राजा घोडे को देखने के लिए घुडसाल मे पहुचा। घोडे को देखते ही राजा डर गया—इतना बडा घोडा!

"अब मेरे लिए एक इतनी भारी गदा बनवाइए कि चार बैल उसे ढोकर लाए।"

गदा मगवाई गई।

कृपकपुत्र ने उसे आकाश की ओर उछाल दिया और खुद डेढ दिन, डेढ रात तक सोता रहा। जब सोकर उठा, तो देखा कि गदा उडती चली आ रही है। उसने गदा को अपनी कानी उगली पर जैसे ही रोका, वह टकराई और टूटकर टुकडे-टुकडे हो गई।

"ऐसी कमजोर गदा किस काम की! अब ऐसी गदा बनवाइए, जिसे आठ बैलो को ढोना पडे," कृपकपुत्र ने कहा।

सौ साल पुराने बलूत वृक्ष को काटकर एक और गदा बनाई गई, आठ बैलो पर लादकर लाई गई। कृपकपुत्र ने उसे आकाश की ओर उछाल दिया और खुद तीन दिन, तीन रात तक खर्राटे लेता रहा।

जब नीद खुली, तो उसने देखा कि गदा सनसनाती चली आ रही है। उसने उडती हुई गदा को बीच की उगली पर रोक लिया। गदा उगली से टकराई और जमीन मे गज भर धस गई।

"यह मेरे काम की है," उसने कहा।

इवान चलने लगा तो राजा ने कहा

"सुनो, यदि तुम उस घोडे को ढूढकर ला दोगे, तो मै तुम्हे मुह मागा इनाम दूगा और तुम आजीवन राजकोप से मुक्त रहोगे। यह मेरा अटल वचन है।"

वह यात्रा पर निकल पडा। लेकिन राजा को विश्वास न हुआ कि एक मामूली किसान का बेटा अकेला ऐसे अद्वितीय घोडे को हासिल कर पाएगा। राजा ने उसके पीछे अपने दो सूरमाओ को भी भे— दिया। ये कोई मामूली किसान के बेटे न थे—कुलीन घराने के सूरमा थे।

"वेटे, मेरी मदद कर दो, मुझ दरिद्र की कोई भी मदद नही करता, सव मुह मोड लेते है।"

कृपकपुत्र ने छप्पर को उन वीम खालो से ढक दिया जो उसे घोडो को चुनते समय मिली थी।

बुढिया ने उसे आशीर्वाद दिया और वह फिर आगे चल दिया।

राजा हरान था कि उसे मन माफिक घोडा न मिल पाया। वह कृपकपुत्र इवान से बोला

"जाओ, मेरी घुडसाल मे अपने लिए एक घोडा छाट लो। शायद वहा तुम्हे अपने मतलव का घोडा मिल जाए।"

इवान राजा के घुडसाल मे गया। लेकिन वहा भी वही हाल हुआ। इवान जिस घोडे पर हाथ फेरता, वह गिर पडता।

रात होने पर इवान एक खुले मैदान मे पहुचा। उसने एक जोरदार सीटी वजाई। पलक झपकते ही सरपट दौडता हुआ एक घोडा आ पहुचा

"आपने मुझे याद किया, मालिक?"

"चलो, जल्द ही सफर तय करना है।"

"ठीक है, मालिक।"

वह इस घोडे को राजा की घुडसाल के अन्दर ले जाने लगा तो सारी दीवारे भहराकर गिर गई।

कृपकपुत्र इवान ने घोडे को वाधकर उसे सवसे वढिया गेहू खाने के लिए दिया। फिर वह सोने चला गया।

सुवह जव राजा सोकर उठा, तो वोला

"जाओ, इवान से पूछो, शायद उसे सपने मे अपने मतलव का घोडा दिखा हो।"

इवान ने कहा

"हुजूर, मुझे मनमाफिक घोडा मिल गया है—घुडसाल मे वधा हुआ है"

"आखिर इन्हे राजा के यहा भेजने मे हर्ज ही क्या है?'

उन्हे कैद से छोडकर राजा के पास खबर भिजवा दी गई। राजा ने परगनाधीश की चिट्ठी पढी, लेकिन उसे विश्वास न हुआ कि एक मामूली किसान का बेटा इतना कठिन काम कर सकता है। फिर भी राजा ने उसे लाने के लिए अपने कारिन्दे के साथ एक रथ भेज ही दिया।

थोडी देर बाद वह नौजवान राजा के सामने हाजिर किया गया। कूपकपुत्र को देखते ही राजा ने पूछा

"तो तुम ऐसे घोडे को ला सकते हो?"

"जी, हुजूर।"

"तुम्हे क्या चाहिए?"

"मुझे एक अच्छा-सा घोडा और भारी गदा चाहिए।"

राजा ने अपने कारिन्दे को एक परचा लिख दिया

"जाओ, वहा चरागाह मे घोडे चर रहे है। मेरे कारिन्दे को यह परचा दे देना, वह तुम्हे घोडा दे देगा।"

कूपकपुत्र ने वह परचा कारिन्दे को दिखाया।

"जरा ठहरो," कारिन्दे ने कहा। "थोडी देर मे घोडो को पानी पिलाने ले जाऊगा। तब जैसा घोडा चाहो, चुन लेना।"

वह अपने लिए घोडा छाटने लगा। लेकिन काम आसान न था। वह जिस घोडे की दुम पकडता, हाथ लगाते ही उखड जाती। जब अयाल पर हाथ फेरता, तो वह झड जाती। इस तरह बीस घोडो की खाले उसने हाथ लगाते ही खीच ली, पर घोडा न छाट पाया।

मायूस होकर वह घर की ओर चल पडा। रास्ते मे एक खस्ताहाल झोपडी दिखलाई दी। झोपडी के छप्पर मे जगह-जगह छेद थे, जिनमे पानी टपक रहा था।

झोपडी के पास एक बुढिया बैठी थी। कूपकपुत्र को अपनी झोपडी के करीब से गुजरता देखकर उसने विनयपूर्वक कहा

"बेटे, मेरी मदद कर दो, मुझ दरिद्र की कोई भी मदद नही करता, सब मुह मोड लेते है।"

कृपकपुत्र ने छप्पर को उन बीस ख्वानो मे ढक दिया जो उमे घोडो को चुनते समय मिली थी।

बुढिया ने उसे आशीर्वाद दिया और वह फिर आगे चल दिया।

राजा हैरान था कि उमे मन माफिक घोडा न मिल पाया। वह कृपकपुत्र इवान से बोला

"जाओ, मेरी घुडसाल मे अपने लिए एक घोडा छाट लो। शायद वहा तुम्हे अपने मतलब का घोडा मिल जाए।"

इवान राजा के घुडमाल मे गया। लेकिन वहा भी वही हाल हुआ। इवान जिस घोडे पर हाथ फेरता, वह गिर पडता।

रात होने पर इवान एक खुले मैदान मे पहुचा। उसने एक जोरदार सीटी बजाई। पलक झपकते ही सरपट दौडता हुआ एक घोडा आ पहुचा

"आपने मुझे याद किया, मालिक?"

"चलो, जल्द ही सफर तय करना है।"

"ठीक है, मालिक।"

वह इस घोडे को राजा की घुडसाल के अन्दर ले जाने लगा तो सारी दीवारे भहराकर गिर गई।

कृपकपुत्र इवान ने घोडे को बाधकर उसे सबमे बढिया गेहू खाने के लिए दिया। फिर वह सोने चला गया।

सुबह जब राजा सोकर उठा, तो बोला

"जाओ, इवान से पूछो शायद उसे सपने मे अपने मतलब का घोडा दिखा हो।"

इवान ने कहा

"हुजूर, मुझे मनमाफिक घोडा मिल गया है—घुडसाल मे बधा हुआ है"

राजा घोडे को देखने के लिए घुडसाल मे पहुचा। घोडे को देखते ही राजा डर गया – इतना बडा घोडा!

"अब मेरे लिए एक इतनी भारी गदा वनवाइए कि चार वैल उसे ढोकर लाए।"

गदा मगवाई गई।

कृपकपुत्र ने उसे आकाश की ओर उछाल दिया और खुद डेढ दिन, डेढ रात तक सोता रहा। जव सोकर उठा, तो देखा कि गदा उडती चली आ रही है। उसने गदा को अपनी कानी उगली पर जैसे ही रोका, वह टकराई और टूटकर टुकडे-टुकडे हो गई।

"ऐसी कमजोर गदा किस काम की! अब ऐसी गदा वनवाइए, जिसे आठ वैलो को ढोना पडे," कृपकपुत्र ने कहा।

सौ साल पुराने वलूत वृक्ष को काटकर एक और गदा बनाई गई, आठ वैलो पर लादकर लाई गई। कृपकपुत्र ने उसे आकाश की ओर उछाल दिया और खुद तीन दिन, तीन रात तक खर्राटे लेता रहा।

जव नीद खुली, तो उसने देखा कि गदा सनसनाती चली आ रही है। उसने उडती हुई गदा को बीच की उगली पर रोक लिया। गदा उगली से टकराई और जमीन मे गज भर धस गई।

"यह मेरे काम की है," उसने कहा।

इवान चलने लगा तो राजा ने कहा

"सुनो, यदि तुम उस घोडे को ढूढकर ला दोगे, तो मै तुम्हे मुह मागा इनाम दूगा और तुम आजीवन राजकोप से मुक्त रहोगे। यह मेरा अटल वचन है।"

वह यात्रा पर निकल पडा। लेकिन राजा को विश्वास न हुआ कि एक मामूली किसान का वेटा अकेला ऐसे अद्वितीय घोडे को हासिल कर पाएगा। राजा ने उसके पीछे अपने दो सूरमाओ को भी भेज दिया। ये कोई मामूली किसान के वेटे न थे – कुलीन घराने के सूरमा थे।

तावे की मजबूत चहारदीवारी थी और वहा पहुचने के लिए तावे का एक पुल था। उन्होने देखा, कृपकपुत्र इवान की गदा चहारदीवारी को भेदती हुई घर के कोने को तोड चुकी है। उम घर मे डरावने अजदहो का गढ था। गनीमत यह थी कि वे घर मे न थे—कही दूर लडने गए हुए थे।

कृपकपुत्र इवान ने कुलीन घराने के सूरमाओ से कहा

"आज तुम पुल पर पहरा दोगे, और तुम घोडो के पाम सोओगे। और मैं खुद उस घर मे सो जाऊगा।" फिर पुल पर तेनात सूरमा को याद दिलाते हुए वह बोला

"देखो, सो न जाना, पहरा देते रहना "

वह सूरमा घूम-घूमकर पहरा देता रहा। थोडी देर बाद उसे नीद आने लगी। रास्ते मे वह पहले ही काफी थक चुका था। वही पुल पर खर्राटे भरने लगा।

इम बीच कृपकपुत्र इवान की नीद खुल गई, देखा कि आधी रात हो चुकी है। चलने का वक्त हो गया था। उसने कपडे पहने, पुल पर पहुचा, लेकिन पहरा देनेवाला तो सो रहा था।

अचानक धरती कापने लगी। छह सिरवाला अजदहा हवा से बाते करता चला आ रहा था, अपने घोडे से कह रहा था

"अरे, तू घबराने क्यो लगा? हमारा मुकाबला करनेवाला कोई नही। अगर कोई है भी, तो कृपकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह तो यहा इतनी दूर क्या आएगा, कौवा तक उसकी हड्डिया यहा न ला पाएगा। वह अभी छोकरा है, इस लायक नही कि मुझे ललकार सके।"

"कौवा भले ही हड्डी न ला पाए, पर बाका नौजवान तो खुद ही चला आएगा," कृपकपुत्र इवान ने अजदहे से कहा।

अजदहे ने उसे देखते ही पूछा

"भाईचारा करने आए हो या दुश्मनी?"

"भाईचारा नही, दुश्मनी।"

'तो चलो पहले तुम प्रहार करो' अजदहे ने कहा।

'नहीं तुम प्रहार करो। अपने सारे राज में तुम्हारा ही दबदबा है।'

छह सिरवाले अजदहे ने तो कृपकपुत्र को थोडा सा डगमगाया ही लेकिन जब उसने अजदहे पर वार किया तो एकसाथ छहो सिर कटकर गिर पडे।

सुबह उसने पुल पर पहरा देनेवाले से पूछा

"क्यो भाई, पहरा ठीक से दिया था न?"

"हा, ऐसा कि परिन्दा पर न मार पाया" उसने कहा।

अगली रात को इवान ने दूसरेवाले को पुल पर पहरा देने भेजा और उस पहलेवाले को घोडो के पास। और वह सो गया कृपकपुत्र इवान ठीक समय पर उठ बैठा और पुल के पास गया। उसे सुनाई दिया कि धरती सनसना रही है यह तो नौ सिरवाला अजदहा हवा से बाते करता चला आ रहा था अपने घोडे से कह रहा था

"अरे, तू घबराने क्यो लगा? हमारा मुकाबला करनेवाला कोई नही। अगर कोई है भी, तो कृपकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह तो यहा इतनी दूर क्या आएगा कौवा तक उसकी हड्डिया यहा न ला पाएगा।'

"झूठ बोलते हो।" कृपकपुत्र इवान ने कहा। 'बाका नौजवान तो खुद ही चला आएगा।"

"बोलो, भाईचारा करने आए हो या दुश्मनी?'

"भाईचारा नही, दुश्मनी।"

"तो चलो, पहले तुम प्रहार करो।"

"नही, तुम प्रहार करो, आधी दुनिया मे तुम्हारा दबदबा है।"

नौ सिरवाले अजदहे ने जैसे ही प्रहार किया, वैसे ही कृपकपुत्र इवान घुटनो तक जमीन मे धस गया। जब इवान ने अजदहे पर वार किया, तो एकसाथ सात सिर कटकर गिर पडे। फिर दुबारा गदा घुमाते ही अजदहे के बाकी दो सिर भी कटकर अलग हो गए।

कृषकपुत्र इवान घर वापस लौटा। सुबह उसने पुल पर पहरा देनेवाले से पूछा

'क्यों भाई, पहरा ठीक से दिया था न?"

"हां, ऐसा कि चूहा तक न फटक पाया।"

तीसरी रात को कृषकपुत्र इवान ने दोनों सूरमाओं को फिर बुलाया, अपने दस्ताने को दीवार पर टांगते हुए बोला

"तो भाइयो, आज मैं खुद पुल पर पहरा देने जा रहा हूं और तुम लोग मेरे दस्ताने पर नजर रखना। अगर दस्ताने से पसीने की बूंदें टपकें, तो फिक्र मत करना और अगर खून की बूंदें टपकें, तो मेरे घोड़े को छोड़ देना।"

आधी रात से कुछ पहले वह पुल पर पहरा देने आया। उसे सुनाई दिया कि तीस-तीस कोस तक धरती कांपने लगी है। बलूत की पत्तियां झड़ने लगी हैं।

इस बार सबसे बड़ा अजदहा अपने उसी घोड़े पर हवा से बातें करता चला आ रहा था, जो अंगारे खाता था और लपटें पीता था।

वह अपने घोड़े से कह रहा था

"अरे, तू घबराने क्यों लगा? हमारा मुकाबला करनेवाला कोई नहीं। अगर कोई है भी, तो वह कृषकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह यहां इतनी दूर क्या आ पायेगा, कौवा तक उसकी हड्डियां यहां न ला पायेगा।'

तभी कृषकपुत्र इवान ने कहा

"कौवा भले ही हड्डियां न ला पाये, पर बांका नौजवान खुद ही चला आयेगा।

"अच्छा तो बोलो, भाईचारा करने आये हो या दुश्मनी?"

"भाईचारा कैसा? दुश्मनी।"

"तो करो प्रहार पहला!" अजदहे ने कहा।

"नहीं, पहले तुम प्रहार करो। तुम दुनिया भर में सबसे शक्तिशाली हो।

अजदहे के प्रहार करते ही कृपकपुत्र इवान पीला पड गया। फिर कृपकपुत्र ने उस पर प्रहार किया। वे एक दूसरे पर प्रहार पर प्रहार करते रहे।

बारह सिरवाले अजदहे के सिर्फ तीन सिर बचे थे। कृपकपुत्र इवान कमर तक जमीन मे धस चुका था, उसे लग रहा था कि बस अब वह बिल्कुल पस्त हो चला है। तभी अजदहे ने पूछा

"सुनो, तुम्हारे पिता थे?"

"हा, थे।"

"और उनके पास बैल भी थे?"

"हा, थे।"

"उन्हे जोतते भी थे?"

"बेशक, जोतते भी थे।"

"उन्हे सुस्ताने भी देते थे?"

"हा, सुस्ताने भी देते थे।"

"तो फिर हम भी थोडा सुस्ता ले।"

वे सुस्ताने लगे तो कृपकपुत्र इवान ने अपनी गदा घुमाकर घुडसाल की छत पर फेक दी, घुडसाल जहा कि तहा बैठ गई। उसके घोडे ने तत्काल खूटा तोडा, इवान के पास सरपट दौड आया और अपने सुम से जमीन खोदने लगा।

उधर उन सूरमाओ की नीद खुली, देखा कि इवान के दस्ताने से दबादब खून बह रहा है। लेकिन वे कृपकपुत्र इवान की मदद मे कतरा रहे थे। सोचने लगे

"क्यो हम उसकी खातिर अपनी जान खतरे मे डाले?"

इस बीच इवान के घोडे ने अपने मालिक के चारो तरफ मिट्टी खोद डाली। तब कृपकपुत्र इवान ने अजदहे से कहा

"अब तेरी मौत आ गई है।"

कृषकपुत्र इवान घर वापस लौटा। सुबह उसने पुल पर पहरा देनेवाले से पूछा

"क्यो भाई, पहरा ठीक से दिया था न?"

"हा, ऐसा कि चूहा तक न फटक पाया "

तीसरी रात को कृषकपुत्र इवान ने दोनो सूरमाओ को फिर बुलाया, अपने दस्ताने को दीवार पर टागते हुए बोला

"तो भाइयो, आज मैं खुद पुल पर पहरा देने जा रहा हू और तुम लोग मेरे दस्ताने पर नजर रखना अगर दस्ताने से पसीने की बूदे टपके, तो फिक्र मत करना और अगर खून की बूदे टपके, तो मेरे घोडे को छोड देना।"

आधी रात से कुछ पहले वह पुल पर पहरा देने आया। उसे सुनाई दिया कि बीस-बीस कोस तक धरती कापने लगी है। बलूत की पत्तिया झडने लगी हैं।

इस बार सबसे बडा अजदहा अपने उसी घोडे पर हवा से बाते करता चला आ रहा था जो अगारे खाता था और लपटे पीता था।

वह अपने घोडे से कह रहा था

"अरे, तू घबराने क्यो लगा? हमारा मुकाबला करनेवाला कोई नही। अगर कोई है भी, तो वह कृषकपुत्र इवान ही है। लेकिन वह यहा इतनी दूर क्या आ पाएगा कौवा तक उसकी हड्डिया यहा न ला पाएगा।"

तभी कृषकपुत्र इवान ने कहा

"कौवा भले ही हड्डिया न ला पाए, पर बाका नौजवान खुद ही चला आएगा।"

"अच्छा तो बोलो, भाईचारा करने आए हो या दुश्मनी?"

'भाईचारा नहीं दुश्मनी।'

तो चलो, प्रहार करो!" अजदहे ने कहा।

"नहीं, पहले तुम प्रहार करो। तुम दुनिया भर मे सबसे शक्तिशाली हो।'

अजदहे के प्रहार करते ही कृपकपुत्र इवान पीला पड गया। फिर कृपकपुत्र ने उस पर प्रहार किया। वे एक दूसरे पर प्रहार पर प्रहार करते रहे।

बारह सिरवाले अजदहे के सिर्फ तीन सिर बचे थे। कृपकपुत्र इवान कमर तक जमीन मे धस चुका था, उसे लग रहा था कि बस अब वह बिल्कुल पस्त हो चला है। तभी अजदहे ने पूछा

"सुनो, तुम्हारे पिता थे?'

"हा, थे।"

"और उनके पास बैल भी थे?"

"हा, थे।"

"उन्हे जोतते भी थे?"

"बेशक, जोतते भी थे।"

"उन्हे सुस्ताने भी देते थे?"

"हा, सुस्ताने भी देते थे।"

"तो फिर हम भी थोडा सुस्ता ले।"

वे सुस्ताने लगे तो कृपकपुत्र इवान ने अपनी गदा घुमाकर घुडसाल की छत पर फेक दी, घुडसाल जहा कि तहा बैठ गई। उसके घोडे ने तत्काल खूटा तोडा, इवान के पास सरपट दौड आया और अपने सुम से जमीन खोदने लगा।

उधर उन सूरमाओ की नीद खुली, देखा कि इवान के दस्ताने से दबादब खून बह रहा है। लेकिन वे कृपकपुत्र इवान की मदद से कतरा रहे थे। सोचने लगे

"क्यो हम उसकी खातिर अपनी जान खतरे मे डाले?"

इस बीच इवान के घोडे ने अपने मालिक के चारो तरफ मिट्टी खोद डाली। तब कृपकपुत्र इवान ने अजदहे से कहा

"अब तेरी मौत आ गई है।"

"अच्छा, तो तुम मेरी जान ले लो। मरने से पहले बस यही कहना है मेरी मृत्यु के बाद तुम्हे यह घोडा मिल ही जाएगा, जिसकी तुम्हारे राजा को जरूरत है। पर इसे घर तक न ले जा पाओगे। मेरी तीन बहने, मा और पिता – राजा ईग्द – जीवित है। वे तुम्हे तथा तुम्हारे दोनो सूरमाओ को जिन्दा न छोडेगे।"

इवान ने अजदहे के बाकी तीनो सिर काट डाले, लेकिन खुद उधेड-बुन मे पड गया।

ऐन वक्त पर उस बुढिया को, जिसकी झोपडी को इवान ने घोडे की खालो से ढका था, यह पता चला कि इवान सकट मे है। दुनिया मे जो कुछ होता था, वह तो सब जानती थी। इवान की मदद के लिए बुढिया ने अपना कुत्ता भेजा। कुत्ता इवान के पास आकर बोला

"घोडे पर सवार होकर तुम लोग जैसे ही घर की ओर बढोगे, तुम्हे खूब जोर से प्यास लगेगी, गला इस कदर सूखेगा कि बोल न पाओगे। इसी वक्त तुम्हे ठीक दाहिनी ओर एक छोटी-सी झील दिखाई देगी, पानी शीशे की तरह साफ होगा लेकिन उसे मत पीना। गदा से झील पर प्रहार करना – तब देखना कि वहा क्या है। फिर आगे बढ लेना, तुम्हे एक पेड दिखाई देगा, उसके नीचे एक मेज होगी और मेज पर नाना प्रकार के मधुर पेय और व्यजन सजे होगे। खाने की इच्छा होगी, लेकिन मत खाना। मेज पर गदा से प्रहार करना – तब देखना कि वहा क्या है। फिर आगे बढ लेना। एक दूसरा पेड दिखाई देगा, उसके नीचे पलग बिछे होगे। खूब नीद आएगी, पर वहा मत सोना। पलगो पर प्रहार करना – तब देखना कि वहा क्या है।"

इवान ने बुढिया के कुत्ते की बात ध्यान मे सुनी, उसे धन्यवाद दिया, घोडा लिया और सूरमाओ को साथ लेकर घर की ओर चल दिया। चलते-चलते उन्हे प्यास लगी और सचमुच रास्ते के ठीक दाहिनी तरफ छोटी-सी झील दिखाई दी। दोनो सूरमाओ का प्यास के मारे बुरा हाल था।

"खबरदार, पानी मत पीना!" यह कहते ही इवान ने झील [illegible] पर

अपनी गदा दे मारी। खून की तेज धार वह निकली। यह झील सचमुच की झील तो थी नही, खुद अजदहे की बहन थी। वे फिर आगे बढ लिए। थाडा आगे उन्हे दो वृक्ष दिखाई दिए। उन वृक्षो के नीचे खाने-पीने की चीजे और पलग नही थे – वह तो अजदहे की बहने ही थी। उन्हे भी इवान ने अपनी गदा से मार डाला। अचानक इवान ने मुडकर देखा – आसमान पर काली घटा सी घिरती जा रही है। पर घटा नही, अजदहो की मा थी। उसका मुह गुफा की तरह खुला हुआ था। एक जबडा आसमान पर था, तो दूसरा जमीन पर।

कृपकपुत्र इवान बोला

"आओ, भाइयो, तीनो मिलकर मुकाबला करे, मैं अकेला इसे न मार पाऊगा।"

लेकिन वे सूरमा तो थर-थर काप उठे और पीठ दिखा गए।

"मैं अकेला मिट जाऊगा," इवान ने मन ही मन सोचा। सहसा उसे याद आया कि यही पास मे एक खूब बडा लोहारखाना है। उसने अपने घोडे को एड लगाई और घोडा सरपट दौडाने लगा। दोनो सूरमाओ ने भी अपने घोडे उसके पीछे-पीछे दौडाए – उसके बिना जाते भी तो कहा।

पलक झपकते ही वे लोहारखाने पर पहुचे। चिल्लाए

"दरवाजे खोलो।"

लोहारो ने बारह लौह-द्वार खोले, तीनो अपने घोडे सरपट दौडाते अन्दर पहुचे और दरवाजे बन्द हो गए। लेकिन अजदाहिन लोहारखाने के पास बैठ गई और अपनी अग्नि-जिह्वा से लौह-द्वारो को चाटने लगी। कृपकपुत्र इवान ने देखा कि मामला गडबड है। वह लोहारो से बोला

"सुनो, भाइयो, जल्दी से इस लोहारखाने जितना बडा हल बना दो और इतनी ही बडी सडसी।"

पलक झपकते ही लोहार हल और सडसी बनाने लगे। उधर अजदाहिन अपनी अग्नि-जिह्वा को लपलपाती नौवे दरवाजे तक पहुच चुकी थी। लेकिन लोहारो ने झट से हल और सडसी बना ही दी।

जैसे ही अजदाहिन ने आखिरी दरवाजे मे अपना विशालकाय थूथन घुमड़ा, इवान ने मजबूती से उसके होंठ कसकर दबा दिए और उसे हल मे जोतकर बाहर ले आया। अजदाहिन से खेत जोतवाने लगा। खोपड़ी के आकार की बड़ी-बड़ी चट्टाने हल से टकराकर उलटन-पलटन लगी।

खेत जोतने का सिलसिला तब तक चलता रहा, जब तक कि अजदाहिन बेदम होकर जमीन पर गिर न पड़ी।

तब इवान ने अजदाहिन को उठाकर समुद्र मे फेंक दिया, अपने घोड़े को चरागाह मे चरने के लिए छोड़ दिया और सूरमाओं को भगा दिया।

कुपकपुन इवान ने उन्हे दुतकारते हुए कहा

दफा हो जाओ, कायरो! मदद तो दूर मुसीबत मे ही डालते हो। कहने को कुलीन घराने के ह।

और यह कहता हुआ वह उस घोड़े पर सवार हुआ, जो उसने अजदहे से छीना था। इवान चलता रहा, चलता रहा कि अचानक उसे एक बूढ़ा मिला। वह बिना अभिवादन किए आगे निकल गया, जरा ठिठककर उसने सोचा "कितना अशिष्ट हू मैं! उम्र मे छोटा होकर भी मैने बूढ़े दादा को अभिवादन नही किया। पीछे लौटना होगा "

वह बूढ़े के पास आकर बोला

"नमस्ते दादाजी, गुस्ताखी माफ हो। आपका आशीर्वाद लिए बिना आगे निकल गया था। मैं ठहरा गवार "

"हा बेटे! हमेशा बडो का आदर करो, उन्हे अदब से सिर झुकाकर सम्मान दो अब जरा ध्यान से सुनो जब तुम घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ोगे, तो रास्ते मे बैसाखीवाला एक लगड़ा बूढ़ा तुम्हारी ओर तेजी से झपटकर यह कहेगा 'शाबाश, नौजवान, तुम्हारे पास तो बढ़िया घोड़ा है, लेकिन तुम इसे दौड़ाकर भी मुझे पछाड़ न पाओगे। तुम तैश खाए बिना सब्र से काम लेना। उसके साथ दौड़ न लगाना।' और अगर रास्ते मे तुम्हे कोई मिले, उसे साथ ले लेना, इनकार मत करना "

इवान घोडे पर सवार होकर अपनी राह चल दिया। थोडी दूर चलते ही उसे वैसाखी लिए एक मरियल-सा बूढा दिखाई दिया। वह लगडाते हुए करीब आया और इवान से बोला

"शाबाश, नौजवान, तुम्हारे पास तो यह उम्दा घोडा है, मै कमजोर और लगडा ही सही। पर तुम घोड़ा दौडाकर भी मेरा पीछा नही कर सकते।"

"म तुमसे बहस न करूगा। शायद तुम ही ठीक कहते हो "

इवान ने अपनी बात अभी खत्म न की थी कि बूढे ने पलक झपकते ही किसी पैने तीर से हमला किया और उसे काठी से गिराकर, घोडे पर उचककर बैठा और उड गया। इवान उसे मुडकर देख भी न पाया।

यह कोई और नही, अजदहो का राजा ईरद था, अजदहे और उसकी बहनो का पिता।

कूपकपुत्र इवान को बडा गुस्सा आया।

"ठहर जरा, मुए अजदहे! मै पैदल ही तेरा पीछा करूगा!"

इवान ने गदा सभाली और पैदल ही चल पडा उसका जख्म दुख रहा था, अगारे-सा दहक रहा था। जख्म के कारण वह अशक्त होता जा रहा था।

"अब मै विपत्ति मे पड गया!" कूपकपुत्र इवान ने सोचा। "लगता है अजदहो के राजा के तीर मामूली नही, जहरीले ह "

वह थोडा और आगे बढा था कि एकदम अशक्त हो गया। इवान ने सोचा

"अब मै अजदहो के राजा ईरद को मार न पाऊगा। वह मुझे पल भर मे मार डालेगा "

कूपकपुत्र इवान दुख के सागर मे गोते लगाता, मन मारे हुए आगे बढ रहा था कि रास्ते मे उसे एक बूढा मिला। बूढे की दाढी जमीन छू रही थी। कूपकपुत्र ने उसे सिर झुकाकर अभिवादन किया। फिर वे एक दूसरे के बारे मे पूछने लगे कि कौन कहा जा रहा ह?

"बेटे, मैं तुम्हारे साथ चलूगा," बूढे ने कहा।

"लेकिन आप कौन है?"

"मैं कुत्तो को भगाता हू।"

कृपकपुत्र इवान उसकी बात पर हैरान था। लेकिन उसे रास्ते मे बूढे की सलाह याद आ गई और वह चुप रहा।

थोडा आगे बढने के बाद उन्हे दूसरा बूढा मिला। वह बोला

"मैं हिम हू।"

और वह भी उनके साथ हो लिया।

वे चलते रहे कि रास्ते मे उन्हे तीसरा बूढा मिला। वे आपस मे बाते करने लगे कि कौन कहा जा रहा है। तीसरे बूढे ने कहा

"मैं समुद्र की फसले काटकर उनके पूले बनाता हू।"

"चलो, चले हमारे साथ।"

इस तरह रास्ते मे और भी लोग मिलते गए। वे अपना-अपना परिचय देकर उनके साथ होते गए। चौथा व्यक्ति—"खाता, पर नही अघाता", पाचवा—पीता, पर रहता प्यासा", छठा—"दौड लगाता, कभी न थकता", सातवा—"चाबुक मार, बीस कोस तक करू प्रहार", आठवा—"नजर मार, बीस कोस तक देखू यार"।

इस तरह वे सारे के सारे लोग राजा ईरद की रियासत मे पहुच गए। राजा ईरद ने आखे फाड-फाडकर देखा "आज तक किसी भी जीव ने हमारे राज्य की सीमा के करीब कदम न रखा था, और ये तो हमारे राज्य मे आ धमके है" उसने तुरन्त आदेश दिया कि उन पर सात हजार खौफनाक से खौफनाक कुत्ते लकडबग्घे उन्हे नोचने के लिए छोड दिए जाए। वे कुत्ते-लकडबग्घे भी विचित्र थे—सभी के दो-दो सिर थे। उन्हे देखते ही कृपकपुत्र इवान ने कहा

भाइयो, ये खूखार कुत्ते हमे फाडकर टुकडे-टुकडे कर देगे। मै अशक्त हो चुका हू। मुश्किल से पाव घसीटकर चल रहा हू। उनका मुकाबला मै कैसे करूगा?'

"मैं जो हू – खूखार कुत्तो को भगाता हू," पहलेवाले बूढे ने कहा।

पलक झपकते ही उस बूढे ने सारे के सारे खौफनाक कुत्तो को मारकर उनका पहाड लगा दिया। अजदहो के राजा ईरद ने देखा कि उसके अत्यन्त शक्तिशाली कुत्ते दम तोड चुके है। और वे लोग बढते आ रहे है। वे उसके घर के करीब आ रहे है, बाडे मे घुस आये है। जैसे ही वे बडे-बडे लोह द्वारो को पार कर अन्दर पहुचे, दरवाजे अपने आप बन्द हो गए। और वे मानो विशाल लोह-गृह मे कैद हो गए। अजदहो के राजा ईरद ने उन्हे जलाकर खाक करने का आदेश दिया।

लौह-गृह के चारो तरफ लकडियो का पहाड लगाकर आग लगा दी गई, ताकि कोई बचकर न जाने पाए। इसी वक्त हिमवावा ने अपना काम शुरू कर दिया। उनके प्रभाव से लौह-गृह तपकर लाल होने के बजाय बर्फ-सा ठण्डा हो गया। लोहे की दीवारो पर महीन-महीन हिमकण दिखाई पडने लगे। और उधर राजा ईरद के कारिन्दो ने सारे जगल की लकडिया जलाकर खाक कर डाली। अजदहो के राजा ईरद ने आदेश दिया

"दरवाजे खोल दो, मेरा दुश्मन कृपकपुत्र इवान जलकर खाक हो चुका होगा। उसकी राख उठाकर बाहर फेक दो।"

लौह-द्वार खोले गए, लेकिन वे सभी जीवित थे। इवान ने कहा

"तुम कैसे निर्दयी राजा हो – हम लोगो को ठण्डे घर मे ठहरा दिया, गनीमत है कि ठड से अकडे नही "

"कुछ भी हो, अब तेरा सर कलम किया जाएगा। मै जानता हू कि तेरे जिस्म मे जहर फैल चुका है और अब तू मेरा मुकाबला नही कर सकता," यह कहते हुए मन मे सोचने लगा "खैर, इसकी जान तो बाद मे भी ली जा सकती है", और वह बोला

"रात भर मे समुद्र की फसल काटो और उसके पूले बनाकर रख दो। अगर काम हो गया, तो जान की खैर समझना। नही तो गर्दन कलम कर दी जाएगी।"

यह कहकर ईरद सो गया। और उस बूढे ने जो समुद्र की फसल काटता था, रात भर मे फसल काटी और पूले बना दिए। ईरद सुबह सोकर उठा, देखा कि कही एक बूद पानी तक नही है। राजा ईरद को बडा आश्चर्य हुआ। सोचने लगा "कैसा चमत्कार है!" तब उसने दूसरा काम दिया

"मेरे पास जितने भी मवेशी ह, उन्हे काटकर तुम्हारे लिए खाना पकाया जाएगा, अगर सब खा जाओगे, तो अपनी खैर समझना, नही तो "

कृपकपुत्र इवान ने सोचा "काश, मेरा जख्म ठीक हो जाता, तब म सताने का मजा चखाता!" ईरद की कैद मे एक बहुत सुन्दर युवती थी। जब उसे घायल इवान का पता चला तो उसने उसका इलाज शुरू किया—उसे तरह-तरह की चमत्कारिक जडी बूटियो और दवाओ की जानकारी थी। इस बीच राजा ईरद के सारे जानवरो को काटकर उनका मास पकाया गया। कई हजार ड्रमो मे तरह-तरह के पेय भरे गए। खाने की मेज पर वे बैठे ही थे कि कृपकपुत्र इवान उदास होकर गहरे सोच मे डूब गया "इत्ता ढेर सारा खाना और हजारो ड्रम पेय हम लोग तीन साल मे भी खत्म न कर पाएगे!" पर तभी उसे यह ध्यान आया कि उसके साथ दो बूढे भी मौजूद है। एक है "खाता, पर नही अघाता", दूसरा ह पीता, पर रहता प्यासा"। बस, कहने भर की देर थी—वे दोनो बूढे खाने-पीने मे जुट गए और सब कुछ चट कर गए।

राजा ईरद उन्हे आखे फाडकर देख रहा था। वह समझ न पा रहा था कि क्या करे? उन्हे मारना ही चाहता था कि उसने थोडा और सता लेने का निर्णय किया

"कौन कल सुबह सबसे पहले समुद्र का पानी लेकर आएगा—मेरी बेटी सुबेगा या तुम लोग? अगर तुम पहले पानी ले आओगे, तो अपनी जान की खैर समझना नही, तो "

इवान सोच मे पड गया

"काश, जल्दी से मेरा घाव ठीक हो गया होता "

लेकिन वन्दिनी युवती ने कहा

"अफसोस मत करो, घाव ठीक हो चला है।"

रात किसी तरह बीती। सुबह होते ही राजा ईरद की बेटी सुवेगा ने झपट-चालवाले जूते पहने, अदृश्य रहनेवाली टोपी लगाई, बाल्टी उठाई और क्षण भर मे समुद्र के किनारे पहुच गई। उधर इवान और उसके साथी बैठे सोच रहे थे कि इस मुसीबत से कैसे निपटा जाए? यकायक इवान को "दौड लगाता, कभी न थकता" बूढे का ख्याल आया। वह बूढा झपटकर समुद्र की ओर भागा और उसने ईरद की बेटी सुवेगा से पहले अपनी बाल्टी पानी से भर ली। पर लडकी कम चालाक न थी। उसने आव देखा न ताव, बस एक चुटकी निद्राभस्म बूढे के पैरो पर छिडक दी और बूढा तुरन्त गहरी नीद सो गया।

उधर ईरद की लडकी ने बाल्टी उठाई और अपने घर की ओर चल दी, "दौड लगाता, कभी न थकता" होश खोए रास्ते मे पडा था। लेकिन "नजर मार, बीस कोस तक देखू यार" तो यह सब माजरा देख ही रहा था। वह समझ गया कि "दौड लगाता, कभी न थकता" लडकी की चाल का शिकार हो गया है। तब "चाबुक मार, बीस कोस तक करू प्रहार" ने अपना करिश्मा दिखाया। "चाबुक मार" ने अपनी खूब लम्बी चाबुक उठाई और नीद मे खोए बूढे के ऊपर दे मारी। बूढा समझ गया कि काम गडबडा गया है—उसने झट मे बाल्टी उठाई और पवन चाल से उड चला। अजदहे की बेटी सुवेगा घर पहुच ही रही थी कि बूढा उससे पहले ही बाल्टी भर पानी लेकर पहुच गया।

ईरद ने देखा कि दुनिया का ऐसा कोई काम नही, जिसे ये न कर पाए, उसने म्यान से तलवार निकाली और हुक्म दिया कि इन सभी को घसीटकर लौह खलिहान मे लाया जाए।

लौह खलिहान की ओर इवान चल दिया। बन्दिनी युवती ने कहा

"इवान, फिक्र मत करो। तुम्हारा घाव ठीक हो चुका है।"

इवान को लौह खलिहान मे ले गए और जैसे ही राजा ईरद ने अपनी तलवार से उस पर प्रहार करना चाहा, वैसे ही इवान ने ईरद को उठाकर राजमहल की छत पर फेक दिया। राजा ईरद का तुरन्त दम निकल गया। तब इवान ने उस

घोडे को ले लिया, जिसे अजदहो के राजा ने उसे धोखा देकर छीना था। बन्दिनी युवती भी उसके साथ चलने के लिए तैयार थी। तब बूढो ने इवान से विदा लेते हुए कहा

"बेटे, हमने तुम्हारी भरसक मदद की और अब दूसरे भले लोगो की मदद के लिए हम अपनी-अपनी राह चलते है।"

उन सबने इवान को गले लगाया और फिर अपनी राह चल पडे।

कूपकपुत्र इवान ने उस घोडे को लाकर राजा को सोप दिया, जो अगार खाए, लपटे पिए और जब दौडे तो बीस-बीस कोस तक धरती कापे और बलूत की पत्तिया झडने लगे।

लेकिन कुलीन घराने के उन सूरमाओ ने, जिन्हे राजा ने इवान की मदद के लिए भेजा था, उस सुन्दर युवती को देख लिया, जो कभी अजदहो के राजा ईग्द के कैदखाने मे बन्द थी, राजा के पास जाकर बोले

"महाराज, यह सुन्दर युवती मामूली कूपकपुत्र के योग्य नही। वह कुलीन घराने के ही किसी सूरमा की पत्नी बनकर उसके घर की शोभा बढा सकती है।"

कूपकपुत्र इवान के चेहरे का रग फीका पड गया

"महाराज, मैने इस युवती को कैद से छुडाया है। हम लोग आपस मे प्रेम भी करते है। यह मेरी पत्नी ही बनकर रहेगी।"

"नही, तुम ऐसा नही कर सकते," राजा ने कहा।

तब इवान आग-बबूला होकर बोला

"तुमने मुझे मुह मागा इनाम देने का वचन दिया था, कभी न रुष्ट होने का वायदा भी किया था। मैने जान हथेली पर रखकर दैत्यो–अजदहो–का मुकाबला किया और उन्हे मार डाला। बूढी अजदाहिन को समुद्र मे फेका, राजा ईग्द को मौत के घाट उतारा। और तुम मेरी भलमनसाहत की ऐसी कीमत चुकाते हो ऐसा वायदा निभाते हो! ठहरो, अब तुम्हारी खैर नही! म तुम्हे और तुम्हारे वश को एक चुटकी मे मसलकर खत्म कर दूगा!"

यह कहते हुए इवान अपनी गदा घुमाने लगा, देखते ही देखते सारे पेड झुक गए और राजमहल की दीवारे हिलने लगी।

राजा भयभीत हो गया और डर के मारे एक शब्द न बोला। तब कृपकपुत्र इवान ने अपने घर लौटकर उस सुन्दरी से शादी की और वे खुशी-खुशी जीवन बिताने लगे। लेकिन इवान ने कसम खाई कि वह राजाओ-महाराजाओ के वायदे पर अब कभी विश्वास न करेगा।



लिण्डन के पेड और लालची बुढिया की कहानी

यह कहानी बहुत पुरानी है। एक थे बूढे बाबा और एक थी बुढिया। दोनो बहुत गरीब थे। रूखा-सूखा खाते और किसी तरह गुजर-बसर करते। एक दिन बुढिया ने कहा

"अरे, सुनते हो, जाओ, जगल से लिण्डन का पेड काट लाओ। कम से कम जाडे मे तापने का काम देगा।"

"अच्छा, तो मैं चला," बूढे ने लकडी काटने के लिए कुल्हाडी उठाई और जगल की ओर चल पडा।

बूढा जगल मे पहुचा। वहा उसने एक अच्छा-सा लिण्डन का पेड चुन लिया। बूढे ने कुल्हाडी उठाई ही थी कि लिण्डन का पेड इनसान की आवाज मे गिडगिडाते हुए बोला

"अरे, भले मानस! मुझे काटो मत! मैं तुम्हारे दुख मे काम आऊगा।"

बूढे ने डर के मारे कुल्हाडी नीचे कर ली। कुछ देर तक सोचता रहा और घर की तरफ चल दिया।

बूढा वापस घर लौटा और उसने सारा किस्सा बुढिया से कह सुनाया। लेकिन बुढिया ने कहा



"तुम कैसे मूरख हो! उलटे पैर वापस जाओ और लिण्डन के पेड मे कहो कि मुझे घोडागाडी चाहिए। पैदल चलते-चलते हमारे तलवे घिस गए ह।"

"अगर ऐसा हे तो मै चला," बूढे ने यह कहते हुए टोपी पहनी और चल दिया।

बूढा लिण्डन के पेड तले पहुचकर बोला

"लिण्डन के पेड, लिण्डन के पेड! बुढिया ने सवारी के लिए घोडागाडी मागी है।"

"अच्छा, घर जाओ।"

बूढा झटपट घर पहुचा। घर के दरवाजे पर घोडागाडी खडी थी। घोडा हिनहिना रहा था।

"यह बात हुई न! अब हम भी ढग के आदमी हो गए। लेकिन घर तो पहले जमा खस्ताहाल ह। जाओ अब एक घर भी माग लो। शायद दे ही दे।"

बूढे ने लिण्डन के पेड से एक घर भी माग लिया।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा अपने घर की चहारदीवारी के पास आया, पर उसे पहचान न सका। पुराने घर की जगह पर नया, आलीशान घर दिखाई पड रहा था। बूढा-बुढिया बच्चो की तरह खुशिया मनाने लगे।

लेकिन बुढिया ने फिर बूढे मे कहा

"क्या अच्छा होता अगर तुम ढोर-डगर भी माग लाए होते। तब शायद हमे और किमी चीज की जरूरत न रह जाती।"

बूढे ने लिण्डन के पेड मे ढोर-डगर भी मागे। और लिण्डन के पेड ने सिर हिलाकर स्वीकृति देते हुए कहा

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा घर पहुचकर खुशी मे फूला न समाया। घर के लम्बे-चौडे बाडे मे तरह-तरह के ढोर-डगर चहलकदमी कर रहे थे।

"अब हमे और कुछ न चाहिए,' बूढे न बुढिया मे कहा।

"नही, इतना ही काफी न होगा। जाओ, खर्चने के लिए धन-दौलत तो ले आओ।"

बूढे ने लिण्डन के पेड मे धन-दौलत भी मागा।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा घर लौटा। उसने देखा कि बुढिया मेज पर बैठी अशर्फियो की ढेरिया लगा-लगाकर रखती जा रही है।

"अरे बूढे, देखा कितने अमीर है हम!" बुढिया ने कहा। "पर यह बहुत नही। मै चाहती हू कि बस्ती के लोग हमारा रोब मानने लगे। जाओ, लिण्डन के पेड से कह दो कि वह ऐसा करे कि सभी लोग हमसे डरने लगे।"

फिर बूढा लिण्डन के पेड के पास पहुचा। और लिण्डन के पेड से वह सब कह सुनाया जो बुढिया ने कहा था।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा घर आया—घर के चारो तरफ बहुत-से सन्तरी उसके जान-माल की रक्षा के लिए तैनात थे। घूम-घूमकर पहरा दे रहे थे। लेकिन उससे बुढिया की हवस कम न हुई। और लालच बढा।

"अरे, बूढे! अब ऐसा करो कि गाव के सारे लोग हमारे गुलाम बन जाए और तो अब हमे कुछ न चाहिए। सभी कुछ मिल चुका है।"

बूढा लिण्डन के पेड के पास आया और उसने वह सब कह सुनाया, जो बुढिया ने इस बार मागा था। बडी देर तक वह पेड खामोश रहा। और अन्त मे बोला

"घर जाओ और देखो।"

बूढा घर पहुचा। उसने देखा कि सारा ठाट-बाट गायब हो चुका है। आलीशान घर की जगह पर वही खस्ताहाल घर है। घर के पास ही बुढिया खडी है।

सबको गुलाम बनाने के लोभ की बुढिया को यह सजा दी लिण्डन के पेड ने।

"तुम कैसे मूरख हो! उलटे पैर वापस जाओ और लिण्डन के पेड से कहो कि मुझे घोडागाडी चाहिए। पैदल चलते-चलते हमारे तलवे घिस गए है।"

"अगर ऐसा है तो मै चला," बूढे ने यह कहते हुए टोपी पहनी और चल दिया।

बूढा लिण्डन के पेड तले पहुचकर बोला

"लिण्डन के पेड, लिण्डन के पेड! बुढिया ने सवारी के लिए घोडागाडी मागी है।"

"अच्छा, घर जाओ।"

बूढा झटपट घर पहुचा। घर के दरवाजे पर घोडागाडी खडी थी। घोडा हिनहिना रहा था।

"यह बात हुई न! अब हम भी ढग के आदमी हो गए। लेकिन घर तो पहले जैसा खस्ताहाल है। जाओ अब एक घर भी माग लो। शायद दे ही दे।

बूढे ने लिण्डन के पेड से एक घर भी माग लिया।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा अपने घर की चहारदीवारी के पास आया, पर उसे पहचान न सका। पुराने घर की जगह पर नया, आलीशान घर दिखाई पड रहा था। बूढा-बुढिया बच्चो की तरह खुशिया मनाने लगे।

लेकिन बुढिया ने फिर बूढे से कहा

क्या अच्छा होता अगर तुम ढोर-डगर भी माग लाए होते। तब शायद हमे और किसी चीज की जरूरत न रह जाती।"

बूढे ने लिण्डन के पेड से ढोर-डगर भी मागे। और लिण्डन के पेड ने सिर हिलाकर स्वीकृति देते हुए कहा

ठीक है। घर जाओ।"

बूढा घर पहुचकर खुशी से फूला न समाया। घर के लम्बे-चौडे बाड़ मे तरह तरह के ढोर-डगर चहलकदमी कर रहे थे।

अब हम और कुछ न चाहिए,' बूढे ने बुढिया से कहा।

"नही, इतना ही काफी न होगा। जाओ, खर्चने के लिए धन-दोलत तो ले आओ।"

बूढे ने लिण्डन के पेड से धन-दोलत भी मागा।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा घर लौटा। उसने देखा कि बुढिया मेज पर बैठी अशर्फियो की ढेरिया लगा लगाकर रखती जा रही है।

"अरे बूढे, देखा कितने अमीर है हम!" बुढिया ने कहा। "पर यह बहुत नही। मै चाहती हू कि बस्ती के लोग हमारा रौब मानने लगे। जाओ, लिण्डन के पेड से कह दो कि वह ऐसा करे कि सभी लोग हमसे डरने लगे।"

फिर बूढा लिण्डन के पेड के पास पहुचा। और लिण्डन के पेड से वह सब कह सुनाया जो बुढिया ने कहा था।

"ठीक है। घर जाओ।"

बूढा घर आया -- घर के चारो तरफ बहुत-से सन्तरी उसके जान-माल की रक्षा के लिए तैनात थे। घूम-घूमकर पहरा दे रहे थे। लेकिन उससे बुढिया की हवस कम न हुई। और लालच बढा।

"अरे, बूढे! अब ऐसा करो कि गाव के सारे लोग हमारे गुलाम बन जाए और तो अब हमे कुछ न चाहिए। सभी कुछ मिल चुका है।"

बूढा लिण्डन के पेड के पास आया और उसने वह सब कह सुनाया, जो बुढिया ने इस बार मागा था। बडी देर तक वह पेड खामोश रहा। और अन्त मे बोला

"घर जाओ और देखो।"

बूढा घर पहुचा। उसने देखा कि सारा ठाट-बाट गायब हो चुका है। आलीशान घर की जगह पर वही खस्ताहाल घर है। घर के पास ही बुढिया खडी है।

सबको गुलाम बनाने के लोभ की बुढिया को यह सजा दी लिण्डन के पेड ने।



बूढे की बेटी और बुढिया की बेटी

एक था बूढा और एक थी बुढिया। उनके एक बेटी थी। समय आया तो बुढिया ने पति से कहा

"अगर कभी तुम्हे दूसरी शादी करने का ख्याल आए तो तुम उस विधवा से शादी न करना, जो हमारे पडोस मे अपनी बेटी के साथ रहती है। वह तुम्हारी तो पत्नी होगी, लेकिन हमारी बेटी की मा नही।"

"ठीक है, मै शादी ही नही करूगा," बूढे ने कहा।

बुढिया ने आख मूद ली और वायदे के अनुसार बूढा विधुर जीवन बिताने लगा। अभी कुछ दिन ही बीते थे कि एक बार गाव की ओर आते वक्त रास्ते मे वह उस विधवा के घर जा पहुचा, जिससे शादी करने के लिए बुढिया ने मना किया था। इस तरह बूढा शादी न करने के वायदे को भूल गया। वह विधवा के घर मे बैठकर देर तक बाते करता रहा और अन्त मे उसने शादी का प्रस्ताव भी रख दिया। विधवा की खुशी का ठिकाना न रहा। वह तो चाहती ही यही थी।

"मै बहुत दिन से इन्तजार कर रही थी!" विधवा ने कहा।



विधवा ने घर का सारा सामान समेटा और अपनी बेटी को साथ लेकर बूढ़े के घर चली आई।

इस तरह बूढ़े की बेटी और बुढ़िया की बेटी एक ही घर में साथ-साथ रहने लगी। लेकिन दुष्ट औरत ने बूढ़े की लड़की का सुख-चैन छीन लिया। छोटी-छोटी बात पर सौतेली बहन भी उससे झगड़ती और कलह मचाती।

अक्सर गाव के चौपाल मे लड़किया रात मे एकत्रित होती, मिल-जुलकर काम करती। बूढ़े की बेटी वहा सूत कातती, लच्छिया बनाती और बुढ़िया की बेटी गुलछर्रे उड़ाती, मजे से घूमती। उसका काम मे मन न लगता। वह कभी धागे उलझाती, कभी तोड़ती। सुबह तड़के वे दोनो घर को लौटती। अहाते की बाड़ पर पहुचकर बुढ़िया की लड़की कहती

"दीदी, लाओ, ये लच्छिया मुझे दे दो। मै इन्हे सभाले रहूगी। इतने मे तुम बाड़ लाघ लोगी।"

"ठीक है।" सौतेली बहन उसे बनी हुई लच्छिया दे देती।

इधर बूढ़े की बेटी बाड़ लाघती, उधर बुढ़िया की लड़की लच्छिया लेकर अपनी मा के पास पहुच जाती और नमक-मिर्च लगाकर खूब कान भरती कि सौतेली बेटी मटरगश्ती करती है, धागे तोड़ती और उलझाती है।

"मैने तो सूत काता काम निपटाया और झट से घर चली आई। और उसे देख लो! कितनी काहिल और लापरवाह है!"

बूढ़े की लड़की घर आते ही सौतेली मा की गालिया सुनती और मार खाती। फिर वह बुढ़िया सौतेली लड़की को कोसती हुई जली-कटी सुनाकर बूढ़े से शिकायत करती।

"तुम्हारी लड़की तो किसी काम की नही है! गुलछर्रे उड़ाती है! न कोई काम करना चाहती है, न सीखना। और तुम उसे सिर पर चढ़ाए रहते हो।"

सौतेली मा बूढ़े की बेटी को तरह-तरह से सताती, खूब ताने देती, बूढ़े के कान भरती लेकिन वह लड़की गूगी बनी सब सहती रहती, चुपचाप घर का काम

करती रहती। सौतेली मा को वह फूटी आख न सुहाती। पिता को अपनी बेटी पर तरस आता। एक दिन मा-बेटी ने आपस मे राय-मशविरा किया। आखिर बूढे की लडकी से छुटकारा कैसे पाया जाए?

सौतेली मा ने बूढे को दिन-रात परेशान करना शुरू कर दिया।

"तुम्हारी लडकी आलसी और काम-चोर है। वह तो कुछ करना ही नही चाहती। सिर्फ घूमती और सोती है। लेकिन तुम भी उसे कुछ नही कहते। उसे कही मजूरी पर ही लगा दो।"

"कहा भेजू उसे काम करने?"

"अगर कोई रास्ता नही दिखता तो उसे जहा चाहो, वहा छोड आओ। मै उस कलमुही की शक्ल नही देखना चाहती!"

दुष्ट औरत ने बूढे का जीना हराम कर दिया। घर मे दिन-रात कोहराम मचा रहता। उसे अपनी बेटी के लिए अफसोस होता, लेकिन वह आखिर करता ही क्या?

एक दिन पिता अपनी बेटी को साथ लेकर घर से चल पडा। वे दोनो एक बियाबान जगल मे पहुचे। बेटी ने कहा

"पिताजी, अब आप लौट जाइए। मै आगे अकेली चली जाऊगी। कही तो कोई काम मिल ही जाएगा।"

"ठीक है, बेटी," पिता ने भरे गले से कहा।

पिता-पुत्री ने विदा ली। दोनो अपनी-अपनी राह चल दिए।

बूढे की बेटी घने जगल से होकर गुजरती रही। अचानक उसने सेब का एक पेड देखा—उजडा-सा, पूरा झाड-झखाड जैसा लग रहा था। आख गडाकर देखो तो मुश्किल से दिखता था। सेब के पेड ने कहा

"लडकी, लडकी! मेरे लिए थाला बना दो, मुझे सीच दो! मै इस उपकार का बदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

बूढे की बेटी झट से काम मे जुट गई। उसने सेब के पेड के लिए बढिया-सा

थाला बनाया, निराई की और मिट्टी डालकर सिचाई कर दी। सेब के पेड ने आभार प्रगट किया। लडकी आगे बढ चली।

वह चलती रही, चलती रही, अचानक उसे प्यास लगी। वह चश्मे के पास पहुची। चश्मे ने कहा

"लडकी, लडकी! तुम मुझे साफ कर दो, मेरे तट को सवार दो। मै इस उपकार का बदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

लडकी ने चश्मे का कूडा-कचडा साफ करके चारो तरफ रेत बिछाकर चश्मे को सवार दिया। चश्मे ने आभार प्रगट किया। और लडकी आगे बढ चली।

इसी वक्त उसे एक कुत्ता मिला। उसके मैले-कुचैले झबरीले बाल बेहद उलझे हुए थे और उनमे ढेरो काटे-तिनके फसे हुए थे। इतना गदा था वह कि उसकी ओर देखते घिन आती थी। उसने लडकी से कहा

"लडकी, लडकी! मुझे साफ कर दो, मेरे बाल सवार दो। मै इस उपकार का बदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

लडकी ने काटे-तिनके निकालकर कुत्ते को साफ-सुथरा बनाया, उसके बाल सवार दिए।

"धन्यवाद, देवी!" कुत्ते ने कहा।

धन्यवाद किसलिए?" यह कहकर लडकी आगे बढ चली।"

अचानक उसे एक अलावघर दिखा। टूटा-फूटा, स्याह अलावघर ठण्डा पडा था। उसके बगल मे ही मिट्टी पडी थी। अलावघर ने कहा

"लडकी, लडकी! मुझे झाड दो, बुहार दो, मिट्टी से सवार दो। मै इस उपकार का बदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

लडकी ने झट से अलावघर की मरम्मत करके उसे अच्छी तरह लीप पोत दिया, उस पर तरह-तरह की फूल-पत्तिया बना दी। अलावघर सुन्दर लगने लगा। अलावघर ने लडकी के प्रति आभार प्रगट किया। लडकी आगे बढ चली।

लडकी चलती रही, चलती रही, रास्ते मे उसे एक औरत मिली।

"नमस्ते, बिटिया," उस औरत ने कहा।

"नमस्ते।"

"तुम कहा जा रही हो?"

"नौकरी की तलाश मे हू। शायद कही मिल जाए?"

"मेरे यहा नौकरी करोगी?"

"बडी मेहरबानी होगी।"

"यू तो मेरे घर मे कोई मुश्किल काम नही है। बस, जसे म कहती हू, वैसे ही करती जाओ। कर पाओगी?"

"क्यो नही? एक बार बता दीजिए फिर मै खुद करती जाऊगी।"

औरत अपने घर आकर लडकी से बोली

"वह देखो, बडे-बडे पतीले रखे है। रोज सुबह-शाम इन पतीलो मे पानी गर्म करके कठौते मे डाल दोगी, फिर उसमे आटा मिलाकर घोल तैयार करोगी। सिर्फ इतना ध्यान रखना कि घोल बहुत गर्म न हो। इसके बाद घर की दहलीज पर खडी होकर तीन बार जोर से सीटी बजाना। सीटी की आवाज सुनकर तरह-तरह के जीव-जन्तु आ जाएगे – तुम उन्हे भरपेट खाना खिला देना। हा, उनमे डरने की कोई बात नही – तुम्हे कोई नुकसान न पहुचेगा।"

लडकी ने कहा

"आप फिक्र न करे। जैसे आपने कहा है, ठीक वैसे ही करूगी।"

शाम होते ही उन्होने खाना खाया, अलाव दहकाया ओर पानी गर्म करके कठौते मे डाला और आटा मिलाकर खाने लायक घोल तैयार कर दिया। उसके बाद दहलीज पर खडी होकर लडकी ने तीन बार जोर से सीटी बजाई – पलक झपकते ही तरह-तरह के जीव-जन्तु वहा खाने के लिए इकट्ठे हो गए। छककर खा चुकने के बाद सभी जीव अपनी-अपनी राह चल दिए।

इस प्रकार साल भर तक बूढे की बेटी ने वहा नौकरी की और वह सब सुगी-सुगी करती रही, जो उसे घर की मालकिन सहेजती। एक साल समाप्त होने के

बाद मालकिन ने बूढे की बेटी से कहा

"बेटी, आज तुम्हे मेरे यहा काम करते हुए एक साल हो गया है। अगर चाहो तो यहा पहले की तरह काम करती रहो। लेकिन घर जाने का इरादा हो तो मुझे कोई एतराज नही। तुमने जी लगाकर मेरे घर मे काम किया है, मैं तुमसे बहुत खुश हू।"

लडकी ने मालकिन को धन्यवाद दिया और बोली

'मालकिन अब मैं अपने घर जाना चाहती हू। आपकी नेकदिली को मैं जीवन भर न भुला पाऊगी।

तब मालकिन ने कहा

'जाओ रास्ते के लिए अपनी मनपसन्द घोडागाडी ले लो।"

नेकदिल मालकिन ने तरह-तरह के कीमती उपहार उसकी घोडागाडी मे लाद दिए और खुद उसे जगल के किनारे तक छोडने आई। वहा उन दोनो ने एक दूसरे से विदा ली। मालकिन अपने घर लौट गई और बूढे की बेटी खुशी-खुशी अपने घर की ओर चल पडी।

घोडागाडी पर सवार होकर बूढे की बेटी उस अलावघर के करीब पहुची, जिसे उसने कभी लीप-पोतकर सवारा था। इस वक्त अलावघर मे मुलायम-मुलायम रोटिया पक रही थी। अलावघर ने कहा

'लडकी, लडकी! गरम-गरम रोटिया लेती जाओ। तुमने मुझे लीप-पोतकर सवारा था।"

लडकी ने आभार प्रगट किया और जैसे ही वह अलावघर के सामने पहुची रोटिया खुद-ब-खुद उछल-उछलकर घोडागाडी मे गिरने लगी। अलावघर का दरवाजा बन्द हो गया और लडकी आगे बढ गई।

घोडागाडी पर सवार होकर बूढे की बेटी चली जा रही थी। रास्ते मे उसे कुत्ता दिखलाई दिया। उसके गर्दन पर चमचमाती हुई एक खूबसूरत सी हमेल लटकी हुई थी। कुत्ता दौडता हुआ घोडागाडी के पास आया और बोला

"लडकी, लडकी! तुम्हारे लिए उपहार लाया हू। याद है तुमने मेरे काटे निकालकर बाल सवारे थे, मुझे प्यार से सहलाया था।"

लडकी ने उपहार ले लिया और आभार प्रगट करके खुशी-खुशी आगे बढ चली।

घोडागाडी चलती रही, चलती रही कि अचानक उसे जोर से प्यास लगी। गला सूखने लगा।

"उस चश्मे का पानी, जिसे मैने साफ किया था! वहा रुककर पानी पिएगे, प्यास बुझ जाएगी," बूढे की बेटी ने सोचा।

लडकी चश्मे के पास आई। उसने देखा कि चश्मे मे लबालब पानी भरा है। चश्मे के किनारे सोने की एक बाल्टी और सोने का एक लोटा रखा है।

चश्मे ने कहा

"रुककर पानी पी लो और बाल्टी-लोटा साथ लेती जाओ।"

लडकी पानी पीने लगी। लेकिन यह तो शर्बत था। ऐसा जायकेदार कि उसने कभी न पिया था।

लडकी ने सोने की बाल्टी भर ली और लोटा ले जाना नही भूली। घोडा-गाडी पर सवार होकर फिर चल पडी।

रास्ते मे उसे सेब का पेड मिला। ऐसा घना और हरा-भरा कि बस देखते ही रह जाओ। उस पेड पर सेब भी कोई मामूली न थे। सोने-चादी के सेब लदे हुए थे। सेब के पेड ने कहा

"लडकी, लडकी! सेबो का उपहार लेती जाओ। याद है तुमने थाला बनाया था, निराई की थी, मेरा जीवन सवारा था।"

लडकी ने पेड के प्रति आभार प्रगट किया और अपनी घोडागाडी उस पेड के नीचे खडी कर दी। सेब अपने आप टूट-टूटकर घोडागाडी मे गिरने लगे।

बूढे की बेटी खुशी-खुशी घर आ पहुची और आवाज देते हुए बोली

"पिताजी! बाहर आइए! देखिए मै क्या लाई हू!"

बूढा अपनी झोपडी मे निकलकर बाहर आया। उसने देखा कि बेटी आ गई है। बूढे की खुशी का ठिकाना न रहा। झट मे बेटी के पास आकर बोला

"अरी, बिटिया रानी! इतने दिन तुम कहा रही?"

"नौकरी करने गई थी, पिताजी," बेटी ने कहा। "दौलत अन्दर ले चलिए।"

और धन-दौलत के क्या कहने? गाडी भर सामान लदा था। इसके अलावा कीमती हमेल भी था!

पिता-पुत्री सामान ढो-ढोकर अन्दर ले जाने लगे। अच्छी-अच्छी, सजी-सवरी चीजे! बस, देखते ही बनती थी। सौतेली मा की छाती पर साप लोट गया। उसने देखा कि बूढे की बेटी तरह-तरह की कीमती चीजे लेकर आई है। वह तो बूढे के पीछे पड गई और जिद करने लगी

"मेरी बेटी को भी वही छोड आओ, जहा अपनी बेटी को ले गए थे!"

बुढिया ने तब तक बूढे का पीछा न छोडा जब तक कि उसने हामी न भर दी।

बूढे ने कहा

"बेटी से कह दो तैयारी करे, उसे भी छोड आता हू।"

कहने भर की देर थी। बुढिया की बेटी झटपट तेयार हो गई। शीघ्र ही बेटी ने बुढिया से विदा ली। ओर बूढा चल पडा बुढिया की बेटी को साथ लेकर।

जगल मे पहुचकर बूढा बोला

"जाओ, बेटी, अपना सफर तय करो। अब मै घर जाता हू।"

"ठीक हे," बुढिया की बेटी ने कहा।

वे दोनो अपनी-अपनी राह चल पडे बुढिया की बेटी जगल की तरफ चल पडी ओर बूढा घर लौट आया।

बुढिया की बेटी घने जगल से होकर गुजरती रही। अचानक उसने सेब का एक पेड देखा—उजडा-सा, भूरा झाड-झखाड जैसा लग रहा था। आख गडाकर देखो तो मुश्किल से दिखता था।

"लडकी, लडकी! मेरे लिए थाला बना दो, मुझे सींच दो! मै इस उपकार का बदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

"भला मै तेरे लिए अपने हाथ मैले करूगी! मेरे पास वक्त नही है," यह कहकर वह आगे वढ चली।

थोडा आगे वढने पर उसे एक चश्मा दिखाई पडा। ऐसा मैला कि उसकी सतह हरी काई से ढकी हुई थी।

चश्मे ने कहा

"लडकी, लडकी! मुझे साफ कर दो, मेरे तट को सवार दो! मै इस उपकार का वदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

"अरे, क्यो मेरा सिर खाए जा रहे हो! मेरे पास इतना वक्त नही—मुझे जाना है!"

बुढिया की लडकी ने दो टूक जवाब दिया और आगे वढ गई।

चलते-चलते वह अलावघर के पास आई। अलावघर ने कहा

"लडकी, लडकी! मुझे झाड दो, बुहार दो, मिट्टी मे सवार दो। मै इस उपकार का वदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

"तूने मुझे वेवकूफ समझ रखा है। मै भला तुझे छूकर अपने हाथ मैले करूगी," बुढिया की लडकी ने कहा ओर झल्लाती, पैर पटकती आगे वढ चली। रास्ते मे उसने एक कुत्ता देखा, ऐसा मैला-कुचैला कि उसे देखकर घिन आए। कुत्ते ने लडकी से कहा

"लडकी, लडकी! मुझे साफ कर दो, मेरे वाल सवार दो। मै इस उपकार का वदला चुकाऊगा, तुम्हारे काम आऊगा!"

लडकी ने कुत्ते को देखकर कहा

"अरे, सोच-समझकर बोला कर! तुझे तो देखकर वैसे ही घिन आती है। भला हाथ कौन लगाए? कम से कम मुझसे उम्मीद न करना!" यह कहकर वह आगे वढ गई।

थोडी दूर चलने के बाद उसे वही औरत रास्ते म मिली, जिसके घर म बूढे की बेटी ने चाकरी की थी।

"नमस्ते, बिटिया," औरत ने कहा।

"नमस्ते, मौसी।"

"कहा जा रही हो?" औरत ने पूछा।

"काम की तलाश मे हू।'

"मेरे यहा नौकरी करोगी?"

"बडी मेहरबानी होगी। लेकिन क्या करना होगा?"

"आसान-सा काम है, बेटी! बस, जैसे मै कहती हू, वैसे ही करती जाओ। कर पाओगी?"

"क्यो नही? एक बार बता दीजिये, बाद मे तो मै खुद ही कर लूगी!"

"अच्छा तो सुनो! उन पतीलो को देख रही हो? रोज सुबह-शाम इन पतीलो मे पानी गरम करके कठौते मे डालना है, फिर उसमे आटा मिलाकर घोल तैयार करना है। सिर्फ इतना ध्यान रखना कि घोल बहुत गर्म न हो! इसके बाद घर की दहलीज पर खडी होकर तीन बार जोर से सीटी बजाना। सीटी की आवाज सुनकर तरह-तरह के जीव-जन्तु आ जाएगे—तुम उन्हे भर पेट खाना खिला देना। हा, उनसे डरना मत, तुम्हे कोई नुकसान न होगा। बोलो, यह काम कर लोगी?"

"जी, कर लूगी।"

शाम होते ही बुढिया की बेटी ने पानी गरम करने के लिए आग पर पतीले रख दिए, जब पानी खौलने लगा तो उसने तौल भर आटा उसमे डाल दिया। देखते ही देखते जानवरो का खाना आटे की गाढी लेई बन गया। इस लेई को उसने जानवरो के कठौते मे उडेल दिया और खुद जाकर दहलीज पर खडी हो गई। उसने एक बार जोर से सीटी बजाई, दो बार और तीसरी बार पलक झपकते ही तरह-तरह के वन्य जीव वहा आने लगे और जैसे ही वे खौलती हुई

लेई मे मुह डालते, पट से गिरकर मर जाते! इस तरह मारे जानवर वही ढेर हो गए। खौलती हुई लेई ने उन्हे झुलसा डाला।

इधर बुढिया की लडकी ने देखा कि सारे जीव-जन्तु भर पेट खाकर सो गए है, उठते ही नही है। लडकी ने मालकिन से कहा

"मालकिन, कैसे अजीब जानवर है—खाकर पसर गए, उठते ही नही है।"

"क्या बकती हो?" मालकिन ने चिल्लाकर कहा और झपटकर कठोते के करीब आ पहुची।

लेकिन वहा तो सभी जानवर मरे पडे थे। मालकिन ने रोते-कलपते हुए सिर पकड लिया। उसने चीखते हुए कहा

"बाप रे बाप! अरे यह क्या किया! तूने तो सभी को मार डाला!"

वह देर तक दहाडे मार-मारकर रोती रही, बुढिया की लडकी को कोसती रही। लेकिन पछताने से होता भी क्या? मालकिन ने मरे हुए जानवरो को एक कोठरी मे बन्द करके बाहर से ताला लगा दिया।

इस तरह रो-पीटकर बुढिया की बेटी का एक साल पूरा हुआ। मालकिन ने बुढिया की बेटी को यात्रा के लिए मरियला घोडा और जर्जर गाडी दी। और उन मरे हुए जानवरो को खूब बडी-सी गठरी मे बाधकर लडकी के साथ गाडी मे भेज दिया।

बूढे की बेटी उस अलावघर के पास पहुची। उसे जोर से भूख लगी थी। और अलावघर मे लाल-लाल, मुलायम रोटिया पक रही थी। बुढिया की बेटी का जी ललचाया। जैसे ही उसने रोटी की ओर हाथ बढाया—वे कूद-कूदकर अलावघर के अदर खिसक गई। अलावघर का दरवाजा फटाक से खुद-ब-खुद बन्द हो गया। तब अलावघर ने कहा

"लडकी, तुमने मुझे सवारने से इनकार किया था—जाओ, तुम्हे रोटिया नही मिलेगी!"

लडकी रोती हुई आगे बढ चली।

रास्ते मे उसे खूब जोर से प्यास लगी। उसने देखा कि चश्मे मे पानी वह रहा है। जैसे ही वह पीने के लिए आगे बढी कि अचानक चश्मा सूख गया। चश्मा फुसफुसाते हुए बोला

"लडकी, तुमने मेरी सहायता नही की—जाओ, तुम्हे पानी नही मिलेगा।"

लडकी रोती हुई आगे बढ चली।

घोडागाडी पर सवार होकर वह सेव के पेड तक पहुची। पेड सोने-चादी के सेबो से लदा हुआ था। लडकी ने सोचा

"मा के लिए सेव तोड लू।"

जैसे ही लडकी सेव तोडने के लिए लपकी, सारे सेव ऊपर हो गए। तब सेव का पेड बोला

"लडकी, तुमने थाला नही बनाया, सिचाई नही की—जाओ, तुम्हे सेव नही मिलेगा।"

लडकी रोती हुई आगे बढ चली।

रास्ते मे कुत्ता मिला। उसकी गर्दन पर चमचमाती हुई एक सुन्दर-सी हमेल लटक रही थी। बुढिया की लडकी उस कुत्ते की तरफ दोडी ताकि हमेल छीन सके। लेकिन कुत्ते ने कहा

"लडकी, तुमने न मुझे सहलाया, न मेरे बाल ही सवारे—यह माला तुम्हे नही मिलेगी।"

यह कहते हुए कुत्ता वहा से भाग गया। बुढिया की बेटी रोने लगी।

इस तरह मरियल घोडे ओर जर्जर गाडी पर सवार होकर वह लडकी अपने घर पहुची और बूढे-बुढिया को पुकारने लगी

'लो, ले लो माल-मत्त।"

बूढा-बुढिया झपटकर झोपडी से बाहर आए, हाथ पकडकर बेटी को खुशी-खुशी अन्दर ले गए। घोडागाडी पर लदी गठरी उतारी गई। उसे अन्दर लाकर खोला गया। लेकिन यह क्या? माल-खजाने के नाम पर उस गठरी मे मरे हुए

मेंढक, छिपकलिया और साप मिले। बुढिया सिर पीटकर चिल्लाई

"अरी, तू यह सब क्या उठा लाई है?"

तब बुढिया की लडकी ने सारा किस्सा कह सुनाया। यह सुनकर बुढिया ने कहा

"आग लगे तेरी कमाई को। अच्छा अब तू घर की रोटी तोड। मेरी सौत की बेटी माल-खजाने लाए और तू लाए मरे हुए साप-बिच्छू। गनीमत है कि तू सही-सलामत घर लौट आई।"

इस तरह बुढिया और उसकी बेटी रूखा-सूखा खाकर जिन्दगी गुजार रही है बूढे की बेटी का ब्याह हो गया और बुढिया की बेटी कुवारी ही बैठी है।



तीन भाई

तीन भाई अनाथ हो गए। न उनके मा-बाप थे, न घर-द्वार। तीनो भाई अपनी गरीबी से तग आकर गाव-गाव, डगर-डगर रोजी-रोटी की तलाश मे निकल पडे। वे सोचते हुए चले जा रहे थे "काश, किसी भले आदमी के यहा काम मिल जाता!" अचानक उन्हे एक बहुत बूढा राहगीर दिखाई दिया। उसकी दाढी खूब लम्बी और सफेद थी। बूढे ने भाइयो के करीब आकर पूछा

"बच्चो, कहा जा रहे हो?"

भाइयो ने उत्तर दिया

"मजूरी की तलाश मे।"

"क्या तुम्हारे पास अपनी खेतीबारी नही है?"

"नही," भाइयो ने उत्तर दिया। "काश, हमे कोई भला मालिक मिल जाता, उसके यहा हम लोग मेहनत से काम करते और अपने पिता की तरह उसे सम्मान देते।"

बूढा सोच मे पड गया। फिर बोला

"आज से तुम लोग मेरे बेटे हुए और मैं तुम्हारा पिता। मै तुम लोगो को सहारा दूगा, ईमानदारी और सच्चाई का रास्ता दिखाऊगा। बस, तुम लोग अपना फर्ज निभाते चलना, मेरी सीख को अमल मे लाना।"



अनाथ भाइयो ने अपनी सहमति प्रगट की और बूढे के साथ चल पडे। वे बियाबान जगलो और असीम मैदानो को पार करते हुए चलते रहे। वे चलते रहे, आगे बढते रहे कि उन्हे राह मे एक सुन्दर-सा सफेद घर दिखाई दिया, करीने से सजा-सवरा, उसके चौतरफा तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। करीब ही चेरी की बगिया थी और चेरी की बगिया मे एक युवती थी—हूबहू रूप की रानी, सपनो की शहजादी और फूलो से नाजुक बदनवाली। उसे देखते ही बडा भाई मोहित हो गया। वह बोला

काश ऐसी ही रूप की रानी मेरी पत्नी होती! और दहेज मे गाय-बैल भी बहुत-से मिलते!'

यह सुनते ही बूढे ने कहा

तो आओ। तुम्हारा रिश्ता किए देते है। तुम्हे पत्नी मिल जाएगी, दहेज मे गाय-बैल भी मिलेगे। खुशी-खुशी जिन्दगी गुजारो। बस, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना।'

वे लोग लडकी के यहा पहुचे, चट मगनी, पट ब्याह, खुशिया मनाई गइ। इस तरह बडा भाई घर का मालिक बन गया और अपनी जवान पत्नी के साथ उस घर मे रहने लगा।

बूढा अपने मझोले बेटो को साथ लेकर आगे चल पडा। वे पहले की तरह बियाबान जगलो और असीम मैदानो को पार करते हुए चलते रहे। चलते रहे, आगे बढते रहे कि उन्हे रास्ते मे एक खूबसूरत-सा, चमचमाता हुआ घर दिखाई दिया। घर के आगन मे एक तालाब था और तालाब किनारे पनचक्की लगी थी। घर के पास एक प्यारी युवती अपनी धुन मे मगन कुछ करती जा रही थी। ऐसी कार्य निपुण युवती को देखते ही मझले भाई ने कहा

काश ऐसी ही युवती मेरी पत्नी होती! दहेज मे तालाब और पनचक्की मिल जाती। मै मजे से रोटी बनाता, गेहू पीसता। चैन से जिन्दगी गुजारता और सतुष्ट रहता।

बूढे ने सुनते ही कहा

तो आओ तुम्हारी ही मर्जी सही!'

वे सब उस घर मे पहुचे। बूढे ने शादी तय कर दी और जल्द ही उन दोनो का धूम-धाम से विवाह कर दिया गया। मझला भाई भी घर का मालिक बनकर अपनी जवान पत्नी के साथ वही रहने लगा। विदा लेते हुए बूढे ने कहा

"बेटे, खुश रहो। बस, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना।"

वे आगे चल पडे। छोटा भाई और बूढा – दोनो साथ-साथ चले जा रहे थे। अचानक उन्हे एक मामूली-सी झोपडी दिखाई पडी। उषा की लाली जैसी सुन्दर लडकी उस झोपडी मे से बाहर निकल रही थी। वेशभूषा मे वह बहुत गरीब लग रही थी। उसके फटे-पुराने कपडो पर कई-कई पैबन्द थे।

छोटे भाई ने कहा

"काश, यह लडकी मेरी पत्नी होती! हम दोनो साथ-साथ मेहनत करते, हमारे यहा खाने भर का अनाज होता। और तब हम दीन-दुखियो की भरसक मदद करते खुद खाते और दूसरो को भी खिलाते।"

तब बूढे ने कहा

"शाबाश, बेटे! ऐसा ही होगा। पर देखो, सच्चाई का रास्ता कभी न भूलना।"

छोटे भाई की भी शादी कर दी गई। और बूढा अपनी राह चल पडा।

इधर तीनो भाई अपनी-अपनी तरह जिन्दगी को जीने लगे। बडा भाई इतना अमीर हो गया कि उसने अपने लिए अच्छे से अच्छे घर बनाए और अशर्फिया इकट्ठी करने लगा। बस, दिन-रात यही सोचा करता कि और ज्यादा अमीर कैसे बन जाए, कैसे ज्यादा अशर्फिया एकत्रित की जाए। गरीबो की मदद या उन्हे सहारा देने की बात तो वह सपने मे भी न सोचता था। बेहद कजूस हो गया था।

मझला भाई भी दौलतवान हो गया। उसके यहा मजदूर काम करने लगे और वह खुद पडे-पडे ऐशा-आराम करता। बस, खाता-पीता और हुक्म चलाता रहता।

सबसे छोटा भाई बडी शान्ति से अपनी गुजर-बसर कर रहा था। घर-गृहस्थी म जब कुछ होता, वह दूसरो से मिल-बाटकर खाता। जब कुछ न होता, तब भी सन्तोष करता और कभी अपनी परेशानियो का रोना न रोता।

इस बीच बूढे बाबा घूम-घूमकर दुनिया का भ्रमण करते रहे। एक दिन उन्हे अपने मुहबोले बेटो का ख्याल आया। उन्होने उनकी खोज-खबर लेनी चाही—बेटे कैसे जी रहे है और सच्चाई के रास्ते मे भटके तो नही ह? उन्होने एक मूत्र बूढे भिखारी का भेस बनाया और अपने सबसे बडे बेटे के घर जा पहुचे, बडे दैन्य-भाव से झुकते हुए गिडगिडाकर बोले

"जुग-जुग जिओ बेटे, इस गरीब बूढे को खाना खिला दो।"

लेकिन बेटे ने कहा

अरे बूढे तू हट्टा-कट्टा तो दिख रहा है। खाना चाहता है तो जाओ, मेहनत-मजूरी करो। अभी मैं खुद अपने पैरो पर किसी तरह खडा हुआ हू। चलते बनो।"

सच यह था कि बडे भाई के पास तिजोरियो मे धन भरा पडा था, नए-नए घर बनते जा रहे थे, उसकी दुकानो मे माल ही माल था, गोदामो मे अनाज पटा पडा था। रुपये-पैसे इतने थे कि उन्हे गिनने की फुर्सत न थी। लेकिन वह मन का बडा दरिद्र था। भिखारी को भीख तक न दे सका।

बूढे बाबा खाली हाथ उसके द्वार से चले गए। थोडी दूर जाकर एक टीले पर रुके और पलटकर बडे भाई के घर-द्वार पर जो नजर डाली, तो वह तुरन्त धू-धू करके जल उठा।

बूढे बाबा मझले भाई के पास पहुचे। उसके पास खेती-किसानी अच्छी थी, तालाब, चक्की, घर-द्वार—सब था। खुद चक्की पर बैठा था। बूढे बाबा ने झुककर कहा

"बेटा, भगवान तुम्हारा भला करे। एक चुटकी आटा दे दो। मैं भिखारी हू, दाने-दाने को तरस रहा हू।"

"भली कही," दूसरे बेटे ने कहा। "मेरे पास तो खुद अपने लिए आटा नही है। फिर तुम जैसे भिखारी तो दर-दर मारे-मारे फिरते है। आखिर किस-किस का पेट भरा जाए?"

बूढे बाबा खाली हाथ उसके द्वार से चले गए। थोडी दूर जाकर एक टीले पर रुके और पलटकर देखा तो पनचक्की और घर धू-धू करके जल उठे।

अब बूढे बाबा छोटे भाई के यहा पहुचे। वह तो पहले ही गरीब था, झोपडी

छोटी-मी थी, लेकिन माफ-मुथरी।

"वेटा, भगवान तुम्हारा भला करे! मुझे भूख लगी है, रोटी का टुकडा-दो-टुकडा दे दो।"

छोटे भाई ने कहा

"वावा, झोपडी के अन्दर चलो। वहा खाना खा लेना और थोडा लेते भी जाना।"

बूटा झोपडी मे पहुचा। घर की मालकिन ने देखा कि वस्त्र के नाम पर बूढा फटे-पुराने चीथडे लपेटे है। उमे वडा अफमोम हुआ। वह कमीज, पतलून ले आई और उसे पहनने के लिए दे दी। बूढा कमीज पहनने लगा तो मालकिन ने देखा कि बूढे की छाती मे एक वडा-सा घाव है। बूढे वावा को विठाकर उसने भर पेट खाना खिलाया। खा-पी चुके तो घर के मालिक ने पूछा

"वावा, तुम्हारे मीने मे इत्ता वडा घाव कमे है?"

"वेटा, इस घाव की क्या वताऊ? वस, अव थोडे वक्त का मेहमान हू। मेरी जिन्दगी का वम एक दिन है।"

"तोवा!" घर की मालकिन वोली। "क्या इसकी कोई दवा नही है?"

"है," बूढे वावा ने कहा। "वम एक दवा है, लेकिन उमे कोई नही देगा, जवकि हर कोई दे मकता है।"

तव घर के मालिक ने कहा

"आखिर क्यो नही देगा? वताइए तो दवा क्या है?"

"वडी मुश्किल दवा है। जानना चाहते हो तो सुनो। अगर घर का मालिक अपने घर समेत मारी धन-दौलत आग लगाकर फूक दे ओर उसकी राख को मेरे जख्म पर छिडक दे, तो घाव अपने आप सूख जाएगा।"

छोटा वेटा सोच मे पड गया। वडी देर तक सोचता रहा, फिर पत्नी से बोला

"कहो, तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"यही कि हम लोग दूमरी झोपडी फिर वना लेगे, लेकिन वावा वेचारे मर जाएगे तो दुबारा थोडे ही जन्मेगे।"

"तो फिर देर क्या है?" पति ने कहा। "बच्चो को झोपडी मे से बाहर निकाल लो।"

बच्चे बाहर आ गए, वे भी बाहर निकल आए। छोटे भाई ने झोपडी पर एक नजर डाली—उसे अपनी जमा-पूजी के लिए अफसोस था। लेकिन बूढे के लिए उसे कही ज्यादा दर्द था। बस, छोटे बेटे ने आग लगा दी। झोपडी तेजी से लपटे छोडती हुई जलने लगी और गायब हो गई। देखते क्या है कि उसी जगह पर एक बहुत बडा, सुन्दर और चमचमाता घर खडा है।

उधर बूढे बाबा अपनी लम्बी, सफेद दाढी पर हाथ फेरते मुस्करा रहे थे।

"बेटे, तीन भाइयो मे से तुम ही अकेले सच्चाई के रास्ते पर चल रहे हो। खुश रहो, बेटे, और युग-युग जिओ!"

अब छोटे बेटे ने पहचाना कि यह वही बूढे बाबा है, जिन्होने तीनो भाइयो को मुहबोला बेटा बनाया था। वह उनकी ओर लपका, लेकिन तब तक बूढे बाबा ओझल हो चुके थे।



बुद्धिमती मत्स्या

किसी जमाने मे दो भाई रहते थे। एक भाई गरीब था और दूसरा अमीर। एक बार अमीर को गरीब भाई पर दया आई। उसने अपनी एक दुधारू गाय गरीब भाई को देकर कहा

"भाई, गाय के बदले मे मेरे यहा थोडा काम कर देना।"

वायदे के अनुसार गरीब भाई गाय के एवज मे काम करता रहा। लेकिन बाद मे एक दिन अमीर भाई का जी ललचाया उसने गरीब से कहा

"तुम मेरी गाय वापस कर दो।"

गरीब भाई ने कहा

"भैया, मैने गाय के एवज मे काम किया है।"

"अरे, तूने काम क्या किया है? दो कौडी का काम किया है—और जरा गाय तो देखो। चलो, गाय वापस करो।"

गरीब भाई को बडा दुख हुआ। भाई ने काम का काम कराया और अब गाय भी वापस माग रहा है। गरीब ने गाय नही दी। वे लोग इस बात का फैसला करने जमीदार के यहा पहुचे। लेकिन जमीदार इस मामले मे मगज-पच्ची नही



करना चाहता था कि उनमे कौन सही है और कौन गलत। उसने उन भाइयो से कहा

"सुनो, यह गाय उसकी होगी, जो मेरी इस पहेली को बूझ देगा।"

"हा, तो बताइए, जमीदार साहब," भाइयो ने कहा।

"सुनो, दुनिया मे सबसे ज्यादा सन्तुष्ट, सबसे अधिक वेगवान और सबसे प्यारी कौन-सी चीज है? कल यहा आकर इस पहेली का जवाब देना।"

दोनो भाई घर लौट गए। अमीर ने सोचा "यह तो पहेली नही, बकवास है! सबसे ज्यादा सन्तुष्ट है जमीदार का सूअर, सबसे ज्यादा वेगवान है जमीदार का शिकारी कुत्ता और सबसे प्यारी चीज है दौलत! यह कहते ही गाय मुझे मिल जाएगी।"

गरीब भाई घर लौटा। गहरे सोच मे डूब गया। सोचता हुआ ठण्डी आहे भरता रहा। हाय, अब क्या होगा? लेकिन गरीब भाई की एक लडकी थी, मरुस्या। उसने पिता को दुखी देखकर पूछा

"पिता जी, आप किसलिए इतने दुखी है? जमीदार ने क्या कहा?"

"जमीदार ने एक ऐसी पहेली बुझाई है, जो सुलझाए नही सुलझती।"

"आखिर कौन-सी पहेली है?"

"लो, सुन लो दुनिया मे सबसे सन्तुष्ट, सबसे वेगवान और सबसे प्यारी कौन-सी चीज है?"

"अरे, पिताजी! सबसे सन्तुष्ट तो धरती-मा है – वह सबका उदर-पोषण करती है, सबकी प्यास बुझाती है और सभी उसी मे समाते है। सबसे वेगवान है मन की उडान – जहा चाहो उड लो। सबसे प्यारी है नीद – कैसा भी सुखी क्यो न हो इनसान, वह सब कुछ छोडकर सो जाता है।"

"सच?" पिता ने कहा। "हा, तुमने खूब अक्ल दौडाई है। मैं जमीदार से यही कह दूगा।"

दूसरे दिन दोनो भाई जमीदार के यहा पहुचे। जमीदार ने उनसे पूछा

"कहो, क्या बूझे?"

अमीर भाई बढकर आगे आया, ताकि जल्दी मे उत्तर दे सके। उसने कहा ' जमीदार साहब सबसे ज्यादा सन्तुष्ट है आपका सूअर, सबसे वेगवान है आपका शिकारी कुत्ता और सबसे प्यारी चीज है—दौलत।"

"कोरी बकवास!' जमीदार ने कहा। अब तुम बताओ!"

"हुजूर, सबसे सन्तुष्ट है धरती-मा वह सबका उदर-पोषण करती है, सबकी प्यास मिटाती है और सभी उसी मे समाते है।"

' बहुत खूब, सच कहते हो," जमीदार ने कहा। "लेकिन सबसे वेगवान कौन है?"

'हुजूर, सबसे वेगवान है मन की उडान—जहा चाहो उड लो।"

"यह भी ठीक कहा। लेकिन सबसे प्यारी चीज कौन-सी है?" जमीदार ने पूछा।

"सबसे प्यारी है नीद—कैसा भी सुखी क्यो न हो इनसान, वह सब कुछ छोडकर सो जाता है।"

"तुमने सभी उत्तर ठीक-ठीक दिए है!" जमीदार ने कहा। "गाय तुम्हे ही मिलेगी। लेकिन यह बताओ कि ये पहेलिया तुमने खुद बूझी है या किसी ने तुम्हारी मदद की है।"

"हुजूर, गुस्ताखी माफ हो," गरीब ने कहा। "मेरी एक लडकी है, मरुस्या। उसने ही मुझे इन पहेलियो के जवाब सुझाए है।"

जमीदार जल-भुन गया।

"खूब बकते हो! किसान की छोकरी और मेरी बराबरी करेगी। उसने मेरी बताई पहेलिया बूझ दी। जाओ, ये दस उबले अण्डे तुम्हे दे रहा हू। अपनी बेटी को देकर कहना इन अण्डो पर मुर्गी बिठाए ताकि रात भर मे इन अण्डो से चूजे निकल आए, उन्हे चुगाए, बडा करे, तब तुम्हारी बेटी तीन चूजे तन्दूर मे पकाए और सुबह का नाश्ता तैयार करे। और तुम मेरी नीद खुलने से पहले वह नाश्ता लेकर मेरे घर आओगे। मै प्रतीक्षा करूगा। नाश्ता तैयार न हुआ तो तुम्हारी खैरियत नही।"

गरीब आदमी रोता हुआ घर पहुचा। लडकी ने पिता से पूछा

"पिताजी, क्या बात है? आप रो क्यो रहे ह?"

"आखिर रोऊ नही तो क्या करू, बेटी? जमीदार ने बडा टेढा सवाल किया है। उमने तुम्हे दस उबले अण्डे दिए ह ताकि तुम इन अण्डो पर मुर्गी विठाओ, मुर्गी इन्ह सेकर चूजे निकाले, उन्हे दाना चुगाकर बडा करे। और सुबह होने तक तुम तीन चूजे तन्दूर मे पकाकर जमीदार के लिए नाश्ता तैयार करो।"

लडकी ने एक बर्तन मे पका हुआ दलिया पिता को देते हुए कहा

"पिताजी, यह उबला हुआ दलिया ले जाकर जमीदार साहब को दे दीजिए और कहिए कि खेत जोतवाकर इन दानो की बोवाई करा दे, खेत मे बाजरा उग आए और पक जाए, फिर वह कटवाए, माडे और दाने निकलवाकर दे, ताकि इन अण्डो से निकलनेवाले चूजे उन दानो को चुग मके।"

गरीब आदमी ने उबला हुआ दलिया लाकर जमीदार को दे दिया और वह सब कह सुनाया जो बेटी ने समझाया था।

जमीदार उस दलिये को देखता रहा, देखता रहा और बाद मे उसे कुत्तो के आगे फिकवा दिया। ओर गरीब आदमी को सन की एक टहनी देकर बोला

"यह सन की टहनी ले जाकर अपनी लडकी को दे दो। वह इसे धोकर, पछाडकर, मसलकर, सुखाकर, कातकर सवा सौ गज कपडा बुन दे। चूक हुई तो तुम्हारी खैरियत नही।"

आफत का मारा गरीब बेचारा रोता, सिर पीटता वापस घर पहुचा। लडकी घर की दहलीज पर ही खडी थी। उसने पिता से पूछा

"पिताजी, आप किसलिए रो रहे ह? आखिर क्या हुआ?"

"क्या कहू, बेटी? जमीदार ने कहा है कि तुम सन की इस टहनी को धोकर, पछाडकर, मसलकर, सुखाकर, कातकर सवा सौ गज कपडा बुन दो। अब तुम्हीं बनाओ मैं क्या करू?"

"पिताजी, फिक्र न करे," लडकी ने दुखी पिता से कहा।

मरुस्या ने चाकू से पेड की एक पतली-सी टहनी काटकर पिता को दे दी और कहा

' पिताजी इसे ले जाकर जमीदार साहब को दे दीजिए और कहिए कि इस टहनी से एक करघा बनवा दे ताकि उस पर कपडा बनाया जा सके।"

गरीब आदमी वह पतली-सी टहनी लेकर जमीदार के पास आया और उसने वह सब कह सुनाया, जो बेटी ने समझाया था। जमीदार उस टहनी को देखता रहा, देखता रहा और उसे फेंककर सोचने लगा "इस छोकरी को बेवकूफ बनाना आसान नही! ऐसी-वैसी नही है।"

बडी देर तक जमीदार इस उधेड-बुन मे पडा रहा कि अब कौन-सी पहेली चुनी जाए? इस बार खूब अच्छी तरह सोच-विचारकर बोला

"सुनो, जाकर अपनी अक्लमन्द बेटी से कह दो, वह खुद यहा आए। लेकिन आए तो ऐसे कि न पैदल हो, न घोडे पर सवार हो, न नगे पाव आए, न जूते उतारके आए, न कोई उपहार लाए और न बिना उपहार के आए। अगर ऐसा न हुआ तो तुम अपनी खैरियत न समझना।"

पिता ने जब इस पहेली को सुना तो होश उड गए। रोता हुआ घर वापस लौट पडा, बेटी से बोला

"बेटी, इस बार बुरे फसे। कोई रास्ता नही दिखाई देता। बताओ अब क्या करे? जमीदार ने ऐसे-ऐसे करने का हुक्म दिया है।" और उसने बेटी को यह पहेली भी बतला दी।

लेकिन मरुस्या ने सहज भाव से उत्तर दिया

"पिताजी, परेशान मत होइए। सब कुछ ठीक हो जाएगा। जाकर बाजार से एक जिन्दा खरगोश खरीद लाइए।"

गरीब आदमी बाजार से एक जिन्दा खरगोश खरीद लाया। मरुस्या ने झट से एक पाव मे फटा जूता पहना, दूसरा पैर नगा छोड दिया। फिर उसने एक गौरैया पकडी। गाडी मे एक बकरे को जोता, खरगोश को बगल मे दबाया, गौरैया को हाथ मे पकडा। फिर अपना एक पैर गाडी पर टिकाया और दूसरे पैर

के सहारे पैदल चल दी। इस तरह वह जमीदार के अहाते की तरफ बढ चली। उधर जमीदार ने जब यह देखा कि लडकी उसके वाडे के करीब आ चुकी है, तो उसने अपने नौकरो को चिल्लाकर आवाज दी

"कुत्ते छोड दो।"

खौफनाक कुत्ते उसकी ओर छोड दिए गए। लेकिन लडकी ने ठीक इसी वक्त खरगोश को आजाद कर दिया। कुत्ते उसे छोडकर खरगोश को पकडने भागे। तब तक लडकी जमीदार के यहा पहुच चुकी थी। उसने सिर झुकाकर कहा

"जमीदार साहब, आपकी सेवा मे उपहार लाई हू। स्वीकार करे।" लडकी ने गौरैया को उसकी तरफ बढा दिया। जमीदार अभी उपहार सभालता कि चिडिया फुर्र से उड गई।

इसी वक्त किसान लोग न्याय मागने जमीदार के यहा आए। जमीदार ने उन्हे देखकर पूछा

"भेले मानसो, कहो, किसलिए आए हो?"

एक किसान बोला

"जमीदार साहब, हम लोगो ने खेत मे ही रात बिताई। सुबह उठे तो देखा मेरी घोडी के बछेडा हुआ है।"

लेकिन दूसरे किसान ने कहा

"हुजूर, बिल्कुल झूठ है। यह बछेडा मेरी घोडी के हुआ है। माई-बाप, अब इसका फैसला आप ही करे कि बछेडा किसका है?"

जमीदार सोचता रहा, सोचता रहा, फिर बोला

"दोनो घोडियो और बछेडे को यहा हाक लाओ। बछेडा जिस घोडी की तरफ भागे, उसी घोडी के बछेडा हुआ है।"

वे दोनो अपनी-अपनी घोडियो को हाक लाए और बछेडे का पगहा खोल दिया गया। लेकिन दोनो किसान उसे अपनी-अपनी तरफ खीचने लगे, बछेडा चक्कर मे पड गया, आखिर वह दोनो से ही दूर भाग गया। सब चक्कर मे पड गए अब फैसला कैसे किया जाए? इसी वक्त मरूस्या ने सुझाया

"बछेडे को बाध दीजिए, लेकिन घोडियो की जोत खोल दीजिए—जो घोडी बछेडे की ओर दौडी जाए उसी का बछेडा है।"

वैसा ही किया गया घोडियो की जोत खोल दी, बछेडे को बाध दिया, दो मे से एक घोडी लपककर बछेडे के पास पहुच गई और दूसरी अपनी जगह पर खडी रही।

अन्त मे जमीदार की अकल मे यह बात समा गई कि यह लडकी सचमुच प्रज्ञापुत्री है। उसकी बुद्धि को चुनौती दे पाना आसान काम नही। इस तरह जमीदार ने बुद्धिमती मरूस्या से हार मान ली।



ईमानदारी बनाम बेईमानी

पुराने जमाने की बात है। कही दो भाई रहते थे। एक भाई धनवान था, दूसरा भाई बेहद गरीब। एक दिन दोनो भाइयो की मुलाकात हुई। वे आपस मे बातचीत करने लगे। गरीब भाई ने कहा

"जिन्दगी कितनी भी कडवी क्यो न हो, उसे ईमानदारी से गुजारना ही अच्छा है।"

मगर अमीर भाई ने कहा

"तुम्ही बताओ कहा धरी है ईमानदारी? चारो तरफ सिर्फ बेईमानी ही फल-फूल रही है। भाई मेरे, अच्छी जिदगी गुजारने के लिए बेईमानी ही अकेला रास्ता है।"

लेकिन गरीब भाई टस से मस न हुआ, अपनी बात पर अडा रहा

"नही, भाई, ईमानदारी की जिदगी ही सबसे अच्छी है।"

तब अमीर भाई बोला

"आओ, शर्त लगाते है। तीन राहगीरो से ही पूछकर इसका फैसला किए लेते है। अगर वे तुम्हारी नीति का समर्थन कर देगे तो मेरी सारी सम्पत्ति तुम्हारी हो जाएगी। और अगर उन्होने मेरी बात को उचित ठहराया तो तुम्हे अपना सब कुछ मुझे सौप देना होगा। मजूर है?"

"मजूर है।"



फिर वे निकल पडे सडक पर। राहगीरो की तलाश मे चलते रहे। सहसा उन्हे एक आदमी दिखाई पडा। वह थका हुआ मजूरी करके लौट रहा था। दोनो भाई उसके करीब आए और बोले

"नमस्ते, भले आदमी!"

"नमस्ते!"

"हम लोग एक बात पूछना चाहते है "

"पूछ लो!"

"सही-सही बताना। दुनिया मे ईमानदारी से जीना अच्छा हे या बेईमानी से?"

"अरे, भले लोगो! कहा धरी है ईमानदारी?" राहगीर ने जवाब दिया। "मुझे ही देख लो। मैने जी तोडकर काम किया, दिन-दिन भर मशक्कत करता रहा, पर कमाई के नाम पर कुछ हाथ न लगा। ऊपर से मालिक ने मजूरी तक काट ली। भाड मे जाए ऐसी ईमानदारी! अब तुम्ही बताओ, क्या ईमानदारी से पेट भर सकता है? ऐसी ईमानदारी से तो बेईमानी ही भली!"

"देखा, भाई मेरे! एक बार तो मेरी बात सच निकल गई," अमीर भाई ने कहा।

गरीब भाई बडा दुखी हुआ। वे फिर आगे चल दिए। थोडी देर चलने के बाद उन्हे एक सौदागर मिला।

"नमस्ते, श्रीमान!"

"नमस्ते, भाइयो!"

"हम लोग आपसे एक बात पूछना चाहते हे "

"पूछो!"

"सही-सही बताना। दुनिया मे ईमानदारी से जीना अच्छा है या बेईमानी से?"

"अरे, भले लोगो! तुम्ही बताओ, क्या ईमानदारी से जिया जा सकता है? फिर व्यापार मे तो बेईमानी के बिना कोई काम नही चलता। अपने माल को अच्छा बताने, उसे बाजार मे बेचने के लिए ग्राहको से सौ-सौ बार झूठ बोलना पडता है, तरह-तरह के फरेब करने पडते है। तब कही धन्धा चल पाता है। ऐसा न करो, तो बैठे-बैठे मक्खिया मारते रहो।"

यह कहकर दूसरा राहगीर भी आगे बढ लिया।

"अव तुम्ही देख लो—दूमरी वार भी मेरी वात मच निकली।"

गरीव भाई फिर वडा दुखी हुआ। मेर, वे फिर आगे चल दिए। चलते-चलते उन्हे एक जमीदार मिला। काफी ठाट-वाट थे उमके।

"नमस्ते, महोदय!" दोनो भाइयो ने कहा।

"नमस्ते!"

"हम लोग आपसे एक वात पूछना चाहते ह"

"पूछ लो!"

"लेकिन मही-सही वताना। दुनिया मे ईमानदारी से जीना अच्छा है या वेईमानी से?"

"वाह मूव! भले लोगो, अव तुम्ही वताओ, ईमानदारी कहा है? ईमानदारी से तो जिन्दा नही रह सकते। क्या मैं ईमानदार रहकर ऐसी शान-शौकत से जी सकता"

अपनी वात अधूरी छोडकर जमीदार ने अपना घोडा आगे वढा दिया।

अमीर भाई वोला

"अच्छा, भाई, अव घर चलो ओर अपना सव कुछ मुझे सौप दो!"

गरीब भाई दुखी मन से घर की ओर चल पडा। उसका वोरिया-विस्तर तक अमीर भाई उठा लाया, गरीव भाई की झोपडी ही उसके पाम छोड दी।

"सुनो, अभी तुम झोपडी मे रह सकते हो। फिलहाल मुझे इसकी जरुरत नही। थोडे दिनो मे तुम्हे अपने लिए कोई दूसरा इन्तजाम करना होगा।"

गरीब भाई अपने परिवार सहित मायूस होकर बेठ गया। उनके घर मे रोटी का एक टुकडा तक न था। और न तो वह कही मजदूरी ही कर सकता था। उम वर्ष सूखा पड गया था। खेतो मे एक दाना अन्न तक न उगा था! किसी तरह पति-पत्नी ने भूख बर्दाश्त कर ली। लेकिन वच्चे रोने लगे गरीव भाई ने एक खाली वोरी उठाई और अमीर भाई के घर पहुचकर वोला

"भैया, मेहरबानी करके मुझे एक वोरी आटा दे दो। दाने-दाने को मोहताज हो रहा हू, वच्चे भूख से बिलबिला रहे ह!"

अमीर भाई वोला

"अच्छा, तो तुम्हे आटा चाहिए। मिल जाएगा। लेकिन वोरी भर आटे के वदले मे तुम्हे अपनी आख निकलवानी होगी। मजूर है?"

गरीब भाई असमजस मे पड गया। सोच-विचार करने लगा। पर मरता क्या न करता। गरीब भाई आख निकलवाने के लिए राजी हो गया।

"आओ, निकाल लो मेरी आख। पर ईसा के नाम पर मुझे आटा या अनाज कुछ न कुछ जरूर दे देना।"

यह सुनते ही अमीर भाई ने गरीब भाई की एक आख निकालकर उसकी बोरी मे सडा हुआ आटा भर दिया। गरीब भाई वह बोरी लादकर घर पहुचा। पति को देखते ही पत्नी ने आह भरते हुए कहा

"अरे, यह तुम्हे क्या हो गया है? तुम्हारी आख कहा गई?"

"भाई ने निकाल ली!" पति ने उत्तर दिया।

फिर उसने सारा किस्सा कह सुनाया। घर मे चीख-पुकार रोना-धोना मच गया। आखिर भूख से दम तोडता परिवार करता भी तो क्या।

हफ्ते-दो हफ्ते मे वह आटा खत्म हो गया। गरीब ने फिर से बोरी सभाली और अमीर भाई के घर जा पहुचा।

"प्रिय भाई, वह आटा तो खत्म हो गया। मेहरबानी करके थोडा आटा और दे दो!"

"आटे के बदले मे अपनी दूसरी आख निकलवाने के लिए तैयार हो? इस शर्त पर बोरी भर सकता हू।"

"भाई, एक आख तो मै पहले ही गवा चुका हू। अब दूसरी आख खोकर अन्धा हो जाऊगा। मेरी जिन्दगी तबाह हो जाएगी। भाई पर रहम करके ऐसे ही थोडा-सा आटा दे दो!"

"मेरे यहा खैरात नही बटती। आटे के बदले मे तुम्हे अपनी दूसरी आख भी निकलवानी होगी।"

"तो आओ, इसे भी निकाल लो!"

अमीर भाई ने गरीब भाई की दूसरी आख भी निकाल ली और उसकी खाली बोरी मे आटा भर दिया। भाई ने आख गवाकर फिर बोरी उठाई और घर की ओर चल दिया। वह बडी मुश्किल से चल पा रहा था। बेचारा क्षण-क्षण टटोलता, गिरता-पडता, रास्ते मे ठोकरे खाता किसी तरह घर पहुचा। पत्नी उसे देखते ही समझ गई और फूट-फूटकर रोती हुई बोली

"हाय, कितने अभागे हो तुम! दोनो आखे गवाकर, अन्धे होकर इस दुनिया

मे केसे जिओगे! आटा तो किसी भी तरह, कही न कही मिल ही जाता, लेकिन अब ..."

बेचारी पत्नी दहाडे मार-मारकर रोती रही। उसकी हिचकिया-सिसकिया देर तक जारी रही। अन्धे ने पत्नी को ढाढस दिलाते हुए कहा

"चुप हो जाओ, रानी। इम दुनिया मे अकेला मै ही अन्धा नही हू। मेरे जैसे तमाम लोग हे और वे भी जिन्दा ह। मायूस होने की जरूरत नही।"

जल्द ही यह आटा भी खत्म हो गया। एक बडे परिवार मे वोरी भर आटा आखिर कितने दिन चलता!

अन्धा आदमी पत्नी से बोला

"अब मै भाई के यहा न जाऊगा। मुझे गाव के बाहर सडक के किनारे चिनार के नीचे पहुचा दो। दिन भर मैं वही बैठा रहूगा, शाम होते ही तुम मुझे लेने आ जाना। राहगीरो से किसी तरह रोटी का जुगाड हो ही जाएगा।"

अन्धे की पत्नी उसे वहा ले गई, चिनार के पेड के नीचे उसे बिठाकर घर वापस चली आई।

अन्धा चिनार के नीचे वेठा रहा। राहगीरो मे से कुछेक ने उसे मामूली भीख भी दी। शाम हो चली थी, लेकिन पत्नी अब तक उसे लेने न आई। दिन भर का थका-हारा आदमी अकेला ही घर की तरफ चल पडा। लेकिन गलत दिशा मे मुड गया। वह चलता रहा, चलता रहा यह जाने-समझे बिना कि कहा जा रहा है। अचानक उसे लगा कि जगल मे आ गया है। अब उसे रात यही गुजारनी पडेगी। अन्धा आदमी वन्य जीवो से भयभीत हो उठा और किसी तरह एक पेड के ऊपर चढकर बैठ गया। इस तरह वह दुबका हुआ चुपचाप बैठा रहा।

आधी रात होने पर इस वृक्ष के नीचे भूतो का जमघट लगने लगा। तरह-तरह के भूत वहा दौडते-भागते इकट्ठे हो गए। भूतो के सरदार ने सभी के कार्यो का ब्योरा मागा। वे बारी-बारी से बताने लगे। एक भूत ने कहा

"मेरी वजह मे सिर्फ दो वोरी आटे के लिए भाई ने भाई की आखे निकाल ली। वह हमेशा के लिए अन्धा हो गया।"

"तुमने अच्छा किया, लेकिन जरा-सी कसर छोड ही दी!"

'मगर कैसे?"

"तुम्ही सोचो, अगर वह अन्धा इस वृक्ष के नीचे बिखरी हुई ओस को अपनी

आखो पर लगा लेगा, तो उसे पहले की तरह दिखाई पडने लगेगा।"

"लेकिन इस बारे मे किसने सुना है और कौन जानता है?"

"और तुमने क्या किया?" भूतो के सरदार ने दूसरे प्रेत से पूछा।

"मैंने एक गाव का सारा पानी ही सोख लिया। अब वहा के लोग एक-एक बूद पानी को तरस रहे है। त्राहि-त्राहि मच गई है। उन्हे दस-दस, बीस-बीस कोस से पानी लाना पडता है। बहुत-से लोग दम तोडेगे।"

"तुमने अच्छा किया, लेकिन जरा-सी कसर छोड ही दी।"

"मगर कैसे?"

"तुम्ही सोचो, पास के शहर मे पडे हुए भारी पत्थर को यदि खिसका दिया जाए, तो गाव के लिए अथाह पानी वही से मिल जाएगा। और तब तुम्हारी योजना ही चौपट हो जाएगी।"

"लेकिन इस बारे मे किसने सुना है और कौन जानता है?"

"और तुमने क्या किया?" भूतो के सरदार ने तीसरे प्रेत से पूछा।

"मैंने अमुक राजा की इकलौती बेटी को अन्धा बना दिया है। उसका अन्धापन अब इलाज से भी ठीक न होगा।"

"तुमने अच्छा किया, लेकिन जरा-सी कसर छोड ही दी।"

"मगर कैसे?"

"तुम्ही सोचो, अगर इस वृक्ष के नीचे बिखरी हुई ओस राजकुमारी की आखो पर मल दी जाए, तो उसे पहले की तरह दिखाई पडने लगेगा।"

"सो तो है। लेकिन इस बारे मे किसने सुना है और कौन जानता है?"

लेकिन वृक्ष के ऊपर बैठा हुआ अन्धा चुपके-चुपके सब सुन रहा था। जैसे ही भूत-प्रेत हवा मे उडे, वह अन्धा पेड से नीचे उतरा और उसने अपनी आखो पर वह ओस मल ली। उसे पुन सब कुछ दिखाई पडने लगा। तब उसने सोचा

"अब चलकर दुखियो की मदद करनी चाहिए।" उसने पेड के नीचे की ओस समेटकर प्याले मे रखी और चल दिया।

वह उस गाव के निकट आया, जहा पानी के बिना त्राहि-त्राहि मची थी। अचानक उसने देखा कि एक बूढी औरत बहगी पर दो बाल्टिया लटकाए चली आ रही है। उसने अदब मे झुककर बुढिया से कहा

"दादी मा, प्यास लगी है। थोडा पानी पिला दो।"

"ओह, मेरे लाल! यह पानी मै बीस कोस मे ढोकर ला रही हू। घर पहुचते-पहुचते आधा पानी रास्ते मे छलककर गिर जाएगा। मेरा परिवार भी बडा है—पानी के विना बेहाल हो जाएगा!"

"चिन्ता न करो, दादी मा! जैसे ही में तुम्हारे गाव मे पहुच जाऊगा, पानी ही पानी हो जाएगा।"

बुढिया ने उसे पानी पिलाया। वह इतनी खुश थी कि दौडी-दौडी अपने गाव पहुची और उसने इस आदमी के बारे मे सबको बताया। इस बात पर कुछ लोगो ने विश्वास किया और कुछ का शक बना रहा। लेकिन सभी ने मिलकर उसके प्रति सम्मान व्यक्त किया। उन्होने अदब मे झुककर कहा

"ओ, भले आदमी! हमें खौफनाक मौत से बचाओ!"

"फिक्र मत करो, सिर्फ मेरी मदद करते चलो। मुझे गाव के पासवाले नगर तक ले चलो।"

गाव के लोग उसे वहा ले आए। वह पत्थर ढूढने लगा। थोडी देर की दौड-धूप के बाद वह पत्थर मिल ही गया। सबने एकसाथ मिलकर वह भारी पत्थर खिसकाया। और पत्थर के खिसकते ही उसके नीचे से जलधार फूट निकली। वह पानी बहता रहा, बहता रहा और इतना अधिक बह गया कि सारे जलस्रोत फिर से पहले जसे हो गए। तालाब, नदी, नाले पानी से लबालब भर गए। ग्रामवासियो की खुशी का ठिकाना न रहा, वे इस भले आदमी के प्रति बार-बार आभार प्रगट कर रहे थे। उस आदमी को धन-दौलत और तरह-तरह का सामान उपहार मे मिला। वह घोडे पर बैठकर आगे का सफर तय करने लगा। वह चलता जाता और रुक-रुककर उस राज्य का पता-ठिकाना पूछता जाता, जहा की राजकुमारी को प्रेत ने अन्धा कर दिया था। पता नही कितनी देर तक वह चलता रहा। पर आखिर अपनी मजिल तक पहुच ही गया।

वह राजमहल के प्रवेश-द्वार पर पहुचकर द्वारपालो से बोला

"मुझे पता चला हे कि आपके राजा की बेटी बीमार है। शायद मैं ही उसे ठीक कर दू!"

"अरे, उसका इलाज तुम्हारे बस का नही है! दूर-दूर से बडे-बडे हकीम-वैद्यो ने यहा आकर हिकमते लगाई, पर उसका इलाज न कर पाए। अब तुम वहा जाकर क्या करोगे!"

R26P75

"जो भी हो, आप लोग राजा साहब को सूचित कर दे!"

द्वारपाल राजा तक सूचना पेहुचाना ही नहीं चाहते थे। वे टालते जा रहे थे, मगर वह लगातार जिद करता जा रहा था। आखिर द्वारपालो ने उसकी बात मान ही ली। खबर मिलते ही राजा ने उसे राजमहल मे बुलाया

"तुम मेरी बेटी का इलाज कर सकते हो?" राजा ने पूछा।

"हुजूर, मै उसका इलाज कर सकता हू।"

"सुनो, अगर तुम राजकुमारी की आखे ठीक कर दोगे तो तुम्हें मनचाहा इनाम दिया जाएगा।"

उस आदमी को राजकुमारी के पास ले जाया गया। वहा पहुचकर उस आदमी ने प्याले मे रखी ओस निकालकर राजकुमारी की आखो पर मल दी। राजकुमारी फिर से देखने लगी। राजा की खुशी का ठिकाना न रहा। वह व्यक्ति मालामाल कर दिया गया। राजा ने उसे इतना इनाम दिया कि उस दौलत को वह घोडागाडियो पर लादकर अपने घर की ओर चल दिया।

उधर घर पर पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल हो गया था। वह बेचारी मुसीबते सहती रही, पर पति का पता न लग पाया। निराश होकर पत्नी ने यह सोचा कि उसका पति मर चुका है। लेकिन वह तो अचानक घर आ पहुचा। उसने खिडकी पर दस्तक दी

"अरे, दरवाजा खोलो!"

पति की आवाज सुनकर वह बडी खुश हुई। उसने झपटकर दरवाजा खोला और पति को झोपडी के अन्दर ले आई। वह तो यही सोचती थी कि उसका पति अन्धा है।

"जरा लालटेन जलाओ!" पति ने कहा।

उसने लालटेन जलाई। वह पति को देखते ही खुशी मे नाच उठी

"अरे, तुम्हारी आखे ठीक हो गई! हे भगवान! आखिर यह सब कैसे हुआ?"

"ठहरो, अभी बताते है। आओ, पहले अपना माल असबाब तो उठा लाए।"

वे बाहर से ढोकर धन-दौलत अन्दर ले आए। झोपडी मे दौलत का ढेर लग गया। अमीर भाई की दौलत इसके सामने कुछ न थी!

इस तरह गरीब भाई खूब अमीर हो गया, उनकी जिन्दगी मजे से कटने लगी।

जब अमीर भाई को पता लगा तो वह भागता चला आया

"भाई, तुम्हारी आखे ठीक हो गई और तुम धनवान हो गए! लेकिन यह चमत्कार केसे हुआ?"

उस भाई ने सब कुछ सच-सच बता दिया।

सारा किस्सा सुनकर अमीर भाई को लालच आया। अमीर ने अब और दौलत समेटनी चाही। रात होते ही अमीर भाई ने झटपट जगल का रास्ता पकडा और वहा पहुचकर चुपके से उसी वृक्ष पर चढकर बेठ गया। फिर आधी रात को तरह-तरह के भूत-प्रेत अपने सरदार के साथ उसी पेड के नीचे इकट्ठे हुए। वे आपस मे बाते करने लगे

"यह क्या हो गया? न तो किसी ने हम लोगों की बात सुनी थी, न कोई यह रहस्य जानता था, लेकिन अन्धे भाई की आखे ठीक हो गई, पत्थर के नीचे से सोता फूट पडा और राजा की बेटी का इलाज हो गया। शायद किसी ने चोरी मे हमारी बाते सुन ली है? आओ, उसे तलाश करते हे!"

वे सब मिलकर तलाश करने लगे। जब वे वृक्ष पर चढे तो वहा अमीर भाई छिपा बैठा था। भूतो ने आव देखा न ताव अमीर भाई को पकडकर उसके टुकडे-टुकडे कर डाले।